THE MDSU QUATERLY RESONANCE

त्रिवेणी

MAHARSHI DAYANAND SARASWATI UNIVERSITY

www.mdsuajmer.ac.in

TRIVENI

ज्ञान (KNOWLEDGE)

संस्कृति (CULTURE)

विकास (DEVELOPMENT)

ISSUE 3
(VOLUME 3)
(Feb - April 2026)

विश्वविद्यालय में किए गए
विशेष कार्य एवं नवाचार

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा • शोध एवं नवाचार • समावेशी विकास • सांस्कृतिक मूल्य • सतत् भविष्य

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) आधारित शैक्षणिक सुधारों का प्रभावी क्रियान्वयन।
2. विश्वविद्यालय एवं संबद्ध महाविद्यालयों में सेमेस्टर प्रणाली लागू करने की पहल।
3. राजस्थान का पहला "शोधचक्र" लागू करने वाला विश्वविद्यालय।
4. साइबर सिक्योरिटी एवं आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित स्किल डिप्लोमा पाठ्यक्रम प्रारम्भ करने की योजना।
5. विद्यार्थियों हेतु प्रतियोगी परीक्षा एवं रिमेडियल कोचिंग सेंटर की स्थापना।
6. LEaP सहित विभिन्न परियोजनाओं के माध्यम से शोध एवं स्वरोजगार को बढ़ावा।
7. विश्वविद्यालय परिसर को "जीरो कार्बन ग्रीन कैंम्पस" के रूप में विकसित करना।
8. सोलर पैनल के माध्यम से आधे से अधिक विद्युत आवश्यकता की पूर्ति।
9. प्रतिदिन प्रार्थना सभा एवं सांस्कृतिक मूल्यों पर आधारित गतिविधियों का संचालन।
10. महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन एवं विचारों पर आधारित क्रेडिट पाठ्यक्रम प्रारम्भ करने की पहल।
11. सम्पूर्ण परिसर में गायत्री मंत्र के प्रसारण द्वारा आध्यात्मिक वातावरण का निर्माण।
12. प्रशासनिक पारदर्शिता हेतु "राज-काज" डिजिटल प्रणाली को बढ़ावा।
13. परीक्षा प्रणाली में पारदर्शिता एवं निष्पक्षता हेतु विशेष सुधार।
14. फ्लोरीकल्चर एवं डेयरी उत्पादों से जुड़े "स्वदेशी कंसोर्टियम" की पहल।
15. राष्ट्रीय शिक्षा नीति, रोजगार, यातायात एवं सामाजिक विषयों पर नीति-आधारित संगोष्ठियों एवं कार्यशालाओं का आयोजन।
16. समावेशी शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु विभिन्न संस्थाओं के साथ एमओयू।
17. छात्र-केंद्रित, मूल्यपरक एवं पर्यावरण-संवेदनशील शिक्षा मॉडल को प्रोत्साहन।

शिक्षा • संस्कार • स्वावलम्बन • समृद्धि

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	विषय / शीर्षक	पृष्ठ संख्या
१.	पुरोवाक् – 'त्रिवेणी' : ज्ञान, कर्म और भक्ति का संगम	3
2.	नई विद्यार्थी-केंद्रित वेबसाइट का विधिवत लोकार्पण	6
3.	ऋतस्य पन्थाः भारतीय ज्ञान परंपरा, शोध एवं विश्वविद्यालय की वैचारिक दिशा	7
4.	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 आधारित पहलें	10
5.	विश्वविद्यालय के एमओयू एवं संस्थागत सहयोग	13
6.	अन्य सहशैक्षणिक गतिविधियां	15
7.	विश्वविद्यालय गौरव एवं विद्यार्थी सम्मान	20
8.	विश्वविद्यालय में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठियाँ	23
9.	विश्वविद्यालय की डिजिटल पहल	27
10.	खेलकूद एवं छात्र उपलब्धियाँ	28
11.	विविध गतिविधियां	31
12.	राज्य सरकार को राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर आधारित कार्यशाला की संस्तुतियाँ	32
13.	विभिन्न कार्यक्रमों की झलकियाँ	40
14.	विश्वविद्यालय - समाचार पत्रों मे	44

महर्षि दयानन्द सरस्वती

जन्म जयंती 12 फरवरी

पुरोवाक्............

किसी भी पत्रिका का जन्म केबल शब्दों की छपाई नहीं होता वह एक विचार का जीवन्त रूप होता है, एक संस्था की आत्मा की अभिव्यक्ति होती है। 'त्रिवेणी' महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर की यह त्रैमासिक पत्रिका - उसी उद्देश्य की वाहिका है जो इस विश्वविद्यालय की नींव में अंकित हैः सत्य, ज्ञान और सेवा।

'त्रिवेणी' का नामकरण स्वयं में एक दार्शनिक संकेत है ज्ञान, कर्म और भक्ति की तीन धाराओं का वह पावन संगम, जहाँ शिक्षा केवल परीक्षा उत्तीर्ण करने का साधन नहीं रहती, बल्कि जीवन को दिशा देने का माध्यम बनती है। इस अंक में प्रस्तुत विविध गतिविधियाँ, संगोष्ठियाँ, उपलब्धियाँ और वैचारिक मंथन सब मिलकर इस उद्देश्य को सिद्ध करते हैं।

शिक्षा, शोध और ज्ञान परंपरा भारत की शाश्वत धरोहर

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने जब **'वेदों की ओर लौटो'** का उद्घोष किया था, तो उनका आशय केवल अनुष्ठान से नहीं था वह ज्ञान की उस मौलिक धारा को पुनर्जीवित करने का आह्वान था जिससे भारत ने संसार को प्रकाशित किया था। इसी विचार की छत्रछाया में स्थापित यह विश्वविद्यालय आज उस स्वप्न को साकार करने की दिशा में अनथक यात्रा कर रहा है।

कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने इस अंक में प्रकाशित अपने उद्बोधन में एक गहन सत्य को रेखांकित किया है-कि भारत को 'सोने की चिड़िया' नहीं, 'सोने का हाथी' कहा जाना चाहिए; क्योंकि यह राष्ट्र सुदृढ़, विशाल, स्थिर और अजेय था। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि हमारी शोध-परंपरा पश्चिमी ढाँचों की नकल नहीं, बल्कि वेद, वेदान्त, उपनिषद् और सनातन ग्रन्थों की रोशनी में विकसित होनी चाहिए। यह दृष्टि केवल अकादमिक नहीं यह एक राष्ट्रीय चेतना का उद्घोष है।

श्रीमद्भगवद्गीता, रामायण, महाभारत और उपनिषद् केवल धार्मिक ग्रन्थ नहीं हैं इनमें समाजशास्त्र, अर्थशाख, मनोविज्ञान, नेतृत्व और प्रबन्धन के ऐसे सिद्धान्त अन्तर्निहित हैं जो आज की वैश्विक चुनौतियों का समाधान प्रस्तुत कर सकते हैं। जब अमरीका के एक प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय में भगवद्गीता पर आधारित पाठ्यक्रम की ७०० सीटें अल्प समय में भर जाती हैं, तो यह केवल जिज्ञासा नहीं यह विश्व की स्वीकृति है कि भारतीय ज्ञान कालातीत एवं सार्वभौमिक है।

विश्वविद्यालय की उपलब्धियाँ: एक गौरवशाली अध्याय

फरवरी से अप्रैल 2026 का यह कालखण्ड महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय के लिए असाधारण रूप से उत्पादक और ऊर्जावान रहा। इस अवधि में जो कार्य सम्पन्न हुए, वे संस्था के बहुआयामी विकास का प्रमाण हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए एक दिवसीय फैकल्टी डेवलपमेंट वर्कशॉप का आयोजन किया गया, जिसमें उपमुख्यमंत्री एवं उच्च शिक्षा मंत्री डॉ. प्रेमचंद बैरवा ने विश्वविद्यालय की इस पहल की सराहना करते हुए कहा कि एमडीएसयू देश का पहला विश्वविद्यालय है जिसने एनईपी आधारित अध्यादेश लागू किए हैं। यह केवल एक प्रशासनिक उपलब्धि नहीं, बल्कि शैक्षिक दूरदर्शिता का प्रमाण है।

विश्वविद्यालय ने इंडिया पोस्ट पेमेंट्स बैंक, CHARGE अजमेर, स्वदेशी शोध संस्थान नई दिल्ली तथा डॉ. शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय लखनऊ के साथ महत्त्वपूर्ण एमओयू सम्पन्न किए। ये समझौते न केवल संस्थागत सहयोग के प्रतीक हैं, बल्कि विद्यार्थियों के लिए कौशल, इंटर्नशिप और शोध के नये द्वार खोलते हैं। पश्चिमांचल युवा महोत्सव में विश्वविद्यालय के सांस्कृतिक दल ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया; खो-खो प्रतियोगिता में विजय, कुश्ती में रजत पदक और १३ विद्यार्थियों का ICICI Prudential में चयन ये सब उस समग्र विकास की कहानी कहते हैं जो इस संस्था का लक्ष्य है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित समग्र प्रबन्धन सॉफ्टवेयर, आधिकारिक व्हाट्सएप चैनल, पहला वार्षिक परीक्षा परिणाम मार्च माह में ही जारी करना ये सभी डिजिटल परिवर्तन की दिशा में ऐतिहासिक कदम हैं।

भारतीय संस्कृति, नैतिक मूल्य और राष्ट्र-निर्माण में शिक्षा

महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन-दर्शन यह था कि शिक्षा का अर्थ केवल जानकारी का संग्रह नहीं, बल्कि चरित्र का निर्माण है। इसी विचार को मूर्त रूप देते हुए विश्वविद्यालय ने गुरुकुलीय वातावरण के निर्माण की पहल की है- प्रतिदिन प्रार्थना सभा, वैदिक हवन से कार्यक्रमों का शुभारम्भ, गायत्री मन्त्र उच्चारण और महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों पर आधारित क्रेडिट पाठ्यक्रम।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर की जयन्ती पर 'अम्बेडकर दृष्टि समता से सामर्थ्य, महर्षि दयानन्द की 202 वीं जयन्ती पर भव्य संगोष्ठी, पण्डित दीनदयाल उपाध्याय की पुण्यतिथि पर एकात्म मानववाद पर विमर्श, चैत्र शुक्ल प्रतिपदा पर नव संवत्सर 2083 का उत्सव इन आयोजनों में यह संदेश स्पष्ट है कि यह विश्वविद्यालय केवल पाठ्यक्रम नहीं पढ़ाता, बल्कि भारतीय जीवन-मूल्यों और राष्ट्रीय चेतना को पोषित करता है।

सिन्धी भाषा दिवस पर संगोष्ठी, 'वेद-वेदाङ्ग और विकसित भारत' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी, आदि शंकराचार्य एवं सन्त सूरदास जयन्ती ये सब मिलकर यह सिद्ध करते हैं कि भारत की विविधता में एकता की जो अनमोल थाती है, वह इस परिसर में जीवन्त है।

युवाओं को संदेश - तुम्हीं भारत की आधारशिला हो

आज का युवा पहले की तुलना में कहीं अधिक जागरूक, प्रतिभाशाली और सम्भावनाओं से परिपूर्ण है। 'युवा उद्यमिता यात्रा' जैसी पहले, 'श्रेयस' जैसे राष्ट्रीय सेवा शिविर, प्लेसमेंट ड्राइव और कौशल विकास कार्यक्रम ये सब इसलिए हैं क्योंकि महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय चाहता है कि हर विद्यार्थी 'जॉब सीकर' नहीं, 'जॉब क्रिएटर' बने।

कुलगुरु प्रो. अग्रवाल का यह संदेश हर युवा के हृदय में उतरना चाहिए ज्ञान के साथ संस्कार जीवन की वास्तविक पहचान हैं और सफलता केवल करियर नहीं, बल्कि मूल्यों से निर्धारित होती है।' आज जब कृत्रिम बुद्धिमत्ता और तकनीक के दौर में मानवीय स्पर्श की कमी हो रही है, तब भारतीय ज्ञान परंपरा की यह शिक्षा और भी प्रासंगिक हो जाती है कि विचार की सटीकता और जीवन की स्पष्टता ही सच्ची सफलता है।

शोधार्थियों से यह अपेक्षा है कि वे अपनी शोध-दृष्टि को पश्चिमी प्रतिमानों की परिधि से मुक्त करें। जब भारत के शोधार्थी अपनी विरासत के प्रकाश में अनुसन्धान करेंगे तभी भारत पुनः 'सोने का हाथी' बनेगा और विश्व-गुरु की भूमिका निभाने में सक्षम होगा।

भविष्य की संभावनाएँ- एक उज्ज्वल क्षितिज

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के सन्दर्भ में महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय ने जो पन्द्रह सुविचारित सिफारिशें सरकार को प्रस्तुत की हैं, वे इस संस्था की नीति-निर्माण में सहभागिता और दायित्वबोध को दर्शाती हैं। यूनिफॉर्म अकादमिक कैलेंडर, क्लस्टर कॉलेज मॉडल, RPL, क्रेडिट ट्रान्सफर, ड्यूल डिग्री ये प्रावधान लागू हों, तभी नीति का स्वप्न यथार्थ बनेगा।

पर्यावरण संरक्षण की दिशा में नेट ज़ीरो कार्बन कैम्पस' का संकल्प, १०० खेजड़ी वृक्षों का रोपण, पक्षियों के लिए परिण्डे, अनासागर झील पर पक्षी-अवलोकन ये पहलें यह बताती हैं कि इस विश्वविद्यालय की शिक्षा का क्षेत्र कक्षाओं की चहारदीवारी से कहीं आगे जाकर प्रकृति, समाज और राष्ट्र को आलिंगन करता है।

गाँवों में स्वास्थ्य शिविर, नशा मुक्ति अभियान, छात्राओं की सुरक्षा के लिए संवादात्मक बैठकें ये सभी प्रयास यह सिद्ध करते हैं कि विश्वविद्यालय की संवेदना केवल शैक्षिक नहीं, बल्कि सामाजिक भी है। शिक्षा और सेवा का यही सम्मिलन भारतीय गुरुकुल परंपरा की पुनरावृत्ति है।

अपनी जड़ों की ओर

आपके करकमलों में शोभित इस अंक के प्रत्येक पृष्ठ पर एक संकल्प की अनुगूँज सुनाई देती है कि जब व्यक्ति अपनी संस्कृति को विस्मृत कर देता है, तो यही सबसे बड़ा 'वज्रपात' होता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय ने यह वज्रपात नहीं सहा- यह संस्था अपनी जड़ों से जुड़ी रही, अपनी परंपराओं का सम्मान करती रही और निरन्तर आगे बढ़ती रही।

'त्रिवेणी' का यह अंक उस सामूहिक यात्रा का साक्ष्य है जहाँ कुलगुरु का दूरदर्शी नेतृत्व है, शिक्षकों की निष्ठा है, शोधार्थियों की जिज्ञासा है, विद्यार्थियों का उत्साह है और समाज की भागीदारी है। यह पत्रिका केवल पढ़ने की नहीं का अनुभव करने, विचार करने और संकल्प लेने की निमन्त्रण है।

जिस दिन भारत का हर विद्यार्थी अपनी विरासत को गर्व से अपनाएगा, जिस दिन हर शोधार्थी वेद और वेदान्त के प्रकाश में समसामयिक प्रश्नों का उत्तर खोजेगा उस दिन विश्व पुनः स्वीकार करेगा कि भारत ज्ञान की वह अक्षय भूमि है जिसने सदा विश्व को आलोकित किया है।

ऋतस्य पन्थाः सत्य का मार्ग कभी अवरुद्ध नहीं होता।

प्रो. ऋतु माथुर
संपादक
महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय,
अजमेर

अप्रैल 2026

नई विद्यार्थी-केंद्रित वेबसाइट का विधिवत लोकार्पण

राजस्थान के माननीय राज्यपाल एवं कुलाधिपति श्री हरिभाऊ बागडे ने जयपुर स्थित लोकभवन में महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर की नई विद्यार्थी-केंद्रित वेबसाइट का विधिवत लोकार्पण किया। उन्होंने बटन दबाकर वेबसाइट का शुभारंभ करते हुए इसे डिजिटल शिक्षा, पारदर्शिता और प्रशासनिक सुगमता की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम बताया। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि प्रवेश, पाठ्यक्रम, परीक्षा एवं परिणाम जैसी प्रक्रियाओं का ऑनलाइन और पारदर्शी होना समय की आवश्यकता है, जिससे देश-विदेश के विद्यार्थी भी आकर्षित होंगे।

कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने इस अवसर पर विश्वविद्यालय में पिछले आठ माह में हुए नवाचारों का विस्तृत प्रस्तुतीकरण दिया। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय 'जीरो कार्बन कैम्पस' के रूप में विकसित हो चुका है तथा भारतीय ज्ञान परम्परा, वैदिक वाङ्मय और सांस्कृतिक मूल्यों को आधुनिक शिक्षा व शोध से जोड़ा जा रहा है। प्रस्तुतीकरण में सांस्कृतिक परिसर निर्माण, पर्यावरण संरक्षण, नवीकरणीय ऊर्जा, शैक्षणिक सुधार, ई-गवर्नेंस, स्टार्टअप प्रोत्साहन, सामाजिक उत्तरदायित्व और समावेशी शिक्षा जैसे आयाम शामिल रहे।

राज्यपाल श्री हरिभाऊ बागडे ने इन पहलों की सराहना करते हुए इसे अन्य विश्वविद्यालयों के लिए प्रेरणादायक मॉडल बताया और विश्वविद्यालय को शिक्षण, अनुसंधान व नवाचार में अग्रणी भूमिका निभाने का आह्वान किया।

कार्यक्रम में डॉ. पृथ्वी, राजकुमार सागर, श्री कैलाश चंद शर्मा, डॉ. विनोद जैन, डॉ. स्वतंत्र शर्मा सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे। नई वेबसाइट के माध्यम से विद्यार्थियों, अभिभावकों और शोधार्थियों को एक ही मंच पर सभी सेवाएं अधिक सुगम, पारदर्शी और उपयोगकर्ता-अनुकूल रूप में उपलब्ध होंगी।

भारतीय ज्ञान परम्परा और शोध की नई दिशाएँ

स्वदेशी बोध, सनातन ग्रंथ और विकसित भारत का स्वप्न

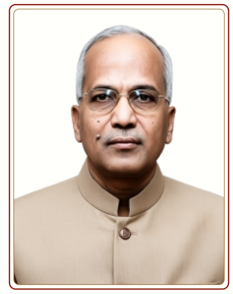

प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल
कुलगुरु

1. प्रस्तावना

ज्ञान की यात्रा सदैव अपनी जड़ों से प्रारम्भ होती है। भारत की सभ्यता विश्व की प्राचीनतम और सर्वाधिक समृद्ध सभ्यताओं में से एक है। शताब्दियों तक हमने पश्चिम के ज्ञान-तंत्र, उनकी शोध-विधियों और उनके वैचारिक ढाँचों पर निर्भरता बनाए रखी। हमने उनके विचारों को आयात किया, उनकी प्रणालियों को अपनाया और अपनी चिंतन-परम्परा को गौण मान लिया। परंतु अब परिस्थितियाँ बदल रही हैं — नई पीढ़ी में एक नई चेतना जाग्रत हो रही है।

प्रस्तुत मोनोग्राफ महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर के शोध छात्रों के कोर्सवर्क उद्घाटन समारोह में कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल द्वारा दिए गए उद्बोधन पर आधारित है। यह उद्बोधन भारतीय ज्ञान परम्परा की पुनर्स्थापना, सनातन ग्रंथों की प्रासंगिकता और स्वदेशी शोध-दृष्टि के महत्त्व को रेखांकित करता है।

2. पश्चिमी ज्ञान-तंत्र पर निर्भरता और परिवर्तन की बेला

दीर्घकाल तक भारत की शिक्षा-व्यवस्था और शोध-परम्परा पश्चिमी ज्ञान-तंत्र से संचालित होती रही। हमने दुर्खाइम, कार्ल मार्क्स और पश्चिमी समाजशास्त्रियों के सिद्धान्तों को अपनी सामाजिक वास्तविकताओं पर आरोपित किया। अपनी सनातन परम्पराओं, अपने साहित्य और अपनी दार्शनिक धरोहर को हमने शोध के केंद्र से हटा दिया।

किंतु अब युग बदल रहा है। नई पीढ़ी में अपनी संस्कृति, अपनी परम्पराओं और अपने दर्शन के प्रति जिज्ञासा और आस्था दोनों बढ़ रही है। यह मात्र एक भावनात्मक झुकाव नहीं, बल्कि एक वैश्विक बौद्धिक प्रवृत्ति है जो भारतीय ज्ञान की श्रेष्ठता को पुनः स्थापित कर रही है।

3. भारतीय ज्ञान परम्परा का वैश्विक उत्थान

३.१ श्रीमद्भगवद्गीता और प्रबंधन शिक्षा

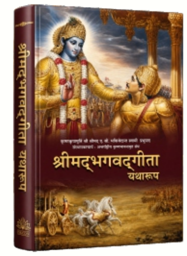

अमरीका के एक प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय में श्रीमद्भगवद्गीता एवं कर्मयोग पर आधारित एक ऐच्छिक पाठ्यक्रम (Open Elective) प्रारम्भ किया गया। इस पाठ्यक्रम की 700 सीटें थीं, जो अत्यल्प समय में पूर्णतः भर गईं और पंजीकरण रोकना पड़ा। इसी प्रकार BITS पिलानी के छात्रों द्वारा किए गए एक शोध में यह प्रदर्शित किया गया कि किस प्रकार भारतीय ग्रंथों में वर्णित जीवन-दर्शन आधुनिक युवाओं के लिए प्रेरणास्रोत है।

गीता को अब तक मात्र 'तनाव प्रबंधन' (Stress Management) के एक उपकरण के रूप में सीमित किया जाता रहा। परंतु यह अत्यंत संकुचित दृष्टि है। गीता वस्तुतः विचारों की सटीकता (Precision of Thought) और स्पष्टता (Clarity of Thought) का एक अद्वितीय ग्रंथ है। जब श्रीकृष्ण अर्जुन को उसके धर्म की ओर प्रेरित करते हैं — तो वह केवल एक धार्मिक संवाद नहीं, अपितु जीवन-प्रबंधन की एक उत्कृष्ट शिक्षा है।

३.२ रामायण, महाभारत और सनातन ग्रंथों की शोध-संभावनाएँ

श्रीमद्भागवत गीता, रामायण, महाभारत, उपनिषद् और अन्य सनातन ग्रंथों में शोध की असीमित संभावनाएँ विद्यमान हैं। इन ग्रंथों में न केवल धार्मिक शिक्षा, अपितु समाजशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, मनोविज्ञान, अर्थशास्त्र और प्रबंधन के अनेक सिद्धान्त अंतर्निहित हैं। इन्हें आधुनिक शोध के साथ अन्तर्संबंधित (Interrelate) करना आज के शोधार्थियों का महत्त्वपूर्ण दायित्व है।

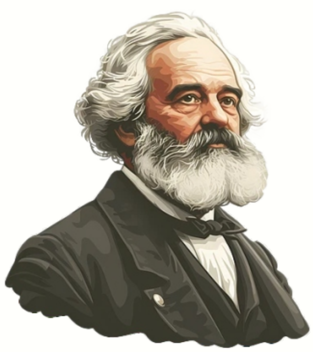

4. सामाजिक विज्ञान और भारतीय परम्पराओं का वियोग

भारत में सामाजिक विज्ञान का विकास मुख्यतः पश्चिमी चिंतकों के सिद्धान्तों के आधार पर हुआ। हमने दुर्खाइम की सामाजिक संरचना और कार्ल मार्क्स के वर्ग-संघर्ष को भारतीय समाज पर प्रयुक्त किया — भले ही वे हमारी वास्तविकताओं से सर्वथा भिन्न थे।

हम यह प्रश्न तक नहीं करते कि भारत में संयुक्त परिवार-व्यवस्था क्यों विघटित हो रही है, इसके क्या परिणाम हैं और इसे पुनर्स्थापित करने के लिए क्या किया जाना चाहिए। हमारी सनातन परम्पराएँ — चाहे वे पारिवारिक मूल्य हों, स्त्री-पुरुष के पूरक दायित्व हों अथवा सामाजिक सद्भाव की संस्थाएँ हों — इनका अध्ययन भारतीय दृष्टि से होना आवश्यक है।

5. भाषा और व्याकरण: एक महत्त्वपूर्ण उदाहरण

वेदांग में व्याकरण को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। संस्कृत व्याकरण की जो समृद्धि और सूक्ष्मता है, वह विश्व की किसी भी भाषा में नहीं मिलती। किंतु हमने एक भयंकर भूल की — हमने 'व्याकरण' को 'Grammar' के पर्याय के रूप में स्वीकार कर लिया।

'व्याकरण' और 'Grammar' समतुल्य नहीं हैं। व्याकरण भाषा की आत्मा को, शब्द की शक्ति को, अर्थ की गहराई को स्पर्श करती है। इसे केवल 'Grammar' कहकर हमने अपनी भाषा-चेतना को संकुचित कर दिया। भारतीय बोध को पुनर्स्थापित करने के लिए आवश्यक है कि हम अपनी शब्दावली, अपनी परिभाषाएँ और अपने वैचारिक ढाँचे स्वयं निर्मित करें।

बड़ौदा के गायकवाड़ महाराजा के हाथी का 1915 ई. में लिया गया फोटो। ये हाथी काफी शक्तिशाली था। इसका हौदा 70 किलो सोने से बना था।

6. भारत — सोने का हाथी

भारत को प्रायः 'सोने की चिड़िया' कहा जाता है। परंतु यह उपमा इसकी विशालता और शक्ति को पूर्णतः अभिव्यक्त नहीं करती। कुलगुरु जी के शब्दों में — भारत 'सोने का हाथी' था — सुदृढ़, विशाल, स्थिर और अजेय। किंतु एक सोचे-समझे षड्यंत्र के तहत हमारी परम्पराओं को नष्ट करने का प्रयास किया गया। यह निर्णय ऊपर से थोपा गया था, और हमने उसे क्रियान्वित किया।

जब कोई राष्ट्र अपनी संस्कृति को विस्मृत कर देता है, तो यही सबसे बड़ा 'वज्रपात' होता है। हमने वह वज्रपात सहा। परंतु अब पुनरुत्थान का समय आ गया है। भारत को विकसित राष्ट्र बनाने का आधार हमारे सनातन ग्रंथों, हमारी जीवन-दृष्टि और हमारी शोध-परम्परा में निहित है।

7. शोध की दिशा और दायित्व

७.१ उद्देश्यहीन शोध की समस्या

एक विश्वविद्यालय के साक्षात्कार बोर्ड की घटना का संदर्भ देते हुए कुलगुरु जी ने बताया कि समाजशास्त्र के एक अभ्यर्थी के दो शोध-कार्य 'Stratification' (स्तरीकरण) पर आधारित थे। जब उनसे दोनों के अंतर के बारे में पूछा गया, तो उन्होंने कहा — 'यह मेरा प्रोजेक्ट है और यह मेरी पीएचडी है।'

यह उत्तर आज की शोध-संस्कृति की दुर्दशा को उजागर करता है। शोधार्थी को यह स्पष्ट होना चाहिए था कि उसने किस दृष्टिकोण से, किस क्षेत्र में और किस वर्ग को लेकर स्तरीकरण का अध्ययन किया है। वित्त-पोषण (Funding) के लिए की जाने वाली शोध न तो ज्ञान का विस्तार करती है और न ही राष्ट्र का निर्माण।

७.२ आदर्श शोध की विशेषताएँ

एक श्रेष्ठ शोधकार्य में निम्नलिखित गुण अपेक्षित हैं:

- भारतीय ज्ञान-परम्परा और सनातन ग्रंथों से जुड़ाव।
- स्पष्ट शोध-उद्देश्य, परिप्रेक्ष्य और कार्यक्षेत्र का निर्धारण।
- विचारों की सटीकता (Precision) और स्पष्टता (Clarity)।
- भारतीय बोध और दृष्टिकोण से समकालीन समस्याओं का विश्लेषण।
- राष्ट्र के विकास और सांस्कृतिक पुनरुत्थान में योगदान का भाव।

8. विकसित भारत और शोध का आधार

किसी भी देश का विकास उसकी शोध-क्षमता पर निर्भर करता है। उद्योग-जगत में R&D (Research and Development) विभाग की अनिवार्यता पहले से स्वीकृत है। अब विश्वविद्यालयों में भी R&D की संस्कृति विकसित होनी चाहिए। परंतु यह शोध वह नहीं होनी चाहिए जो पश्चिमी प्रतिमानों को ढोती रहे।

विकसित भारत का स्वप्न तभी साकार होगा जब हमारी शोध-परम्परा हमारी जड़ों से जुड़ेगी — जब हम वेद, वेदांग , उपनिषद् और सनातन ग्रंथों के प्रकाश में समकालीन प्रश्नों का उत्तर खोजेंगे। विश्व को यह बताना होगा कि भारत एक ऐसी सभ्यता है जिसका ज्ञान-कोश आज भी विश्व को दिशा देने में सक्षम है।

9. नई पीढ़ी से अपेक्षाएँ

कुलगुरु जी ने नई पीढ़ी के प्रति अपनी आशावादिता व्यक्त करते हुए कहा कि आज के युवा पहले की तुलना में कहीं अधिक बौद्धिक और ज्ञानवान हैं। वे न केवल परम्परागत ज्ञान से परिचित हैं, अपितु वैश्विक ज्ञान-तंत्र को भी समझते हैं। यही संयोजन उन्हें एक ऐसी शोध-दृष्टि विकसित करने में सक्षम बनाता है जो भारतीय बोध को वैश्विक धरातल पर स्थापित करे।

शोधार्थियों से यह अपेक्षा है कि वे अपने शोध-विमर्शों को हमारे ग्रंथों में उपलब्ध विमर्शों से अन्तर्संबंधित करें। सामाजिक विज्ञान को भारतीय परम्पराओं से अलग न करें। अपनी शोध में भारतीय बोध, भारतीय शब्दावली और भारतीय दृष्टिकोण को केंद्र में रखें।

10. उपसंहार

भारतीय शोध को अपनी जड़ों की ओर लौटना होगा। सनातन ग्रंथ, भारतीय दर्शन और स्वदेशी परम्पराएँ न केवल धर्म का, अपितु ज्ञान, प्रबंधन, समाज और विकास का भी आधार हैं।

जब भारत के शोधार्थी पश्चिमी प्रतिमानों की दासता से मुक्त होकर अपनी विरासत के प्रकाश में शोध करेंगे — तभी भारत पुनः 'सोने का हाथी' बनेगा और विश्व-गुरु की भूमिका निभाने में सक्षम होगा।

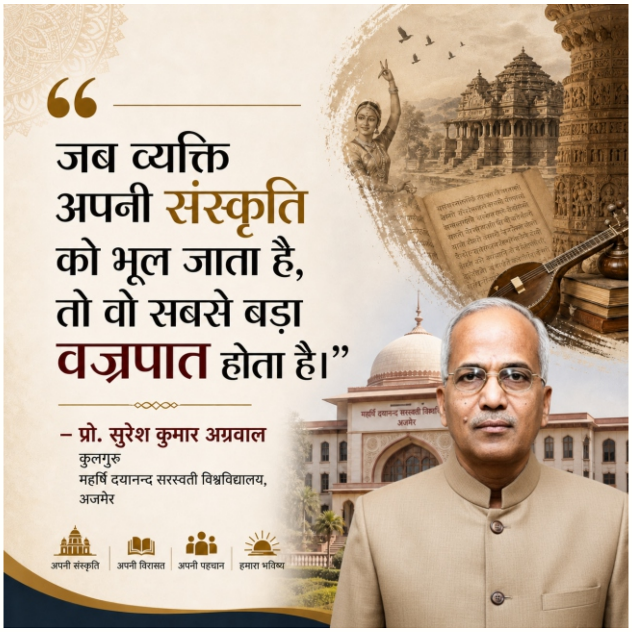

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 : प्रभावी क्रियान्वयन की दिशा में सुदृढ़ पहलें

NEP ओरिएंटेशन एवं सेंसिटाइजेशन कार्यक्रम का सफल समापन

UGC Malaviya Mission Teacher Training Centre, महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय अजमेर द्वारा St. Stephen's College के सहयोग से "उच्च शिक्षा और समाज" विषय पर आयोजित आठ दिवसीय ऑनलाइन अभिमुखीकरण एवं संवेदनशीलता कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के समापन सत्र की अध्यक्षता करते हुए कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार समापन सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रो. अग्रवाल ने कहा कि किसी भी प्रशिक्षण की वास्तविक सार्थकता उसके सीखने योग्य निष्कर्ष में निहित होती है। शिक्षकों को अपने मनोभाव, शिक्षण विधि और पाठ्य सामग्री पर पुनर्विचार करते हुए सीखी गई बातों को कक्षा में लागू करना चाहिए। उन्होंने स्पष्ट किया कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० केवल भारतीय ज्ञान परंपरा तक सीमित नहीं है, बल्कि क्रेडिट प्रणाली, बहुविषयक दृष्टिकोण और पाठ्यक्रम सुधार के माध्यम से उच्च शिक्षा में व्यापक परिवर्तन लाने का लक्ष्य रखती है। इस अवसर पर मुख्य अतिथि डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन राजस्थान आयुर्वेद विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. गोविन्द सहाय शुक्ल रहे।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु बैठकों का आयोजन

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए विज्ञान, गृह विज्ञान एवं पर्यावरण विज्ञान संकायों की बोर्ड ऑफ स्टडीज़ की महत्वपूर्ण बैठक आयोजित हुई। बैठक में विषय विशेषज्ञों, विभागाध्यक्षों और बाह्य विशेषज्ञों ने भाग लेकर नवीन पाठ्यक्रम संरचना, बहुविषयक शिक्षा प्रणाली तथा स्नातक कार्यक्रमों के पुनर्गठन पर विस्तृत चर्चा की।

कुलगुरु प्रो सुरेश कुमार अग्रवाल ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 एक गतिशील व्यवस्था है, जिसे समयानुसार विकसित करना आवश्यक है। बैठक में तीन वर्षीय स्नातक (120 क्रेडिट), चार वर्षीय ऑनर्स/शोध आधारित (160 क्रेडिट) तथा एकीकृत कार्यक्रमों की रूपरेखा पर सहमति बनी। साथ ही मल्टीपल एंट्री एवं एग्जिट प्रणाली लागू करते हुए विभिन्न स्तरों पर प्रमाणपत्र, डिप्लोमा और डिग्री प्रदान करने का निर्णय लिया गया।

रोजगारपरकता बढ़ाने हेतु कौशल, भाषा दक्षता, बहुविषयक अध्ययन एवं मूल्य संवर्धन पाठ्यक्रमों को अनिवार्य बनाने पर जोर दिया गया। पूर्व आचार्य प्रो आशीष भटनागर ने भूमिका प्रस्तुत की तथा पूर्व कुलगुरु प्रो कैलाश चन्द्र शर्मा का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। कुलगुरु ने विश्वविद्यालय को गुणवत्ता आधारित शिक्षा में अग्रणी बनाने की प्रतिबद्धता दोहराई।

पीएचडी कोर्स वर्क

1. एमडीएसयू के स्वराज सभागार में 15 दिवसीय पीएचडी कोर्स वर्क का समापन हुआ, जिसमें 89 शोधार्थियों (37 महिलाएं) ने भाग लिया। कार्यक्रम 'शोध प्रविधि एवं कंप्यूटर अनुप्रयोग' पर आधारित था, जिसमें डेटा विश्लेषण, शोध लेखन व शुचिता पर प्रशिक्षण दिया गया। 'शोध चक्र' डिजिटल प्रोजेक्ट से ऑनलाइन रिसर्च प्रशिक्षण भी मिला। समापन पर प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने प्रमाण-पत्र वितरित किए। इस अवसर पर प्रो. सुभाष चंद्र व प्रो. सुब्रतो दत्ता उपस्थित रहे।

2. विश्वविद्यालय, अजमेर 5 मार्च को शोधार्थियों हेतु कोर्स वर्क कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। उद्घाटन करते हुए कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने कहा कि भगवद्गीता का कर्मयोग आधुनिक शोध के लिए अत्यंत प्रासंगिक है, जो कर्तव्यनिष्ठा, नैतिकता और निर्णय क्षमता का मार्गदर्शन करता है। उन्होंने बताया कि भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रति वैश्विक स्तर पर रुचि बढ़ रही है और नई पीढ़ी तकनीकी ज्ञान के साथ मूल्याधारित दृष्टि भी चाहती है। कार्यक्रम समन्वयक प्रो. सुभाष चंद्र ने कहा कि यह पाठ्यक्रम शोधार्थियों को नैतिक एवं व्यापक दृष्टिकोण से अनुसंधान हेतु प्रेरित करेगा।

3. महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय में 15 दिवसीय पीएचडी कोर्स वर्क का समापन हुआ। कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने कहा कि शोध केवल उपाधि नहीं, बल्कि समाज व राष्ट्र के विकास का माध्यम होना चाहिए। उन्होंने बताया कि पहली बार विभिन्न संकायों को अलग समूहों में व्यवस्थित प्रशिक्षण दिया गया। निदेशक शोध प्रो. सुब्रतो दत्ता ने कहा कि प्रशिक्षण ने शोध के उद्देश्य और सामाजिक जिम्मेदारी को स्पष्ट किया। अध्यक्षता प्रो. सुभाष चंद्र ने की तथा बताया कि लगभग 200 शोधार्थियों ने सफलतापूर्वक सहभागिता की।

"केवल सिलेबस नहीं बल्कि पूर्ण आउटकम आधारित करिकुलम तैयार किया जाएगा, जिसमें शिक्षण पद्धति, मूल्यांकन प्रणाली एवं रोजगार संबंधी उपयोगिता शामिल होगी।"

एक दिवसीय फैकल्टी डेवलपमेंट वर्कशॉप

महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर में 24 मार्च 2026 को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु एक दिवसीय फैकल्टी डेवलपमेंट वर्कशॉप का आयोजन स्वराज सभागार में किया गया। मुख्य अतिथि डॉ. प्रेमचंद बैरवा (उप मुख्यमंत्री एवं उच्च शिक्षा मंत्री) ने विश्वविद्यालय की पहल की सराहना करते हुए कहा कि एमडीएसयू प्रदेश का पहला विश्वविद्यालय है जिसने एनईपी आधारित अध्यादेश लागू किए हैं। उन्होंने शिक्षा को कौशल आधारित बनाने, CBSE एवं सेमेस्टर प्रणाली, छात्राओं को आरक्षण, शुल्क माफी तथा नवाचार आधारित पाठ्यक्रमों की जानकारी दी और शिक्षकों को नीति क्रियान्वयन का आधार बताया।

अध्यक्षता करते हुए कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने एनईपी को एक गतिशील दस्तावेज बताते हुए लचीली प्रवेश प्रणाली, समान शैक्षणिक ढांचा, यूनिफॉर्म अकादमिक कैलेंडर, क्रेडिट ट्रांसफर, RPL, SOPs, क्लस्टर कॉलेज मॉडल, इंडस्ट्री-एकेडमिक सहयोग एवं फैकल्टी प्रशिक्षण की आवश्यकता पर बल दिया। विशिष्ट अतिथि प्रो. नारायण लाल गुप्ता तथा श्री महेंद्र कपूर ने एनईपी के चरणबद्ध क्रियान्वयन, स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप नीति लागू करने और शैक्षणिक स्वायत्तता बनाए रखने पर जोर दिया।

कार्यशाला संयोजक प्रो. आशीष भटनागर ने बताया कि पाँच तकनीकी सत्रों में 3+2 प्रणाली, SWAYAM पोर्टल, इंटीग्रेटेड यूजी-पीजी, ऑनर्स कार्यक्रम एवं नए अध्यादेशों पर चर्चा हुई। विभिन्न सत्रों में प्रो. सुभाष चन्द्र, सिस्टर पर्ल, प्रो. अरविंद पारीक, प्रो. मोनिका भटनागर ने विषय विशेषज्ञ के रूप में भागीदारी की। कार्यक्रम में श्री कैलाश चंद्र शर्मा, प्रो. सुब्रतो दत्ता, प्रो. ऋतु माथुर, प्रो. शिव प्रसाद, सुश्री नेहा शर्मा, डॉ. सुनील टेलर सहित प्राचार्य, संकाय सदस्य, बोर्ड ऑफ स्टडीज सदस्य एवं शोधार्थियों ने सक्रिय सहभागिता की और पाठ्यक्रम निर्माण हेतु सुझाव प्रस्तुत किए।

"युवा उद्यमिता यात्रा" एवं ट्रेनिंग वर्क शॉप का आयोजन

विश्वविद्यालय के स्वराज सभागार में "युवा उद्यमिता यात्रा" का भव्य शुभारंभ स्वदेशी जागरण मंच, स्वदेशी स्वावलंबी भारत अभियान एवं स्टीफन कॉलेज किशनगढ़ के सहयोग से हुआ। यह कार्यक्रम युवाओं में आत्मनिर्भरता, नवाचार और स्वरोजगार की भावना विकसित करने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल साबित हुआ। मुख्य अतिथि श्री वासुदेव देवनानी ने उद्यमिता को राष्ट्र निर्माण का आधार बताते हुए युवाओं से नौकरी चाहने के बजाय रोजगार सृजन करने वाला बनने का आह्वान किया। श्री राधेश्याम चोयल ने यात्रा की संकल्पना प्रस्तुत करते हुए बताया कि यह अभियान युवाओं को प्रशिक्षण, वित्तीय मार्गदर्शन, कौशल विकास, इंटर्नशिप और बाजार से जोड़कर उन्हें वास्तविक उद्यम स्थापित करने में सक्षम बनाएगा। श्री सतीश कुमार ने स्पष्ट किया कि वर्तमान समय में सभी को नौकरी मिलना संभव नहीं है, इसलिए युवाओं को अपनी क्षमता पहचानकर उद्यमिता अपनानी होगी। श्री निम्बा राम जी ने भारतीय परंपरा में आत्मनिर्भरता की अवधारणा को रेखांकित करते हुए स्थानीय संसाधनों और कौशल के उपयोग पर बल दिया। अध्यक्षता करते हुए कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने "Learn, Earn and Perform" जैसी पहलों का उल्लेख करते हुए कहा कि शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों को जीवनोपयोगी बनाना है। उन्होंने युवाओं को जॉब सीकर नहीं, बल्कि जॉब क्रिएटर बनने के लिए प्रेरित किया। यह यात्रा राजस्थान के विभिन्न जिलों में आयोजित होगी, जहां चयनित युवाओं को बूट कैंप, मेंटरशिप और निरंतर हैंडहोल्डिंग के माध्यम से उद्यम स्थापित करने में सहायता दी जाएगी, जिससे एक मजबूत उद्यमिता इकोसिस्टम विकसित होगा।

कार्यक्रम में श्री लोकेंद्र नरूका, डॉ. संत कुमार, डॉ. कुलदीप सिंह, बलराज, श्री राकेश, डॉ. ज्योति वर्मा, प्रो. शिव प्रसाद, प्रो. अरविंद पारिक, प्रो. सुभाष चंद्र, प्रो. ऋतु माथुर, प्रो. सुब्रत दत्ता, सुश्री नेहा शर्मा, कुलदीप सिंह शेखावत, श्री शिवराज जी, श्री खाजूलाल चौहान सहित अनेक गणमान्य उपस्थित रहे। अंत में कैलाश चंद्र शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

विश्वविद्यालय में विश्व स्वास्थ्य दिवस पर खाद्य विज्ञान एवं पोषण विभाग, योग विज्ञान एवं मानवीय चेतना विभाग तथा राष्ट्रीय सेवा योजना इकाइयों के संयुक्त तत्वावधान में स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम आयोजित हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ वैद्य श्री चंद्रकांत चतुर्वेदी ने दीप प्रज्ज्वलन के साथ किया। उन्होंने आयुर्वेद की वैज्ञानिकता, अथर्ववेद से उसके उद्गम तथा महर्षि चरक और आचार्य नागार्जुन के योगदान पर प्रकाश डालते हुए संतुलित दिनचर्या, ऋतुचर्या और घरेलू औषधियों के महत्व को बताया। खाद्य विज्ञान विभागाध्यक्ष प्रो. ऋतु माथुर ने मोटापा एवं असंतुलित जीवनशैली के दुष्प्रभावों पर प्रकाश डालते हुए गीता के श्लोक के माध्यम से संतुलित आहार-विहार और नियमित दिनचर्या का संदेश दिया। कार्यक्रम में प्रो. अरविंद पारीक, प्रो. सुभाष चंद्र, प्रो. भारती जैन, प्रो. सुब्रतो दत्ता, डॉ. राजू लाल शर्मा, डॉ. असेम जयंती देवी, दीपचंद पवार, बृजेश कुमार पांडे, सुगन चंद मेघवंशी, अनुपमा शर्मा सहित अनेक प्राध्यापक व विद्यार्थी उपस्थित रहे। संचालन डॉ. लारा शर्मा ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. आशीष पारीक ने दिया।

विभिन्न समझौता ज्ञापन (MoU)

(i) CHARGE, अजमेर एवं स्वदेशी शोध संस्थान, नई दिल्ली के साथ एमओयू - विश्वविद्यालय ने शोध, नवाचार एवं उद्यमिता को बढ़ावा देने हेतु दो प्रतिष्ठित संस्थाओं के साथ एमओयू किए। कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने इसे विद्यार्थियों के समग्र विकास और प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता बढ़ाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम बताया। इन समझौतों के तहत संयुक्त शोध, संसाधन आदान-प्रदान, IPR संरक्षण, कौशल विकास, संगोष्ठी, सेमिनार और इंटर्नशिप के अवसर प्रदान किए जाएंगे। पहला एमओयू CHARGE, अजमेर के साथ हुआ, जिसमें एग्रीबिजनेस, स्टार्टअप, डिजिटल नवाचार और ग्रामीण विकास पर कार्य होगा। दूसरा एमओयू स्वदेशी शोध संस्थान, नई दिल्ली के साथ सामाजिक विज्ञान विषयों में शोध हेतु किया गया। इन समझौतों पर प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल एवं राधे श्याम चोयल ने हस्ताक्षर किए।

इस अवसर पर राधे श्याम चोयल, प्रो. सुभाष चन्द्र, प्रो. आशीष भटनागर एवं डॉ. आशीष पारीक उपस्थित रहे।

(ii) महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर और डॉ. शकुंतला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय, लखनऊ के मध्य दिव्यांगजन शिक्षा, पुनर्वास और समावेशी उच्च शिक्षा को सुदृढ़ बनाने हेतु एक महत्वपूर्ण एमओयू संपन्न हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने की, जबकि विशिष्ट उपस्थिति कुलगुरु प्रो. संजय सिंह की रही। इस अवसर पर दोनों विश्वविद्यालयों के प्राध्यापक, अधिकारी, शोधार्थी एवं विशेषज्ञ बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। कुलगुरु प्रो. संजय सिंह ने अपने उद्बोधन में 'रिवर्स इंटीग्रेशन' मॉडल की विशेषताओं को बताते हुए कहा कि इसमें दिव्यांग और गैर-दिव्यांग विद्यार्थी साथ अध्ययन कर समावेशी एवं संवेदनशील समाज का निर्माण करते हैं। उन्होंने विश्वविद्यालय में उपलब्ध सुविधाओं जैसे टैक्टाइल गाइडेड पाथवे, उन्नत ब्रेल लाइब्रेरी, ब्रेल प्रिंटिंग, स्पीच एवं ऑडियोलॉजी क्लिनिक, कृत्रिम अंग केंद्र और पैरा-स्पोर्ट्स सुविधाओं का उल्लेख किया। साथ ही एआई आधारित सहायक तकनीक, स्मार्ट चश्मे और साइन लैंग्वेज रूपांतरण जैसे नवाचारों पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने ऑटिज्म एवं बौद्धिक अक्षमता के बढ़ते मामलों पर चिंता जताते हुए काउंसलिंग एवं परिवार सहयोग कार्यक्रमों की आवश्यकता बताई। प्रो- संजय सिंह ने कुलगुरु प्रो- सुरेश कुमार अग्रवाल के साथ विश्वविद्यालय का अवलोकन किया और इसे देश का सबसे स्व च्छ विश्वविद्यालय बताया। उन्होंने विश्वविद्यालय द्वारा किए जा रहे नवाचारों की भी प्रशंसा की।

"NEP 2020 को केवल भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) तक सीमित करना उचित नहीं। यह नीति उच्च शिक्षा में क्रेडिट सिस्टम, बहुविषयक दृष्टिकोण तथा समग्र परिवर्तन की अपेक्षा करती है

— प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल"

इंडिया पोस्ट पेमेंट्स बैंक (IPPB) के साथ एमओयू

विश्वविद्यालय अजमेर ने शिक्षा को कौशल और रोजगार से जोड़ने की दिशा में इंडिया पोस्ट पेमेंट्स बैंक (IPPB) के साथ 09 अप्रैल 2026 को महत्वपूर्ण एमओयू किया। कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने इसे विद्यार्थियों के लिए व्यावहारिक ज्ञान और करियर उन्मुख अवसर प्रदान करने वाली ऐतिहासिक पहल बताया। इस समझौते के तहत विद्यार्थियों को बैंकिंग एवं वित्तीय सेवाओं में इंटर्नशिप, लाइव प्रोजेक्ट्स, प्रशिक्षण, कार्यशालाएं और सेमिनारों के माध्यम से वास्तविक अनुभव मिलेगा। प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल के अनुसार IPPB प्रशिक्षण व प्रोजेक्ट अवसर उपलब्ध कराएगा, जबकि विश्वविद्यालय विद्यार्थियों को मार्गदर्शन, मंच और शैक्षणिक सहयोग प्रदान करेगा। यह पहल "स्किल इंडिया", "डिजिटल इंडिया" और "आत्मनिर्भर भारत" अभियानों के अनुरूप विद्यार्थियों में कौशल, आत्मविश्वास और प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता विकसित करेगी। कार्यक्रम में IPPB के प्रशांत दादराओजी शिंदे, आशुतोष कुमार मिश्रा, सुनील कुमावत, निखिल सिंह तथा विश्वविद्यालय के कैलाश चन्द्र शर्मा और प्रो. शिव प्रसाद उपस्थित रहे।

"बौद्धिक ज्ञान के साथ तकनीकी उपयोग ही राष्ट्रीय शिक्षा नीति की मूल भावना है।"
– प्रो सुरेश कुमार अग्रवाल – कुलगुरु

अन्य सह शैक्षणिक गतिविधियाँ

अजमेर स्थित आनासागर झील पर मेयो गर्ल्स स्कूल की छात्राओं के लिए फील्ड-आधारित पक्षी अवलोकन सत्र आयोजित किया गया, जिसका समन्वय विश्वविद्यालय के पर्यावरण विज्ञान विभाग ने किया। कार्यक्रम का उद्देश्य छात्राओं को पक्षियों की पहचान, उनकी पारिस्थितिक भूमिका और जैवविविधता संरक्षण के महत्व से परिचित कराना था।

सत्र के दौरान प्राध्यापकों एवं विशेषज्ञों ने दूरबीन और फील्ड गाइड की सहायता से स्थानीय एवं प्रवासी पक्षियों के व्यवहार, पहचान और गणना पद्धतियों की जानकारी दी। अवलोकन में ग्रेट व्हाइट पेलिकन, ब्लैक-हेडेड गल, इंडियन स्पॉट-बिल्ड डक, ग्रेट कॉर्मोरेंट और कॉमन कूट जैसे पक्षी विशेष आकर्षण रहे, जिससे झील की पारिस्थितिक समृद्धि स्पष्ट हुई।

कार्यक्रम में डॉ. मंजरी गर्ग, डॉ. शिल्पी वत्स, रैना शर्मा, ऋचा शर्मा, रक्षिता शर्मा, अजय प्रसाद एवं अरुण सिंह उपस्थित रहे। विश्वविद्यालय की ओर से प्रो. प्रवीण माथुर, डॉ. विवेक शर्मा, दिवाकर यादव, रौनक चौधरी, पवन सिंह, आयुषी मीणा एवं रूबी मलिक ने मार्गदर्शन दिया। विभागाध्यक्ष प्रो. सुब्रतो दत्ता ने कहा कि प्रकृति से जुड़ाव ही संरक्षण का सबसे प्रभावी माध्यम है।

विश्व नम भूमि दिवस (2 फरवरी 2026) पर इको क्लब, पर्यावरण विज्ञान विभाग, महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, सोफिया कॉलेज अजमेर एवं वन विभाग अजमेर के संयुक्त तत्वावधान में अनासागर झील किनारे बर्ड वॉक आयोजित हुआ। इसका उद्देश्य नम भूमि पारिस्थितिकी के महत्व और जैव विविधता संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाना था। प्रतिभागियों ने लगभग 80 स्थानीय व प्रवासी पक्षियों का अवलोकन किया तथा उनके व्यवहार, प्रवास और आवास के बारे में जानकारी प्राप्त की।

कार्यक्रम का नेतृत्व पक्षीविद् डॉ. विवेक शर्मा ने किया। उन्होंने पक्षी पहचान, दूरबीन व फील्ड गाइड के उपयोग और पर्यावरण में पक्षियों की भूमिका समझाई। लगभग ५० प्रतिभागियों ने ३ किमी की पदयात्रा की।

इस अवसर पर डॉ. मृगांका उपाध्याय, रौनक चौधरी, निवेदिता शर्मा, जय सिंह चौधरी, नीमा देवी, कद्दू चौधरी, महेश श्रीवास्तव, खेलो, बच्छराज सिंह, शर्मिला, उमेद राम, निंबाराम गोदारा, चंद्रप्रकाश उपस्थित रहे। अंत में सभी ने नम भूमि संरक्षण व स्वच्छता का संकल्प लिया।

गुरुकुलीय वातावरण के निर्माण की पहल

विश्वविद्यालय में कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में विश्वविद्यालय की कार्यप्रणाली में महर्षि दयानंद के आदर्शों को लागू करने हेतु महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए। सभी विभागों, कार्यालयों एवं इकाइयों में प्रतिदिन प्रार्थना सभा तथा प्रत्येक सोमवार भारत मुनि ऑडिटोरियम में सामूहिक प्रार्थना अनिवार्य की गई। इसके समन्वय की जिम्मेदारी प्रो. अरविंद पारीक एवं प्रो. सुभाष चंद्र को सौंपी गई।

निर्णय लिया गया कि प्रमुख कार्यक्रमों का शुभारंभ वैदिक हवन से होगा तथा विद्यार्थियों के लिए महर्षि दयानंद के सिद्धांतों पर आधारित एक क्रेडिट पाठ्यक्रम अनिवार्य किया जाएगा। नई शिक्षा नीति-2020 के तहत बोर्ड ऑफ स्टडीज बैठकों का आयोजन 10 फरवरी से प्रारंभ होगा।

कुलगुरु प्रो. अग्रवाल ने बताया कि विश्वविद्यालय में गुरुकुल परंपरा आधारित वातावरण विकसित किया जा रहा है, जिसमें गायत्री मंत्र, प्रार्थना और नैतिक मूल्यों के माध्यम से विद्यार्थियों के समग्र विकास पर बल दिया जा रहा है।

श्रेयस

सात दिवसीय राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर विश्वविद्यालय के योग विज्ञान विभाग में राष्ट्रीय सेवा योजना के सात दिवसीय विशेष शिविर का शुभारंभ "श्रेयस : सामुदायिक प्रगति एवं सशक्त राष्ट्र का आधार युवा" विषय के साथ हुआ। मुख्य अतिथि कुलगुरु प्रो सुरेश कुमार अग्रवाल ने सेवा को राष्ट्र निर्माण का आधार बताते हुए कहा कि राष्ट्रीय सेवा योजना युवाओं में अनुशासन, सामाजिक उत्तरदायित्व और समावेशिता विकसित करने का सशक्त माध्यम है।

एनएसएस संयोजिका प्रो मोनिका भटनागर ने "श्रेयस" को श्रेष्ठ मार्ग का प्रतीक बताते हुए निस्वार्थ सेवा की भावना पर बल दिया। डॉ. आशीष पारीक ने बताया कि शिविर में ग्राम संवाद, स्वच्छता, स्वास्थ्य जागरूकता, पर्यावरण संरक्षण, नशा मुक्ति और सामाजिक समरसता से जुड़ी गतिविधियाँ आयोजित होंगी। कार्यक्रम में प्रो. सुब्रतो दत्ता, प्रो. ऋतु माथुर, प्रो. अरविन्द पारीक, प्रो. सुभाष चन्द्र, डॉ. राजू लाल शर्मा सहित अनेक शिक्षक उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन डॉ लारा शर्मा ने किया।

पाक्षिक ई-बुलेटिन शुरू - विश्वविद्यालय में पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के प्रथम सेमेस्टर विद्यार्थियों ने डिजिटल पत्रकारिता की दिशा में पहल करते हुए पाक्षिक ई-बुलेटिन शुरू किया। इसका लोकार्पण कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने किया। पहला अंक महर्षि दयानंद सरस्वती की २०२वीं जयंती पर आधारित रहा, जिसमें उनके वैदिक दर्शन और समाज सुधार विचारों को प्रस्तुत किया गया। कुलगुरु ने कहा कि बौद्धिक ज्ञान के साथ तकनीकी उपयोग राष्ट्रीय शिक्षा नीति की मूल भावना है। शिक्षकों ने इसे विश्वविद्यालय की गतिविधियों और शोध कार्यों के प्रसार का प्रभावी माध्यम बताया।

विश्वविद्यालय में महर्षि दयानंद सरस्वती वीथिका का उद्घाटन कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने किया। उन्होंने निदेशक शोधपीठ एवं यूजीसी चेयर प्रोफेसर प्रो ऋतु माथुर, व्यवस्था समिति एवं सभी सहयोगियों को बधाई दी। कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने बताया कि यह वीथिका महर्षि दयानंद सरस्वती शोध पीठ के अंतर्गत स्थापित की गई है। उद्घाटन के लिए वही दिन चुना गया, जिस दिन महर्षि दयानंद सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना की थी। वीथिका में उनके जीवन से जुड़े प्रेरणादायक प्रसंग प्रदर्शित हैं।

डॉ. भीमराव अंबेडकर की जयंती पर डॉ. बी. आर. अंबेडकर शोधपीठ के तत्वावधान में तीन दिवसीय रचनात्मक एवं बौद्धिक प्रतियोगिताओं का आयोजन - विश्वविद्यालय में डॉ. भीमराव अंबेडकर की जयंती पर डॉ. बी. आर. अंबेडकर शोधपीठ के तत्वावधान में तीन दिवसीय रचनात्मक एवं बौद्धिक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। उद्देश्य विद्यार्थियों में समानता, न्याय और स्वतंत्रता के मूल्यों के प्रति जागरूकता बढ़ाना रहा। 7 अप्रैल 2026 को "आधुनिक भारत के लिए बाबा साहेब के विचार" विषय पर निबंध प्रतियोगिता आयोजित हुई, जिसमें विद्यार्थियों ने उनके विचारों की समकालीन प्रासंगिकता प्रस्तुत की। 8 अप्रैल को "क्या आज का भारत डॉ. अंबेडकर का सपना पूरा कर पाया है?" विषय पर वाद-विवाद प्रतियोगिता हुई, जिसमें प्रतिभागियों ने तार्किक तर्कों के साथ पक्ष-विपक्ष में विचार रखे। 9 अप्रैल को "समानता, न्याय व स्वतंत्रता: अंबेडकर का सपना" विषय पर पोस्टर प्रतियोगिता आयोजित हुई, जिसमें विद्यार्थियों ने सृजनात्मक अभिव्यक्ति दिखाई।

इन प्रतियोगिताओं में विभिन्न संकायों के विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। शोधपीठ ने सभी प्रतिभागियों की सराहना करते हुए कहा कि ऐसे आयोजन विद्यार्थियों को रचनात्मकता के साथ राष्ट्रनिर्माण के मूल्यों से जोड़ते हैं।

नारी शक्ति वंदन अधिनियम के उपलक्ष्य में कार्यक्रम - विश्वविद्यालय में नारी शक्ति वंदन अधिनियम के उपलक्ष्य में कार्यक्रम आयोजित हुआ, जिसमें राजस्थान के मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा एवं उप मुख्यमंत्री दिया कुमारी ने जयपुर के बिड़ला ऑडिटोरियम से वर्चुअल संवाद किया।

मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा ने इसे महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी बढ़ाने वाला ऐतिहासिक कदम बताते हुए निर्णय प्रक्रिया में उनकी भूमिका सशक्त होने की बात कही तथा अभियान के समर्थन का आह्वान किया। दिया कुमारी ने अधिनियम के तहत लोकसभा व राज्यसभा में 33% भागीदारी सुनिश्चित होने को लोकतंत्र को अधिक समावेशी बनाने वाला कदम बताया। अध्यक्षता करते हुए कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने कहा कि नारी सशक्तिकरण ही समग्र विकास की आधारशिला है और विश्वविद्यालय महिला शिक्षा व नेतृत्व विकास के लिए प्रतिबद्ध है। कार्यक्रम का संयोजन प्रो. मोनिका भटनागर ने किया। इस अवसर पर प्रो. सुभाष चंद, डॉ. राजू शर्मा, डॉ. विवेक शर्मा सहित संकाय सदस्य एवं छात्राएं उपस्थित रहीं।

पृथ्वी दिवस पर पर्यावरण संरक्षण को समर्पित विविध कार्यक्रम

शिक्षा विभाग की सहगामी गतिविधियों का आयोजन - विश्वविद्यालय में कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने शिक्षा विभाग की सहगामी गतिविधियों के निरीक्षण के दौरान कहा कि एआई युग में शिक्षक की पहचान रचनात्मक, संवादात्मक और विद्यार्थी-केंद्रित शिक्षण से ही बनेगी। उन्होंने स्पष्ट किया कि शिक्षण एकतरफा न होकर द्विपक्षीय संवाद होना चाहिए, जिससे विद्यार्थियों में जिज्ञासा, आत्मविश्वास और आलोचनात्मक सोच विकसित हो। उन्होंने सहगामी गतिविधियों को विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास का प्रभावी माध्यम बताते हुए भावी शिक्षकों से शिक्षण को अनुभवात्मक बनाने का आह्वान किया। साथ ही ग्रामीण पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों को भी समान अवसर देने पर जोर दिया। शिक्षा विभाग प्रभारी प्रो. सुभाष चन्द्र ने बताया कि 20–28 अप्रैल 2026 तक बी.एड. सत्र 2025–26 के तहत विभिन्न गतिविधियां आयोजित की जा रही हैं। फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता में निकिता सिंधी, नीलम कुमावत, गोविंद शर्मा, पायलनाथ, ममता गुर्जर, चंद्र प्रकाश रेगर, परशराम साहू, अक्षिता, जितेंद्र गुर्जर ने भाग लिया। इस अवसर पर भावना गौड़, अनुराधा जैन, डॉ. सुनील कुमार, डॉ. आशा सेन, डॉ. नेमीचंद तंबोली उपस्थित रहे, जबकि संचालन डॉ. अंजु अग्रवाल ने किया।

विश्वविद्यालय में पृथ्वी दिवस पर पर्यावरण संरक्षण को समर्पित विविध कार्यक्रम आयोजित किए गए। पर्यावरण विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. सुब्रतो दत्ता ने "जीरो कार्बन कैंपस" की अवधारणा पर प्रकाश डालते हुए बताया कि कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल के नेतृत्व में विश्वविद्यालय नेट जीरो कार्बन कैंपस बनने की दिशा में अग्रसर है। विद्यार्थियों ने कार्बन उत्सर्जन घटाने, प्लास्टिक उपयोग कम करने, ऊर्जा संरक्षण और पौधारोपण का संकल्प लिया। छात्र अमृत के नेतृत्व में प्रतिनिधिमंडल ने कुलगुरु को पौधा भेंट किया। कुलगुरु ने "एक पेड़–माँ के नाम" अभियान अपनाने का आह्वान किया। इसी क्रम में रिमोट सेंसिंग एवं जियो-इन्फॉर्मेटिक्स विभाग द्वारा "Our Power, Our Planet" थीम पर कार्यक्रम आयोजित हुआ, जिसमें हिमाद्री योगी, विकास, कुसुम शर्मा, मुस्कान और प्रियंका ने प्रस्तुति दी। Prof. Subroto Dutta, Dr. Soniya Deval एवं Maina Tholiya ने GIS व तकनीक के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण के महत्व पर बल दिया।

नवप्रवेशित विद्यार्थियों के स्वागत हेतु फ्रेशर्स पार्टी का आयोजन

विश्वविद्यालय के प्राणीशास्त्र विभाग में नवप्रवेशित विद्यार्थियों के स्वागत हेतु फ्रेशर्स पार्टी का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि ज्ञान के साथ संस्कार जीवन की वास्तविक पहचान हैं और सफलता केवल करियर नहीं, बल्कि मूल्यों से निर्धारित होती है। विभागाध्यक्ष प्रो. सुभाष चन्द्र ने स्वागत करते हुए बताया कि कार्यक्रम पूर्णतः विद्यार्थियों द्वारा संचालित किया गया, जो उनके सर्वांगीण विकास का उदाहरण है। उन्होंने विभाग में आधुनिक उपकरणों की स्थापना, सीबीसीएस आधारित शिक्षा तथा "लर्निंग विद अर्निंग" के अंतर्गत ड्रोसोफिला कल्चर, वर्मी कम्पोस्टिंग एवं ऑर्गेनिक कम्पोस्ट जैसे प्रोजेक्ट्स की जानकारी दी। कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दीं तथा भविष्य में प्लेसमेंट अवसर बढ़ाने की योजना भी साझा की गई। अंत में सभी अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापित कर विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की गई।

ज्ञान एवं पद पा लेना ही पर्याप्त नहीं, संस्कार बिना जीवन में संतुलन एवं संतुष्टि नहीं मिलती

- कुलगुरु

प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल

सेंटर फॉर एंटरप्रेन्योरशिप एंड स्मॉल बिजनेस मैनेजमेंट (CESBM) का 22वां स्थापना दिवस समारोह

विश्वविद्यालय के सेंटर फॉर एंटरप्रेन्योरशिप एंड स्मॉल बिजनेस मैनेजमेंट (CESBM) का 22वां स्थापना दिवस समारोह गरिमामय वातावरण में आयोजित हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने की, जबकि मुख्य अतिथि के रूप में उद्योगपति श्री राधे श्याम चोयल उपस्थित रहे। निदेशक डॉ. आशीष पारीक ने केंद्र की उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए बताया कि CESBM से 1100 से अधिक विद्यार्थी दीर्घकालीन पाठ्यक्रमों से तथा लगभग 1600 प्रतिभागी कौशल एवं उद्यमिता कार्यक्रमों से लाभान्वित हुए हैं। उन्होंने CHARGE के साथ हुए एमओयू को नवाचार और स्टार्टअप संस्कृति के लिए महत्वपूर्ण बताया। मुख्य अतिथि श्री राधे श्याम चोयल ने युवाओं को नौकरी के साथ उद्यमिता अपनाने का संदेश दिया और अपने नवाचार एवं पेटेंट अनुभव साझा किए। कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने कहा कि शिक्षा तभी सार्थक है, जब शोध समाज के हित में उतरे। उन्होंने "एक्शन रिसर्च" और शिक्षा–बाजार समन्वय पर बल दिया। अंत में डॉ. दीपिका उपाध्याय ने आभार व्यक्त किया।

शिक्षा विभाग में साप्ताहिक पाठ्य सहगामी गतिविधियों का उत्साहपूर्ण समापन

विश्वविद्यालय के शिक्षा विभाग में साप्ताहिक पाठ्य सहगामी गतिविधियों का उत्साहपूर्ण समापन हुआ। इस अवसर पर प्रभारी प्रो. सुभाष चंद्र ने विजेता विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र एवं स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। उन्होंने कहा कि भावी शिक्षक के लिए केवल सफलता नहीं, बल्कि सक्रिय सहभागिता और अनुभव भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं। साथ ही बी.एड. एवं एम.एड. विद्यार्थियों को 7 मई से प्रारंभ होने वाली परीक्षाओं के लिए शुभकामनाएं दीं। सप्ताह भर चली गतिविधियों में मेहंदी, रंगोली, मांडना, पोस्टर निर्माण, सलाद सज्जा, एकल गायन, कविता पाठ, एकल अभिनय, फैंसी ड्रेस, नृत्य, बोर्ड डेकोरेशन एवं योग सत्र शामिल रहे। "काव्य धारा" कार्यक्रम में साहित्यकारों ने मार्गदर्शन दिया। कार्यक्रम में डॉ. नेमीचंद तंबोली, डॉ. भावना गौड़, डॉ. आशा सेन, डॉ. सुनील कुमार, डॉ. अंजू अग्रवाल, अनुराधा जैन, डॉ. के.के. शर्मा उपस्थित रहे। विद्यार्थियों ने इसे आत्मविश्वास, रचनात्मकता और व्यक्तित्व विकास हेतु उपयोगी बताया।

गार्गी महिला छात्रावास में एक दिवसीय निशुल्क चिकित्सा शिविर आयोजित

विश्वविद्यालय के धन्वंतरि आरोग्य केंद्र द्वारा गार्गी महिला छात्रावास में एक दिवसीय निशुल्क चिकित्सा शिविर आयोजित किया गया। कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल की प्रेरणा से आयोजित शिविर में 62 छात्राओं का स्वास्थ्य परीक्षण एवं रक्त जांच की गई। कुलगुरु ने स्वस्थ जीवन के लिए सकारात्मकता, संतुलित आहार एवं नियमित दिनचर्या अपनाने पर जोर दिया। शिविर में डॉ. नेहा राजावत, डॉ. गोविंद सिंह राठौर, डॉ. नितिन शर्मा एवं डॉ. दिलीप सिंह ने सेवाएं प्रदान कीं। इस अवसर पर प्रो. अरविंद पारीक, मेट्रन सुनीता सहित अन्य उपस्थित रहे।

विश्वविद्यालय गौरव एवं विद्यार्थी सम्मान

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर की छात्रा परी कोठारी ने चेन्नई में आयोजित इंटर यूनिवर्सिटी नेशनल यूथ फेस्टिवल 2025-26 में वाग्मिता (इलोक्यूशन) प्रतियोगिता में तृतीय स्थान प्राप्त कर विश्वविद्यालय को राष्ट्रीय स्तर पर गौरवान्वित किया। इससे पूर्व उन्होंने वेस्ट जोन यूथ फेस्टिवल, आणंद (गुजरात) में द्वितीय स्थान प्राप्त कर राष्ट्रीय प्रतियोगिता के लिए चयन सुनिश्चित किया था। सत्यभामा इंस्टिट्यूट ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी, चेन्नई में आयोजित इस प्रतिष्ठित आयोजन में देशभर के प्रतिभागियों के बीच परी ने अपने प्रभावशाली वक्तृत्व कौशल का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल, अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. सुभाष चन्द्र तथा कुलसचिव कैलाश चन्द्र शर्मा ने इस उपलब्धि पर छात्रा को बधाई देते हुए इसे विश्वविद्यालय एवं प्रदेश के लिए गौरवपूर्ण उपलब्धि बताया।

'आचार्य सुश्रुत' तथा 'ऋषि शालिहोत्र' सम्मान

महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय के प्राणिशास्त्र विभाग द्वारा उपनिषद सभागार में 'गौरव सम्मान' समारोह आयोजित किया गया। इसमें राजकीय सेवा, उच्च शिक्षा, सहायक आचार्य, नेट, जेआरएफ व पीएचडी में सफल विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। विभागाध्यक्ष प्रो. सुभाष चंद्र ने बताया कि राजकीय सेवा हेतु 'आचार्य सुश्रुत' तथा नेट, जेआरएफ व पीएचडी हेतु 'ऋषि शालिहोत्र' सम्मान प्रदान किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने की। संचालन डॉ. विवेक शर्मा ने किया एवं धन्यवाद ज्ञापित डॉ. राजू शर्मा ने किया। विभाग के सात विद्यार्थियों ने 2025 में सीएसआईआर-नेट भी उत्तीर्ण किया।

> ***"शोध केवल उपाधि नहीं, समाज परिवर्तन का माध्यम बने।"***
>
> ***- कुलगुरु***
> ***प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल***

पश्चिमांचल युवा महोत्सव में विद्यार्थियों द्वारा अब तक का श्रेष्ठ प्रदर्शन

विश्वविद्यालय के सांस्कृतिक दल ने आनंद (गुजरात) में आयोजित पश्चिमांचल युवा महोत्सव में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। साहित्य समूह की वाग्मिता प्रतियोगिता में छात्रा परी कोठारी ने द्वितीय स्थान प्राप्त कर ट्रॉफी जीती। समग्र प्रदर्शन में विश्वविद्यालय ने संगीत स्पर्धा में चौथा स्थान हासिल किया। विभिन्न प्रतियोगिताओं में क्लासिकल वोकल, कार्टूनिंग, समूह गीत एवं पेंटिंग जैसी विधाओं में भी उल्लेखनीय स्थान प्राप्त हुए। कुलगुरु प्रो सुरेश कुमार अग्रवाल ने विद्यार्थियों को बधाई देते हुए इसे विश्वविद्यालय की सांस्कृतिक परंपरा की सफलता बताया। टीम के साथ सुरेंद्र कुमावत, डॉ. स्वतंत्र शर्मा एवं डॉ. कोमल भसीन ने मार्गदर्शन दिया, जबकि अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो सुभाष चन्द्र ने भी विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन किया।

विश्वविद्यालय की **काशिश गुर्जर** ने ऑल इंडिया अंतर विश्वविद्यालय कुश्ती **(फ्री स्टाइल) में रजत पदक** जीतकर विश्वविद्यालय का गौरव बढ़ाया। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, हरियाणा में आयोजित प्रतियोगिता में उन्होंने **50 किलो वर्ग** में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल एवं कुलसचिव कैलाश चंद्र शर्मा ने उन्हें बधाई दी।

13 विद्यार्थियों का ICICI Prudential Life Insurance में चयन

13 विद्यार्थियों का ICICI Prudential Life Insurance में चयन - विश्वविद्यालय के प्रबंध अध्ययन विभाग ने उत्कृष्ट प्लेसमेंट रिकॉर्ड कायम करते हुए 13 विद्यार्थियों का चयन ICICI Prudential Life Insurance में सुनिश्चित किया। 17 अप्रैल 2026 को आयोजित इस ड्राइव में कंपनी की ओर से प्रियंका विश्वास एवं चेष्टा गुप्ता ने चयन प्रक्रिया संचालित की, जिसमें 40 विद्यार्थियों ने भाग लिया। ग्रुप डिस्कशन एवं व्यक्तिगत साक्षात्कार के बाद 13 विद्यार्थियों—अमन सिंह बकावत, अनुज शर्मा, अनुराग सिंह राठौड़, चारु दिवाकर, हर्ष कुमार राव, हितेश जैन, जयसिंह, केशव शर्मा, पायल खत्री, शिवांगी, सोनिया साजू, विभेंद्र सिंह राठौड़, यादवीर तामोली—का चयन हुआ। चयनित विद्यार्थियों को लगभग 4.5 लाख रुपये वार्षिक पैकेज के साथ मेडिक्लेम और ग्रुप इंश्योरेंस सुविधाएं मिलेंगी। कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने विद्यार्थियों को बधाई देते हुए ईमानदारी व उत्कृष्टता से कार्य करने की प्रेरणा दी। विभागाध्यक्ष प्रो. शिव प्रसाद ने इसे विभाग की गुणवत्ता और उद्योग से मजबूत संबंधों का परिणाम बताया।

संगोष्ठियों का आयोजन

महर्षि दयानन्द सरस्वती की 202वीं जयंती

महर्षि दयानन्द सरस्वती की 202वीं जयंती के अवसर पर महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर में एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि एवं वक्ता श्री मुरलीधर ने स्वामी दयानन्द के जीवन को राष्ट्र, धर्म और संस्कृति के प्रति समर्पण का आदर्श बताते हुए कहा कि उनका "वेदों की ओर लौटो" संदेश आज भी समाज को दिशा देता है। उन्होंने सामाजिक कुरीतियों, अंधविश्वास, जातिगत भेदभाव के विरुद्ध उनके संघर्ष तथा नारी शिक्षा, विधवा विवाह, स्वदेशी और समानता के समर्थन को रेखांकित किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने विश्वविद्यालय में वैदिक मूल्यों पर आधारित शिक्षा और शोध को बढ़ावा देने की प्रतिबद्धता व्यक्त की। उन्होंने गायत्री मंत्र प्रसारण, 'सत्यार्थ प्रकाश' भेंट करने की परंपरा, महर्षि दयानंद शोधपीठ एवं चेयर के माध्यम से वैदिक अध्ययन, तथा विद्यार्थियों के लिए एक क्रेडिट पाठ्यक्रम लागू किए जाने की जानकारी दी।

शोधपीठ की निदेशक प्रो. ऋतु माथुर ने स्वागत उद्बोधन में महर्षि दयानन्द के विचारों को भारतीय नवजागरण का आधार बताया। प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में निधि शर्मा प्रथम रहीं, जबकि महेंद्र कुमार गोदारा, तनिष्का मावलिया, मिहिर गुर्जर, साक्षी खत्री, शाहीन एवं राहुल यादव द्वितीय स्थान पर रहे।

कार्यक्रम में जगदीश जी राणा, खाजु लाल चौहान, अशोक, प्रो. अरविंद पारीक, प्रो. सुभाष चंद्र, प्रो. शिव प्रसाद, प्रो. सुब्रोतो दत्ता, डॉ. राजू शर्मा, डॉ. लारा शर्मा, डॉ. जयंती, डॉ. सूरजमल राव, डॉ. सुनील टेलर उपस्थित रहे। अंत में श्री कैलाश चंद्र शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापित किया तथा संचालन डॉ. विवेक शर्मा ने किया।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय की 58वीं पुण्यतिथि

पंडित दीनदयाल उपाध्याय की 58वीं पुण्यतिथि पर महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर के सिंधु शोध पीठ द्वारा एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता श्री हनुमान सिंह राठौड़ ने कहा कि दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद आज भी समाज और राष्ट्र के समग्र विकास का मार्गदर्शक है। उन्होंने युवाओं से भारतीय ज्ञान परंपरा को अपनाकर राष्ट्रहित में योगदान देने का आह्वान किया। उन्होंने बताया कि दीनदयाल जी ने विपरीत परिस्थितियों में भी राष्ट्रसेवा को सर्वोपरि रखा तथा एकात्म मानव दर्शन व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के बीच संतुलन स्थापित करता है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने कहा कि दीनदयाल उपाध्याय एक कर्मयोगी थे, जिन्होंने अपने सिद्धांतों को व्यवहार में उतारा। उन्होंने विश्वविद्यालयों में भारतीय दृष्टि पर आधारित अध्ययन, अध्यापन और शोध को बढ़ावा देने पर बल दिया तथा इसे उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि बताया। सिंधु शोध पीठ के निदेशक प्रो. सुभाष चंद्र ने स्वागत भाषण दिया, जबकि कुलसचिव कैलाश चंद्र शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. अंजू अग्रवाल ने किया।

इस अवसर पर प्रो. अरविंद पारीक, प्रो. ऋतु माथुर, प्रो. मोनिका भटनागर, प्रो. प्रवीण माथुर, डॉ. अश्विनी तिवाड़ी, डॉ. सूरज मल राव, डॉ. राजू शर्मा, डॉ. लारा शर्मा, डॉ. विवेक शर्मा सहित अनेक अतिथि, शिक्षक, शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

नव संवत्सर 2083 एवं चैत्र शुक्ल प्रतिपदा पर संगोष्ठी

महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर में नव संवत्सर 2083 एवं चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के अवसर पर अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के सहयोग से भव्य समारोह आयोजित हुआ, जिसमें पुष्कर-चित्रकूट धाम के प्रधान उपासक पूज्य श्री पाठक जी महाराज का आशीर्वचन प्राप्त हुआ तथा अध्यक्षता कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने की। कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने विश्वविद्यालय को गुरुकुल परंपरा पर आधारित विकसित करने, वैदिक मंत्रों एवं गायत्री मंत्र से दिनचर्या प्रारंभ करने तथा 'आत्मावलोकन दिवस' प्रतिवर्ष मनाने की घोषणा की। उन्होंने राष्ट्र निर्माण में आत्मचिंतन और कर्तव्यनिष्ठा पर बल दिया।

कला संकाय के अधिष्ठाता प्रो. अनिल दाधीच ने चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक व आध्यात्मिक महत्व को रेखांकित करते हुए इसे सृजन, संस्कार और आत्मनिर्माण का पर्व बताया।

पूज्य श्री पाठक जी महाराज ने सनातन धर्म की वैज्ञानिकता, नारी शक्ति के महत्व तथा राष्ट्रधर्म की सर्वोच्चता पर प्रकाश डाला।

अंत में कुल सचिव श्री कैलाश चंद्र शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन प्रो. अरविंद पारिक ने किया। समारोह में प्रो. सुभाष चंद्र सहित प्राध्यापक, अधिकारी, शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर “सशक्त नारी: महिला सशक्तिकरण पर वैदिक विमर्श” विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी - विश्वविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर “सशक्त नारी: महिला सशक्तिकरण पर वैदिक विमर्श” विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित हुई तथा विश्वविद्यालय की त्रैमासिक पत्रिका 'त्रिवेणी' के द्वितीय अंक का विमोचन किया गया। मुख्य अतिथि श्रीमती अनीता भदेल ने कहा कि नारी को सम्मान और शिक्षा दिए बिना समाज प्रगति नहीं कर सकता तथा महिला सशक्तिकरण समाज की सामूहिक जिम्मेदारी है।

अध्यक्षता करते हुए कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने वैदिक साहित्य में नारी के उच्च स्थान को रेखांकित करते हुए उसे शक्ति, ज्ञान और सृजन की प्रतीक बताया तथा सही संदर्भ में भारतीय ग्रंथों को समझने पर बल दिया। मुख्य वक्ताओं प्रो. वंदना शर्मा, प्रो. लक्ष्मी ठाकुर, नेहा शर्मा, डॉ. नीहारिका राठौड़ ने विभिन्न आयामों पर विचार व्यक्त किए। विषय प्रवर्तन प्रो. ऋतु माथुर, स्वागत कैलाश चन्द्र शर्मा तथा धन्यवाद प्रो. मोनिका भटनागर ने किया। कार्यक्रम में शिक्षक, शोधार्थी व विद्यार्थी उपस्थित रहे।

विश्वविद्यालय के सिंधु शोध केंद्र द्वारा पंडित माखनलाल चतुर्वेदी की जयंती पर “एक पुष्प की अभिलाषा” विषयक संगोष्ठी आयोजित हुई। अधिष्ठाता छात्र कल्याण एवं निदेशक सिंधु शोधपीठ प्रो. सुभाष चन्द्र ने उन्हें राष्ट्र चेतना के अग्रदूत बताते हुए उनके विचारों की प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला। मुख्य वक्ता डॉ. विजय शंकर शर्मा ने कविता का विश्लेषण करते हुए त्याग, समर्पण और राष्ट्रप्रेम के आदर्श को समझाया तथा दैनिक जीवन में कर्तव्यनिष्ठा को भी देशभक्ति बताया। कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने युवाओं को कौशल विकास, आत्मनिर्भरता और छोटे-छोटे कार्यों के माध्यम से राष्ट्र निर्माण का संदेश दिया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. अंजू अग्रवाल ने किया। इस अवसर पर दिलीप शर्मा, नेमी चंद तंबोली, डॉ. अंजू वर्मा, शिखा सोनी, पंकज यादव, कंचन, निकिता कुंडू सहित अन्य शोधार्थियों व विद्यार्थियों ने सहभागिता की।

> ***“नव संवत्सर परिवर्तन का उद्घोष है। जिस प्रकार प्रकृति बसंत में नवपल्लव धारण करती है, उसी प्रकार हमें भी अपने जीवन और कार्य में गतिशीलता बनाए रखनी चाहिए।”***
> ***—कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल***

सिंधी भाषा दिवस पर एक दिवसीय संगोष्ठी

विश्वविद्यालय के सिंधु संस्कृति एवं सिंधु शोध पीठ द्वारा सिंधी भाषा दिवस पर एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन अत्यंत गरिमामय वातावरण में किया गया। यह आयोजन 10 अप्रैल 1967 को सिंधी भाषा को भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल किए जाने की ऐतिहासिक उपलब्धि को समर्पित रहा, जिसका उद्देश्य भाषा, संस्कृति और राष्ट्रीय एकता के प्रति जागरूकता बढ़ाना था। कार्यक्रम का शुभारंभ डॉ. राजू शर्मा के स्वागत भाषण से हुआ, जिसमें उन्होंने सिंधी भाषा की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और उसके संरक्षण की आवश्यकता पर जोर दिया। मुख्य वक्ता प्रो. हासो दादलानी ने सिंधी भाषा की उत्पत्ति, विकास यात्रा और साहित्यिक परंपरा को विस्तार से प्रस्तुत करते हुए कहा कि यह भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि सांस्कृतिक पहचान और पीढ़ियों को जोड़ने वाली कड़ी है।

विशिष्ट अतिथि डॉ. चंद्रप्रकाश दादलानी ने विभाजन के बाद सिंधी समुदाय द्वारा भाषा और संस्कृति को संरक्षित रखने के संघर्षपूर्ण प्रयासों को रेखांकित करते हुए विद्यार्थियों को अपनी भाषाई विरासत से जुड़े रहने का संदेश दिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. सुभाष चंद्र ने की। उन्होंने विश्वविद्यालय द्वारा सिंधी भाषा के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए किए जा रहे प्रयासों तथा भाषाई अध्ययन के क्षेत्र में उभरते नए अवसरों पर प्रकाश डाला। वक्ताओं ने इस बात पर विशेष बल दिया कि भाषा केवल संप्रेषण का साधन नहीं, बल्कि समाज की पहचान, आत्मसम्मान और सांस्कृतिक निरंतरता का आधार होती है। संगोष्ठी में विद्यार्थियों और शोधार्थियों की सक्रिय भागीदारी ने यह दर्शाया कि नई पीढ़ी भी अपनी भाषाई विरासत के प्रति जागरूक हो रही है। कार्यक्रम का संचालन डॉ. नेमीचंद चंद तंबोली ने प्रभावी ढंग से किया तथा अंत में दिलीप शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापित किया। यह संगोष्ठी भाषा के संरक्षण, सांस्कृतिक जागरूकता और राष्ट्रीय एकता के संदेश को सशक्त रूप से स्थापित करने में सफल रही।

"सिंधी समुदाय ने अपने आपको कभी शरणार्थी नहीं वरन् सदैव पुरुषार्थी माना है और भारत व सनातन धर्म के प्रति अपनी निष्ठा कभी नहीं छोड़ी है।" -

माननीय विधानसभा अध्यक्ष - श्री वासुदेव देवनानी

डॉ. भीमराव अंबेडकर की 135वीं जयंती पर "अंबेडकर दृष्टि : समता से सामर्थ्य" विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी

विश्वविद्यालय में डॉ. भीमराव अंबेडकर की 135वीं जयंती पर "अंबेडकर दृष्टि : समता से सामर्थ्य" विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी स्वराज सभागार में आयोजित हुई। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने की, जबकि मुख्य अतिथि के रूप में विधायक डॉ. लालाराम बैरवा उपस्थित रहे। मुख्य वक्ता जसवंत खत्री ने अपने उद्बोधन में कहा कि केवल समानता (Equality) पर्याप्त नहीं, बल्कि समता (Equity) और समरसता के माध्यम से ही वास्तविक सामाजिक न्याय संभव है। उन्होंने स्पष्ट किया कि संसाधनों का आवश्यकता आधारित वितरण ही समाज के अंतिम व्यक्ति को सशक्त बना सकता है। उन्होंने बंधुत्व को संविधान के मूल मूल्यों—स्वतंत्रता, समानता और न्याय—का आधार बताते हुए कहा कि आत्मीयता, संवेदनशीलता और सहभागिता से ही समरस समाज का निर्माण संभव है। मुख्य अतिथि डॉ. लालाराम बैरवा ने अपने संबोधन में जनप्रतिनिधियों की सामाजिक जिम्मेदारी पर बल देते हुए कहा कि राजनीति के साथ-साथ समाज सेवा और संवेदनशील नेतृत्व भी आवश्यक है।

अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने डॉ. अंबेडकर को आधुनिक भारत का निर्माता बताते हुए उनके आर्थिक, सामाजिक और शैक्षणिक योगदान पर प्रकाश डाला। उन्होंने शोधार्थियों को सामाजिक उपयोगिता आधारित अनुसंधान के लिए प्रेरित किया तथा "The Problem of the Rupee" जैसी कृतियों का उल्लेख किया। साथ ही उन्होंने अगले वर्ष से विश्वविद्यालय में "भीम सप्ताह" आयोजित करने की घोषणा की।

शोधपीठ निदेशक प्रो. शिव प्रसाद ने 7 से 9 अप्रैल 2026 तक आयोजित प्रतियोगिताओं के परिणाम साझा किए—निबंध में चित्राशी जौनवाल (प्रथम), भूमिका डाबोला (द्वितीय), उदय पुरोहित (तृतीय); वाद-विवाद में अंशुल शर्मा (प्रथम), प्रेमचंद मेघवंशी (द्वितीय), प्रमोद चौहान (तृतीय); पोस्टर में भारती पुरोहित (प्रथम), रिंकू कंवर राठौर (द्वितीय), भूमिका डाबोला (तृतीय) विजेता रहे। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के अधिकारी, शिक्षक, कर्मचारी एवं बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित रहे। अंत में कुलसचिव कैलाश चन्द्र शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

"वेद-वेदांग और विकसित भारत" विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित

विश्वविद्यालय के वैदिक वाङ्मय संकाय द्वारा "वेद-वेदांग और विकसित भारत" विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रख्यात वैज्ञानिक एवं चिंतक डॉ. ओम प्रकाश पांडेय ने वेद, विज्ञान और चेतना के गहरे संबंध को विस्तार से स्पष्ट किया। उन्होंने 'ॐ' को ब्रह्मांडीय ध्वनि बताते हुए कंपन (वाइब्रेशन) और ऊर्जा के सिद्धांत से जोड़ा तथा बताया कि मानव चेतना के उच्च स्तर तक पहुंचने में इसका महत्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने वेदों में निहित खगोलशास्त्र, जीवविज्ञान, गुरुत्वाकर्षण, प्रकाश की गति, डीएनए संरचना और सृष्टि उत्पत्ति जैसे वैज्ञानिक संकेतों का उल्लेख करते हुए कहा कि प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा अत्यंत उन्नत रही है। उन्होंने वेदांगों—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद और ज्योतिष—को वेदों की वैज्ञानिक समझ का आधार बताते हुए कहा कि वेदों को केवल भाषा से नहीं, बल्कि अनुभव और शोध दृष्टि से समझना आवश्यक है। विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए उन्होंने मन, बुद्धि, अहंकार और चित्त को "आंतरिक सॉफ्टवेयर" बताते हुए पंचकोश के माध्यम से समग्र व्यक्तित्व विकास का मार्ग समझाया तथा अनुभवात्मक शिक्षा के महत्व पर बल दिया।

मुख्य श्री अतिथि वासुदेव देवनानी ने कहा कि विकसित भारत के लिए भौतिक प्रगति के साथ संस्कार, एकता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण आवश्यक हैं। उन्होंने युवाओं से आह्वान किया कि वे अपनी जड़ों को पहचानें और भारतीय परंपरा को हीन भावना से न देखें, बल्कि उसे वैज्ञानिक दृष्टि से समझकर आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ें। उन्होंने शिक्षा को "चरित्र निर्माण का माध्यम" बताते हुए कहा कि यदि शिक्षा में नैतिकता, राष्ट्रभावना और सामाजिक जिम्मेदारी का समावेश हो जाए, तो भारत को विकसित राष्ट्र बनने से कोई नहीं रोक सकता। विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि वेद और वेदांग केवल परंपरा नहीं, बल्कि "जीवन में प्रयुक्त होने वाली क्रियाशील बुद्धि (Wisdom in Action)" हैं, जिनका अध्ययन आधुनिक भारत के निर्माण के लिए अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने कहा कि औपनिवेशिक प्रभाव और पाश्चात्य ज्ञान के अंधानुकरण के कारण भारतीय ज्ञान परंपरा उपेक्षित हुई, जिसे पुनः स्थापित करना समय की मांग है।

उन्होंने शिक्षकों एवं विद्यार्थियों से आह्वान किया कि वे अंतःविषय, बहुविषय और अंतर्विषय दृष्टिकोण अपनाकर समग्र (Holistic) शिक्षा प्रणाली को सशक्त बनाएं, जहां ज्ञान और कौशल का संतुलित समन्वय हो। विकसित भारत की अवधारणा पर उन्होंने कहा कि यह केवल आर्थिक उन्नति नहीं, बल्कि समावेशी, शिक्षित, स्वस्थ, सुरक्षित और सतत समाज के निर्माण से जुड़ी है। इसके लिए "कल्पना (Envision), सक्षम बनाना (Enable) और क्रियान्वयन (Enact)" के तीन चरणों पर कार्य करना आवश्यक है। उन्होंने स्पष्ट किया कि किसी भी नीति को थोपने के बजाय उसे आत्मसात करना जरूरी है, जिसके लिए शिक्षार्थी-केंद्रित और अनुभवात्मक अधिगम अपनाना होगा। अंत में उन्होंने कहा कि अपनी जड़ों से जुड़े बिना कोई राष्ट्र विकसित नहीं हो सकता और भारत की शक्ति उसकी ज्ञान-प्रधान परंपरा में निहित है।

विषय प्रवर्तन प्रो. सुभाष चंद्र ने किया। संचालन अंजू अग्रवाल ने तथा धन्यवाद ज्ञापन कैलाश चन्द्र शर्मा ने किया। इस अवसर पर श्री सुरेश कुमार (सीआरपीएफ) एवं श्री राकेश पांडे सहित शिक्षक, शोधार्थी और विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

विश्वविद्यालय की डिजिटल पहल

महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर ने डिजिटल परिवर्तन की दिशा में एआई आधारित समग्र प्रबंधन सॉफ्टवेयर लागू करने की पहल की है। कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने बताया कि यह अत्याधुनिक सॉफ्टवेयर Times of India Group के CSR के अंतर्गत निःशुल्क उपलब्ध कराया जा रहा है, जिसकी बाजार कीमत लगभग 2–3 करोड़ रुपये प्रतिवर्ष है। यह प्रणाली जनरेटिव, एजेंटिक और डिटर्मिनिस्टिक एआई के संयोजन पर आधारित है, जिसमें चैटबॉट इंटरफेस के माध्यम से उपयोगकर्ता सामान्य भाषा में कार्य कर सकेंगे। "एआई टीचर" कक्षा संचालन में सहायक होगा, जो उपस्थिति दर्ज करने, अध्ययन सामग्री तैयार करने, असाइनमेंट व क्विज बनाने तथा विद्यार्थियों के स्तरानुसार मूल्यांकन करने में सक्षम होगा। साथ ही यह कमजोर विद्यार्थियों की पहचान कर उन्हें सुधारात्मक मार्गदर्शन भी देगा। इस सॉफ्टवेयर में 65 से अधिक मॉड्यूल शामिल हैं, जो प्रवेश प्रक्रिया, परीक्षा, ऑन-स्क्रीन मूल्यांकन, परिणाम, वित्तीय प्रबंधन, खरीद, मानव संसाधन, छात्रवृत्ति और अलुमनाई प्रबंधन तक सभी कार्यों को एकीकृत करेंगे। इससे कार्यों की पारदर्शिता, गति और सटीकता बढ़ेगी। विश्वविद्यालय से संबद्ध 400 से अधिक महाविद्यालयों को भी इस प्रणाली से जोड़ा जाएगा, जिससे रियल-टाइम निगरानी और प्रशासनिक नियंत्रण सुदृढ़ होगा। डेटा सुरक्षा के लिए सॉफ्टवेयर विश्वविद्यालय के अपने सर्वर पर संचालित होगा तथा कोड और डेटा को अलग-अलग सुरक्षित रखा जाएगा। इस पहल के तहत केवल तकनीकी विशेषज्ञों की सेवाओं का आवश्यकता अनुसार भुगतान किया जाएगा, जिससे कार्यान्वयन लचीला रहेगा। इस अवसर पर वित्त नियंत्रक, कुलसचिव, अधिष्ठाता छात्र कल्याण, विभागाध्यक्ष, परीक्षा नियंत्रक एवं कंप्यूटर केंद्र के अधिकारी उपस्थित रहे।

आधिकारिक व्हाट्सएप चैनल शुरू

विश्वविद्यालय ने विद्यार्थियों तक महत्वपूर्ण सूचनाएं शीघ्र पहुंचाने हेतु आधिकारिक व्हाट्सएप चैनल शुरू किया है। इस माध्यम से परीक्षा, प्रवेश, छात्रवृत्ति और प्रशासनिक घोषणाओं की जानकारी त्वरित व प्रामाणिक रूप से दी जाएगी। कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने बताया कि यह पहल विद्यार्थियों और विश्वविद्यालय के बीच पारदर्शी व प्रभावी संवाद स्थापित करेगी। विश्वविद्यालय ने संबद्ध महाविद्यालयों को निर्देश दिए हैं कि वे इस चैनल का व्यापक प्रचार करें, ताकि अधिक से अधिक विद्यार्थी जुड़कर समय पर सूचनाएं प्राप्त कर सकें।

शुल्क भुगतान डेबिट कार्ड, क्रेडिट कार्ड या नेट बैंकिंग से

महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय ने मुख्य परीक्षा सत्र 2025-26 के लिए आवेदन की अंतिम तिथि बढ़ाकर 19 फरवरी करते हुए विद्यार्थियों को बिना विलंब शुल्क के ऑनलाइन आवेदन करने की सुविधा दी तथा शुल्क भुगतान डेबिट कार्ड, क्रेडिट कार्ड या नेट बैंकिंग से होगा। एनईपी के तहत द्वितीय व तृतीय वर्ष के नियमित, पूर्व एवं स्वयं-पाठी विद्यार्थी पात्र हैं। विलंब शुल्क सहित तिथियां भी निर्धारित हैं। एक सेमेस्टर पेपर अधिकतम तीन अवसरों में उत्तीर्ण करना अनिवार्य होगा।

खेलोत्सव - जयघोष

महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय में सत्र 2025-26 की दूसरी अंतरमहाविद्यालय नेटबॉल (पुरुष) प्रतियोगिता का उद्घाटन 6 फरवरी को दयानंद महाविद्यालय आनंद स्वामी स्पोर्ट्स कॉम्पलेक्स में हुआ। मुख्य अतिथि ने प्रतियोगिता का शुभारंभ किया। प्राचार्य डॉ. लक्ष्मीकांत ने खेल गतिविधियों पर प्रकाश डाला, जबकि विशिष्ट अतिथि डॉ. संजय तोमर ने खिलाड़ियों को बेहतर सुविधाएं उपलब्ध कराने पर बल दिया। डॉ. कुलदीप सिंह, खेल अधिकारी ने प्रतियोगिता के महत्व की जानकारी दी। इस प्रतियोगिता में सात महाविद्यालयों की टीमों ने भाग लिया|

अजमेर में दयानंद कॉलेज की मेजबानी में आयोजित अंतरमहाविद्यालय खो-खो (पुरुष) प्रतियोगिता में डीएवी कॉलेज ने खिताब जीत लिया। समापन समारोह में मुख्य अतिथि अनिल गुजराल (रामगंज थाना अधिकारी) ने विजेताओं को पुरस्कृत किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता डा. लक्ष्मीकांत शर्मा (प्राचार्य, दयानंद कॉलेज) ने की। खेल अधिकारी डॉ. कुलदीप सिंह के अनुसार प्रतियोगिता में पांच महाविद्यालयों की टीमों ने भाग लिया। इस अवसर पर आयोजन सचिव नेना राम, बी.बी. उपाध्याय, योगेश कुमार और विनय कुमार भी उपस्थित रहे।

विश्वविद्यालय में 38वीं अंतर-महाविद्यालय महिला खो-खो प्रतियोगिता का उद्घाटन उत्साहपूर्वक हुआ, जिसमें 11 महाविद्यालयों की टीमें भाग लिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने की। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत खेल शिक्षा का अभिन्न अंग हैं और इससे अनुशासन, आत्मविश्वास व नेतृत्व क्षमता का विकास होता है। अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. सुभाष चंद्र ने महिला खिलाड़ियों की सक्रिय भागीदारी को प्रेरणादायक बताया। कार्यक्रम में प्रो. अरविंद पारीक, डॉ. विष्णु परमार, प्रो. मनोज यादव, डॉ. शाहिना शेरानी, डॉ. तपेश्वर कुमार, डॉ. संजय तोमर, डॉ. कुलदीप सिंह, डॉ. लारा शर्मा, प्रेम राज मीना उपस्थित रहे। प्रतियोगिता में सोफिया कॉलेज, गवर्नमेंट कॉलेज जायल, फिजिकल कॉलेज भीलवाड़ा व दयानंद कॉलेज विजयी रहे।

इसी प्रतियोगिता के साथ विश्वविद्यालय में 38वीं अंतर महाविद्यालयीय खेल प्रतियोगिताओं का समापन हुआ, जिसमें महिला खो-खो में डीएवी कॉलेज विजेता रहा। मुख्य अतिथि डॉ. गरिमा नरूला ने खेलों को व्यक्तित्व विकास का माध्यम बताया। अध्यक्षता कुलसचिव श्री कैलाश चन्द्र शर्मा ने की तथा खिलाड़ियों को सम्मानित किया गया।

विश्वविद्यालय मे बनेगा स्वदेशी कंसोर्टियम: प्रारंभ होंगे रोजगारोन्मुखी एवं उद्यमिता आधारित पाठ्यक्रम

महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय देश में आत्मनिर्भर भारत और स्वदेशी उद्यमिता को नई दिशा देने हेतु एक महत्वपूर्ण पहल करने जा रहा है। विश्वविद्यालय द्वारा "स्वदेशी कंसोर्टियम" की स्थापना के अंतर्गत कृषि व्यवसाय, खाद्य प्रसंस्करण, ग्रामीण उद्योग, एमएसएमई विकास तथा उद्यमिता से जुड़े अनेक व्यावसायिक एवं कौशल आधारित पाठ्यक्रम वर्तमान शैक्षणिक सत्र से प्रारम्भ करने की तैयारी की जा रही है। कुलगुरु प्रो सुरेश कुमार अग्रवाल का मानना है कि विश्वविद्यालय का उद्देश्य केवल डिग्री प्रदान करना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों को उद्योगों की आवश्यकताओं के अनुरूप प्रशिक्षित कर उन्हें स्वरोजगार, स्टार्टअप एवं रोजगार के अवसरों से जोड़ना है। यह पहल राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की भावना के अनुरूप कौशल, नवाचार एवं रोजगार आधारित शिक्षा को बढ़ावा देगी।

इस स्वदेशी कंसोर्टियम के अंतर्गत विद्यार्थियों को व्यावहारिक प्रशिक्षण, इंडस्ट्रियल एक्सपोजर, इंटर्नशिप, स्टार्टअप इन्क्यूबेशन तथा उद्योग विशेषज्ञों का मार्गदर्शन उपलब्ध कराया जाएगा। विश्वविद्यालय का लक्ष्य ग्रामीण एवं कृषि आधारित उद्योगों को आधुनिक तकनीक से जोड़ते हुए युवाओं को आत्मनिर्भर बनाना है।

प्रस्तावित पाठ्यक्रमों में ग्रेन मिलर, राइस प्रोसेसिंग टेक्नीशियन, पल्स प्रोसेसिंग टेक्नीशियन, फोर्टिफाइड राइस टेक्नीशियन, मिलेट प्रोडक्ट्स प्रोसेसर, फूड फोर्टिफिकेशन एसोसिएट, ऑयल एक्सट्रैक्शन एवं रिफाइनिंग टेक्नीशियन, स्पाइस प्रोसेसिंग, पारंपरिक नमकीन एवं मिठाई निर्माण, हनी प्रोसेसिंग, फूड पैकेजिंग एवं लेबलिंग, डिजिटल मार्केटिंग फॉर एग्री एंड फूड ब्रांड्स, एग्रीबिजनेस एंटरप्रेन्योरशिप एवं MSME सेटअप, फूड सेफ्टी एवं क्वालिटी एश्योरेंस तथा FPO एवं ग्रामीण उद्यम प्रबंधन जैसे रोजगारोन्मुखी कार्यक्रम शामिल हैं।

इन पाठ्यक्रमों की अवधि 15 दिन, १ माह तथा ३ माह तक निर्धारित की गई है, ताकि विद्यार्थी अपनी आवश्यकता एवं समयानुसार प्रशिक्षण प्राप्त कर सकें। इस प्रकार के अल्पकालिक एवं कौशल आधारित कार्यक्रम युवाओं को शीघ्र रोजगार एवं स्वरोजगार से जोड़ने में अत्यंत प्रभावी सिद्ध होंगे। यह स्वदेशी कंसोर्टियम विश्वविद्यालय एवं उद्योग जगत के मध्य एक मजबूत सेतु का कार्य करेगा। इससे विद्यार्थियों को केवल सैद्धांतिक ज्ञान ही नहीं, बल्कि वास्तविक औद्योगिक अनुभव भी प्राप्त होगा। साथ ही, ग्रामीण अर्थव्यवस्था, कृषि आधारित उद्योगों तथा सूक्ष्म एवं लघु उद्यमों को भी नई ऊर्जा मिलेगी।

कुलगुरु प्रो अग्रवाल ने कहा कि इस हेतु एक प्रोफेसर आफ प्रेक्टिस की नियुक्ति किया जाना भी प्रस्तावित है। कंसोर्टियम के स्वदेशी उत्पाद को मार्केटिंग भी किया जाएगा, इस हेतु भी योजना बना ली गई है। कुलगुरू ने विश्वास व्यक्त किया कि यह पहल आने वाले समय में राजस्थान ही नहीं, बल्कि पूरे देश में कौशल विकास एवं स्वदेशी उद्यमिता का एक मॉडल बनेगी। इस अभियान के माध्यम से युवाओं को "सीखो और कमाओ" की अवधारणा से जोड़ते हुए उन्हें आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में सक्रिय भागीदार बनाया जाएगा।

सामाजिक सुरक्षा की दिशा में ऐतिहासिक पहल: विश्वविद्यालय ने पेंशन फंड में जोड़े 50 करोड़ रुपये

विश्वविद्यालय ने अपने सेवानिवृत्त शिक्षकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों की आर्थिक सुरक्षा और सम्मानजनक भविष्य सुनिश्चित करने की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम उठाया है। कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल के नेतृत्व में विगत 7 मार्च को आयोजित प्रबंध बोर्ड की बैठक में विश्वविद्यालय के पेंशन फंड में 50 करोड़ रुपये के अतिरिक्त प्रावधान को स्वीकृति प्रदान की गई। यह निर्णय विश्वविद्यालय परिवार के सभी कार्मिकों के लिए सामाजिक सुरक्षा को सुदृढ़ करने की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। जिन शिक्षकों और कर्मचारियों ने अपने जीवन का अमूल्य समय संस्थान के विकास में समर्पित किया है, उनके सेवानिवृत्ति उपरांत आर्थिक संरक्षण एवं सम्मान की जिम्मेदारी भी विश्वविद्यालय की प्राथमिकता है। कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने कहा कि विश्वविद्यालय केवल शैक्षणिक उत्कृष्टता तक सीमित नहीं है, बल्कि अपने मानव संसाधनों के कल्याण और सुरक्षा के प्रति भी समान रूप से प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि यह निर्णय विश्वविद्यालय में संवेदनशील प्रशासन, उत्तरदायी नेतृत्व और मानवीय मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता का प्रतीक है।

कुलगुरु द्वारा औचक निरीक्षण

विश्वविद्यालय में कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने समय समय पर परीक्षा, लेखा, सामान्य प्रशासन, खेल बोर्ड, विधि, संस्थापन एवं अन्य अनुभागों के औचक निरीक्षण किए। उन्होंने कार्यप्रगति, अभिलेख, शिकायतों व काउंटर सेवाओं की समीक्षा की तथा विद्यार्थियों से संवाद कर समस्याओं के त्वरित समाधान के निर्देश दिए। उन्होंने छात्र-केंद्रित, पारदर्शी व समयबद्ध सेवाओं पर जोर दिया।

24 अप्रैल को विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत आयोजित सेमेस्टर प्रथम, द्वितीय एवं पंचम परीक्षाओं के सुचारु संचालन हेतु कुलगुरु ने परीक्षा व्यवस्थाओं का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने प्रश्न पत्र एवं उत्तर पुस्तिका सेलर का जायजा लेते हुए मूल्यांकन प्रक्रिया, सुरक्षा व्यवस्था और समय प्रबंधन पर विस्तृत चर्चा की। उन्होंने स्पष्ट निर्देश दिए कि परीक्षा की शुचिता, गोपनीयता और पारदर्शिता सर्वोपरि रखी जाए। कुलगुरु ने उत्तर पुस्तिकाओं के त्वरित मूल्यांकन पर विशेष जोर देते हुए समयबद्ध परिणाम जारी करने के निर्देश दिए, ताकि विद्यार्थियों का शैक्षणिक भविष्य प्रभावित न हो। उन्होंने सभी प्रक्रियाओं को निर्धारित समयसीमा में पूर्ण करने और आगामी परीक्षाओं के सुचारु संचालन पर भी बल दिया। इस अवसर पर परीक्षा नियंत्रक डॉ. सुनील कुमार टेलर ने वर्तमान प्रगति की जानकारी देते हुए बताया कि विश्वविद्यालय परीक्षा प्रणाली को अधिक प्रभावी एवं पारदर्शी बनाने की दिशा में निरंतर प्रयासरत है।

विश्वविद्यालय ने शैक्षणिक क्षेत्र में ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल करते हुए **मार्च माह में ही अपना पहला वार्षिक परीक्षा परिणाम घोषित किया।** कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल द्वारा जारी यह परिणाम बीकॉम ऑनर्स पार्ट-III का है, जिसमें शत-प्रतिशत सफलता दर्ज हुई। कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने इस उपलब्धि को समयबद्ध योजना, कुशल कार्यप्रणाली और टीमवर्क का परिणाम बताते हुए परीक्षा नियंत्रक डॉ. सुनील कुमार टेलर एवं उनकी टीम की सराहना की। उन्होंने कहा कि यह विश्वविद्यालय की दक्षता और प्रतिबद्धता का प्रमाण है। यह उपलब्धि विश्वविद्यालय को राज्य में अग्रणी संस्थानों में स्थापित करती है तथा विद्यार्थियों को आगे की पढ़ाई और करियर योजना में सहूलियत प्रदान करेगी। विश्वविद्यालय ने भविष्य में भी इसी प्रकार की समयबद्धता और नवाचार बनाए रखने का संकल्प व्यक्त किया है।

IQAC बैठक आयोजित

विश्वविद्यालय में आयोजित IQAC बैठक में कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल की अध्यक्षता में NAAC A++ लक्ष्य को केंद्र में रखते हुए व्यापक कार्ययोजना तैयार की गई। कुलगुरु ने स्पष्ट किया कि विश्वविद्यालय को पारंपरिक ढांचे से आगे बढ़ाकर गुणवत्ता, नवाचार और वैश्विक प्रतिस्पर्धा के अनुरूप विकसित किया जाएगा। इस दौरान श्री सुभाष अग्रवाल, प्रो. सुब्रतो दत्ता एवं प्रो. आशीष भटनागर के साथ किशनगढ़ मार्बल स्लरी के प्रभावी उपयोग हेतु पर्यावरण एवं सूक्ष्म विज्ञान विभाग द्वारा शोध पहल पर चर्चा हुई। बैठक में IQAC को गुणवत्ता प्रणाली का केंद्रीय अंग बनाते हुए शिक्षण, शोध और विस्तार गतिविधियों में समन्वित सुधार पर जोर दिया गया। NEP 2020 के तहत सेमेस्टर प्रणाली, मेजर-माइनर संरचना, लचीले व कौशल आधारित पाठ्यक्रम, SWAYAM प्लेटफॉर्म के समावेशन तथा क्रेडिट ट्रांसफर जैसी व्यवस्थाओं को लागू करने का निर्णय लिया गया। शोध क्षेत्र में गुणवत्ता सुधार, उच्च स्तरीय प्रकाशन, पेटेंट संस्कृति और फंडेड प्रोजेक्ट्स बढ़ाने पर बल दिया गया, ताकि शोध समाज और नीति निर्माण से भी जुड़ सके। "गो ग्रीन" पहल के अंतर्गत सौर ऊर्जा, वर्षा जल संचयन, कचरा प्रबंधन और जैव विविधता संरक्षण को बढ़ावा देने का निर्णय हुआ। शिक्षण में AI, केस स्टडी और समस्या समाधान आधारित पद्धति अपनाने, LMS लागू करने, प्लेसमेंट

बजट प्रतिक्रिया

केंद्रीय बजट ने बायोफार्मा, विनिर्माण और उद्यमिता क्षेत्रों को नई दिशा प्रदान करते हुए भारत को अनुसंधान–आधारित उत्पादक राष्ट्र बनाने की स्पष्ट दृष्टि प्रस्तुत की है। कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल के अनुसार, यह बजट केवल वित्तीय प्रावधान नहीं बल्कि विज्ञान, उद्योग और युवा शक्ति को जोड़ने वाला राष्ट्रीय संकल्प है। बायोफार्मा क्षेत्र में अनुसंधान, जैव-प्रौद्योगिकी स्टार्टअप्स और स्वदेशी दवा निर्माण को प्रोत्साहन देकर स्वास्थ्य सुरक्षा और आत्मनिर्भरता को सुदृढ़ किया गया है। वहीं विनिर्माण क्षेत्र में तकनीकी विकास, उत्पादन वृद्धि और रोजगार सृजन के लिए किए गए प्रावधान आर्थिक मजबूती को बढ़ाएंगे। कॉरपोरेट–अकादमिक सहयोग से शिक्षा अधिक व्यावहारिक होगी, जिससे विद्यार्थियों को वास्तविक औद्योगिक अनुभव प्राप्त होगा। कुलगुरु प्रो. अग्रवाल ने कहा कि विश्वविद्यालय उद्योगों के साथ साझेदारी कर नवाचार, शोध और कौशल विकास को बढ़ावा देगा। यह बजट भारत को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी और आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

परीक्षाओं का समय पर आयोजन

महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर में सत्र 2025–26 की स्नातक एवं स्नातकोत्तर (वार्षिक) परीक्षाओं के सफल एवं सुव्यवस्थित आयोजन हेतु महत्वपूर्ण तैयारियाँ की गई हैं। ये परीक्षाएँ 11 फरवरी 2026 से प्रारम्भ होंगी। इसी क्रम में 9 फरवरी 2026 को कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने गणेश पूजन एवं पूजा-अर्चना के पश्चात विश्वविद्यालय से विभिन्न परीक्षा केन्द्रों तक प्रश्न-पत्र एवं परीक्षा सामग्री ले जाने वाले वाहनों को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। ये वाहन नागौर, टोंक, भीलवाड़ा, ब्यावर, कुचामन-डीडवाना एवं अजमेर के परीक्षा केन्द्रों के लिए भेजे गए।

इस अवसर पर कुलसचिव कैलाश चन्द्र शर्मा, परीक्षा नियंत्रक डॉ. सुनील टेलर, वित्त नियंत्रक नेहा शर्मा तथा सहायक कुलसचिव (गोपनीय) तपेश्वर कुमार सहित अन्य अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे। विश्वविद्यालय प्रशासन ने सभी संबंधित अधिकारियों व कर्मचारियों से परीक्षाओं के शांतिपूर्ण, पारदर्शी एवं सफल संचालन हेतु पूर्ण सहयोग देने का आह्वान किया।

खेजड़ी संरक्षण में अग्रणी

जहां एक ओर खेजड़ी के पेड़ों की कटाई चिंता का विषय बनी हुई है, वहीं महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय के पर्यावरण विज्ञान विभाग ने इनके संरक्षण की दिशा में पहल करते हुए परिसर में 100 खेजड़ी के पौधे लगाए हैं। इन पौधों को मियावाकी तकनीक के माध्यम से विकसित किया जा रहा है, जिससे घना वन तैयार हो सके। पर्यावरण विभागाध्यक्ष प्रो. प्रवीण माथुर ने बताया कि इस पद्धति में पौधों की नियमित देखभाल और सुरक्षा सुनिश्चित की जाती है। खेजड़ी को 1983 में राज्य वृक्ष घोषित किया गया था, यह 15 से अधिक जिलों में पाया जाता है, लगभग 50 वर्ष तक जीवित रहता है तथा 45 प्रतिशत से अधिक ऑक्सीजन उत्सर्जित करता है। खेजड़ी के संरक्षण के लिए इसके कटान पर 100 रुपए जुर्माने का प्रावधान है। यह पहल पर्यावरण संरक्षण और हरित परिसर के निर्माण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

राजस्थान का पहला संगीत शोध केंद्र एवं वाद्य संग्रहालय

ब्यावर के सनातन धर्म राजकीय महाविद्यालय में राजस्थान का पहला संगीत शोध केंद्र एवं वाद्य संग्रहालय भव्य समारोह में उद्घाटित हुआ। यह केंद्र भारतीय संगीत की परंपरा के संरक्षण, संवर्धन और उच्च स्तरीय शोध को समर्पित एक ऐतिहासिक पहल है। मुख्य अतिथि प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल (कुलगुरु, महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर) ने कहा कि शिक्षा केवल पुस्तकीय ज्ञान नहीं, बल्कि अनुभव और परंपरा से पूर्ण होती है। विशिष्ट अतिथि सीए रमेश चंद्र गोयल एवं श्याम सुंदर कामदार उपस्थित रहे, जबकि अध्यक्षता प्रो. रेखा मंडोवर ने की। संगीत विभागाध्यक्ष डॉ. दुष्यंत त्रिपाठी ने बताया कि केंद्र में साउंड मिक्सिंग, राग अध्ययन और प्लेजरिज्म जांच जैसी सुविधाएं उपलब्ध हैं तथा संग्रहालय में दुर्लभ वाद्य प्रदर्शित हैं। कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने वैदिक शांति पाठ, मेधा सूक्त, वन पाठ एवं लोक संगीत की आकर्षक प्रस्तुतियां दीं।

फेयर, स्टार्टअप समर्थन और एलुमिनाई नेटवर्क सुदृढ़ करने पर भी सहमति बनी। साथ ही दस्तावेजीकरण, पारदर्शिता और डिजिटल प्रबंधन को मजबूत करने के निर्देश दिए गए। निदेशक प्रो. ऋतु माथुर ने इसे विश्वविद्यालय के लिए परिवर्तनकारी पहल बताया। बैठक में प्रो. शिव प्रसाद, प्रो. सुब्रतो दत्ता, प्रो. सुभाष चन्द्र, डॉ. आशीष पारीक, प्रो. ऋतु माथुर, कैलाश चन्द्र शर्मा, डॉ. सुनील कुमार टेलर, श्री रौनक चौधरी, डॉ. अनुप आत्रेय, श्री हर्ष राय, श्री सुभाष अग्रवाल उपस्थित रहे। विशेष आमंत्रित प्रो. अरविंद पारीक, प्रो. आशीष भटनागर, प्रो. मोनिका भटनागर भी शामिल हुए।

विश्वविद्यालय ने अपने गोदित ग्राम नेडलिया एवं होकरा में नशा मुक्ति जागरूकता कार्यक्रम आयोजित कर ग्रामीणों, विशेषकर युवाओं को नशे के दुष्परिणामों के प्रति जागरूक किया। कार्यक्रम का नेतृत्व नोडल अधिकारी एवं अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. सुभाष चंद्र ने किया, जिनके साथ पंकज यादव, विकास, धर्मेंद्र कुमार सहित शोधार्थी व विद्यार्थी उपस्थित रहे। प्रो. सुभाष चंद्र ने बताया कि नशा व्यक्ति के स्वास्थ्य, परिवार और समाज पर नकारात्मक प्रभाव डालता है तथा युवाओं को इससे दूर रहना चाहिए। उन्होंने तंबाकू, शराब आदि के दुष्प्रभावों और उनसे बचाव के उपायों की जानकारी दी। ग्रामीणों ने सक्रिय भागीदारी निभाते हुए नशा मुक्त समाज बनाने का संकल्प लिया। विश्वविद्यालय ने ऐसे कार्यक्रम आगे भी जारी रखने की प्रतिबद्धता व्यक्त की।

विश्वविद्यालय ने विश्व स्वास्थ्य दिवस पर ग्राम घूघरा में 'धन्वंतरि आरोग्य केंद्र' के माध्यम से निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर आयोजित किया। कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने कहा कि स्वस्थ समाज ही सशक्त राष्ट्र की नींव है तथा शिक्षा का उद्देश्य समाज सेवा से जुड़ा होना चाहिए। शिविर में डॉ. नितिन शर्मा एवं उनकी टीम ने लगभग 140 ग्रामीणों का स्वास्थ्य परीक्षण कर परामर्श दिया। बीपी, शुगर एवं हीमोग्लोबिन जांच के साथ निःशुल्क दवाइयों का वितरण किया गया। स्वच्छता जागरूकता के तहत सेनेटरी पैड्स, साबुन एवं ग्लूकोज किट भी वितरित किए गए।

प्रगतिशील एवं परिणामोन्मुख प्रवेश नीति को सर्वोच्च प्राथमिकता

विश्वविद्यालय में आयोजित उच्चस्तरीय बैठक में कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने आगामी सत्र के लिए प्रगतिशील एवं परिणामोन्मुख प्रवेश नीति को सर्वोच्च प्राथमिकता बताया। उन्होंने निर्देश दिए कि पारंपरिक तरीकों के साथ-साथ सोशल मीडिया, व्यक्तिगत संवाद और संस्थागत प्रचार के समन्वित उपयोग से विश्वविद्यालय को विद्यार्थियों की पहली पसंद बनाया जाए। कुलगुरु ने संकाय सदस्यों को महाविद्यालयों में जाकर विद्यार्थियों से सीधे संवाद स्थापित करने तथा विश्वविद्यालय की शैक्षणिक गुणवत्ता, शोध अवसरों और आधुनिक सुविधाओं का व्यापक प्रचार करने के निर्देश दिए। प्रत्येक विभाग को अपनी सीटें पूर्ण भरने हेतु नेटवर्किंग और व्यक्तिगत संपर्क बढ़ाने पर जोर दिया गया। उन्होंने प्रयोगशालाओं, पुस्तकालय, छात्रावास एवं खेल सुविधाओं के अधिकतम प्रक्षेपण पर भी बल दिया। साथ ही यह अभियान माननीय कुलाधिपति एवं राज्यपाल महोदय के मार्गदर्शन में "मिशन मोड" में संचालित करने का आह्वान किया।

'धरोहर संरक्षण दिवस' पर 'स्वच्छ परिसर शुचिता अभियान' का शुभारंभ

महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर में 'धरोहर संरक्षण दिवस' पर 'स्वच्छ परिसर शुचिता अभियान' का शुभारंभ कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने हरी झंडी दिखाकर किया तथा स्वयं श्रमदान कर स्वच्छता का संदेश दिया। उन्होंने कहा कि स्वच्छता ही धरोहर संरक्षण का आधार है और विश्वविद्यालय एक अमूल्य धरोहर है, जिसकी देखभाल सभी की जिम्मेदारी है। अभियान उद्यान विभाग व स्वच्छताकर्मियों के सहयोग से संचालित हुआ, जिसमें शिक्षक, अधिकारियों व कर्मचारियों ने सक्रिय भागीदारी निभाई। कुलसचिव कैलाश चंद्र शर्मा ने बताया कि यह अभियान वर्षभर नियमित रूप से चलेगा। कार्यक्रम में

कुल सचिव कैलाश चंद्र शर्मा, वित्त नियंत्रक सुश्री नेहा शर्मा, डॉ. सुनील टेलर, प्रो. अरविंद पारीक, प्रो. सुब्रतो दत्ता, प्रो. ऋतु माथुर, प्रो. सुभाष चंद्र, प्रो. प्रवीण माथुर, प्रो. शिवप्रसाद, डॉ. लारा शर्मा, डॉ. असीम जयंती, डॉ. सूरज राव, डॉ. तपेश्वर कुमार, डॉ. राजू शर्मा, राजेंद्र तिवारी, सीताराम सहित अनेक सदस्य उपस्थित रहे।

"उच्च शिक्षा के तीन प्रमुख स्तंभ — शिक्षण, अनुसंधान और विस्तार — में एनएसएस की गतिविधियाँ विस्तार कार्य का महत्वपूर्ण आधार हैं।" – कुलगुरु प्रो० सुरेश कुमार अग्रवाल

छात्राओं, वार्डन एवं अधिकारियों के साथ संवादात्मक बैठक

विश्वविद्यालय में छात्रावास व्यवस्थाओं को अधिक सुरक्षित एवं छात्र-हितैषी बनाने हेतु कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने छात्राओं, वार्डन एवं अधिकारियों के साथ संवादात्मक बैठक की। उन्होंने स्पष्ट किया कि छात्राओं की सुरक्षा और सम्मान सर्वोच्च प्राथमिकता है तथा हर समस्या का समयबद्ध समाधान सुनिश्चित किया जाएगा। बैठक में सुरक्षा व्यवस्था सुदृढ़ करने, गार्ड तैनाती, महिला सुरक्षा कर्मियों, CCTV निगरानी एवं आत्मरक्षा जागरूकता पर निर्णय लिए गए। स्वच्छता हेतु जल स्रोतों, परिसर एवं सीवरेज व्यवस्था के नियमित रख-रखाव के निर्देश दिए गए। बंदरों की समस्या के समाधान के लिए वैज्ञानिक उपायों पर भी सहमति बनी। मेस व्यवस्था में पारदर्शिता हेतु "मेस मॉनिटर" प्रणाली लागू करने तथा बेहतर इंटरनेट सुविधा के लिए फाइबर कनेक्टिविटी बढ़ाने का निर्णय लिया गया।

"हाउस सिस्टम" के माध्यम से सांस्कृतिक व खेल गतिविधियों को बढ़ावा देने पर भी जोर दिया गया। बैठक में कुल सचिव कैलाश चन्द्र शर्मा, वित्त नियंत्रक नेहा शर्मा, एवम् प्रो. सुभाष चन्द्र, प्रो. अरविंद पारीक, प्रो. मोनिका भटनागर, प्रो. ऋतु माथुर, प्रदीप प्रजापति, डॉ. सूरज मल राव सहित अधिकारी उपस्थित रहे।

आदि शंकराचार्य एवं संत सूरदास जयंती

विश्वविद्यालय में वैशाख शुक्ल पंचमी पर आदि शंकराचार्य एवं संत सूरदास जयंती के अवसर पर कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने कहा कि अद्वैत दर्शन और भक्ति परंपरा राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ करती हैं। उन्होंने बताया कि आदि शंकराचार्य का अद्वैत वेदांत "ब्रह्म सत्यं, जगत मिथ्या" जीवन को दिशा देने वाला सिद्धांत है, जिसने भारत को सांस्कृतिक रूप से जोड़ा। वहीं संत सूरदास ने 'सूरसागर' के माध्यम से भक्ति, प्रेम और संवेदनशीलता को जन-जन तक पहुँचाया। कुलगुरु ने कहा कि आज के समय में इन दोनों परंपराओं के मूल्य समाज में नैतिकता, सांस्कृतिक समरसता और आध्यात्मिक जागरूकता को मजबूत करने में अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

एनिमल हाउस का निरीक्षण

विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने प्राणी विज्ञान विभाग द्वारा स्थापित एनिमल हाउस का निरीक्षण किया। इस अवसर पर विभागाध्यक्ष प्रो. सुभाष चंद्र सहित शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे। निरीक्षण के दौरान कुलगुरु को प्राकृतिक खाद (ऑर्गेनिक मैन्योर) निर्माण प्रक्रिया एवं वर्मी कम्पोस्ट बेड का अवलोकन कराया गया। प्रो. सुभाष चंद्र ने बताया कि जैविक अपशिष्ट से तैयार खाद पर्यावरण अनुकूल है और भूमि की उर्वरता बढ़ाती है। कुलगुरु ने वर्मी कम्पोस्टिंग को सतत कृषि की दिशा में महत्वपूर्ण बताते हुए पर्यावरण संरक्षण को अनिवार्य जिम्मेदारी बताया। उन्होंने विद्यार्थियों को इन तकनीकों को समाज तक पहुँचाने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने विभाग के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि ऐसे नवाचार विद्यार्थियों को व्यवहारिक ज्ञान के साथ प्रकृति के प्रति संवेदनशील बनाते हैं।

सामाजिक सहभागिता का उत्कृष्ट उदाहरण

आर.के. मार्बल के श्री अशोक पाटनी की प्रेरणा एवं श्री सुभाष अग्रवाल द्वारा पांच हाई मास्ट लाइट्स स्थापित - विश्वविद्यालय परिसर में सामाजिक सहभागिता का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करते हुए पांच हाई मास्ट लाइट्स स्थापित की गई। यह पहल श्री रतनलाल कँवरलाल पत्नी गर्ल्स कॉलेज, मदनगंज किशनगढ़, अजमेर द्वारा, आर.के. मार्बल के श्री अशोक पाटनी की प्रेरणा एवं श्री सुभाष अग्रवाल के विशेष प्रयासों से साकार हुई। इन लाइट्स के स्थापित होने से परिसर में रात्रिकालीन अंधकार दूर हुआ, जिससे सुरक्षा, सुविधा और सौंदर्य में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने इस जनोपयोगी योगदान के लिए सभी सहयोगकर्ताओं का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह पहल छात्र हित और जनहित के प्रति सामूहिक जिम्मेदारी का प्रेरक उदाहरण है। उन्होंने कहा कि समाज, उद्योग और शैक्षणिक संस्थानों के संयुक्त प्रयास से ही सुरक्षित एवं सशक्त शैक्षणिक वातावरण का निर्माण संभव है तथा भविष्य में भी ऐसे सहयोग की अपेक्षा की जाती है।

कर्मचारी की कुशलक्षेम जानने कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल अस्पताल पहुंचे

विश्वविद्यालय के हरबेरियम असिस्टेंट श्री गोपाराम के हृदय संबंधी बीमारी के उपचार हेतु क्षेत्रपाल अस्पताल में भर्ती होने पर कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल स्वयं अस्पताल पहुंचे और उनका हालचाल जाना। कुलगुरु ने चिकित्सकों से उपचार की प्रगति की जानकारी लेते हुए शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की कामना की। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय परिवार अपने कर्मचारियों के साथ हर परिस्थिति में खड़ा है। साथ ही संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए कि उपचार में किसी प्रकार की कमी न रहे और आवश्यक सहयोग सुनिश्चित किया जाए।

भीषण गर्मी में पक्षियों के लिए परिंडे

विश्वविद्यालय में कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल के मार्गदर्शन में पर्यावरण विज्ञान विभाग द्वारा भीषण गर्मी में पक्षियों के लिए परिंडे लगाने की पहल की गई। विभाग परिसर एवं आसपास के क्षेत्रों में विद्यार्थियों और शिक्षकों ने मिलकर पानी के पात्र स्थापित किए। इस अभियान का उद्देश्य पक्षियों को जल उपलब्ध कराना और समाज में पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाना है। विद्यार्थियों ने परिंडों की नियमित सफाई एवं पानी भरने का संकल्प भी लिया। विभागाध्यक्ष प्रो. सुब्रतो दत्ता ने इसे संवेदनशील पहल बताते हुए आमजन से भी अपने घरों के आसपास पक्षियों के लिए पानी की व्यवस्था करने की अपील की। उन्होंने कहा कि ऐसे प्रयास पर्यावरण संतुलन और सह-अस्तित्व की भावना को मजबूत करते हैं।

भर्ती प्रक्रिया को पारदर्शी और निष्पक्ष बनाने हेतु रोस्टर रजिस्टर को किया सार्वजनिक

विश्वविद्यालय ने भर्ती प्रक्रिया को पारदर्शी और निष्पक्ष बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल करते हुए शैक्षणिक एवं गैर-शैक्षणिक पदों के लिए तैयार रोस्टर रजिस्टर को सार्वजनिक कर दिया है। यह रोस्टर विश्वविद्यालय की आधिकारिक वेबसाइट पर अपलोड किया गया है। यह निर्णय कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल के निर्देश पर लिया गया, जिनकी प्राथमिकता पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करना है। इससे पहले प्रबंध बोर्ड की बैठक में मंत्रालयिक कर्मचारियों की भर्ती कर्मचारी चयन बोर्ड के माध्यम से कराने का निर्णय भी लिया जा चुका है। कुलसचिव कैलाश चंद्र शर्मा ने बताया कि रोस्टर रजिस्टर पर यदि किसी अभ्यर्थी या संबंधित पक्ष को आपत्ति हो, तो वह तीन दिनों के भीतर लिखित रूप में प्रस्तुत कर सकता है। प्राप्त आपत्तियों की समीक्षा के बाद संशोधित रोस्टर राज्य सरकार को भेजा जाएगा, जिससे भर्ती प्रक्रिया नियमानुसार शीघ्र प्रारंभ हो सके।

कैंपस सुरक्षा, स्वच्छता और आधारभूत सुविधाओं को सुदृढ़ करने हेतु कार्य योजना

विश्वविद्यालय में कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल की अध्यक्षता में आयोजित प्रशासनिक समीक्षा बैठक में कैंपस सुरक्षा, स्वच्छता और आधारभूत सुविधाओं को सुदृढ़ करने हेतु व्यापक एक्शन प्लान तैयार किया गया। कुलगुरु ने सुरक्षा व्यवस्था पर विशेष जोर देते हुए गार्डों की नियमित ड्यूटी मॉनिटरिंग, अनधिकृत प्रवेश पर नियंत्रण और निगरानी प्रणाली मजबूत करने के निर्देश दिए। स्वच्छता को लेकर बायोमेट्रिक उपस्थिति प्रणाली लागू करने तथा भुगतान को वास्तविक उपस्थिति से जोड़ने का निर्णय लिया गया। गार्गी छात्रावास में सेप्टिक टैंक निर्माण, बंदर समस्या के समाधान, जैव-चिकित्सीय अपशिष्ट प्रबंधन

के लिए नई प्रणाली लागू करने और पार्किंग व्यवस्था को सुव्यवस्थित करने के निर्देश दिए गए। साथ ही 15 दिवसीय स्वच्छता अभियान, बॉटनिकल गार्डन रखरखाव और वर्मी-कम्पोस्ट व्यवस्था सुदृढ़ करने पर बल दिया गया। बैठक में प्रो. ऋतु माथुर, प्रो. अरविंद पारीक, कैलाश चंद्र शर्मा, डॉ. सूरजमल राव, इतिश्री कुमावत, राजेंद्र तिवारी, सीताराम जोशी, धन्नालाल सहित अधिकारी उपस्थित रहे।

अतिथि संकाय सदस्यों की महत्वपूर्ण बैठक आयोजित

विश्वविद्यालय में कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल की अध्यक्षता में अतिथि संकाय सदस्यों की महत्वपूर्ण बैठक आयोजित हुई, जिसमें कुलसचिव कैलाश चंद्र शर्मा एवं वित्त नियंत्रक नेहा शर्मा सहित संकाय सदस्य उपस्थित रहे। कुलगुरु ने "हर शिक्षक बने प्रवेश दूत" का आह्वान करते हुए प्रत्येक शिक्षक को 5–10 नए विद्यार्थियों को जोड़ने तथा प्रत्येक विभाग में न्यूनतम 30 नामांकन सुनिश्चित करने का लक्ष्य दिया। उन्होंने सोशल मीडिया प्रचार, व्यक्तिगत संपर्क और विश्वविद्यालय की सुविधाओं—होस्टल, खेल, छात्रवृत्ति एवं "लर्न अर्न एंड परफॉर्म" योजना—के प्रभावी प्रस्तुतीकरण पर जोर दिया।

शिक्षण गुणवत्ता सुधार हेतु कौशल आधारित शिक्षा, NET/SET तैयारी, मूट कोर्ट एवं प्रायोगिक गतिविधियों को बढ़ाने के निर्देश दिए गए। साथ ही प्रत्येक विभाग में वार्षिक संगोष्ठी, प्लेसमेंट फेयर और एलुमनी नेटवर्क सुदृढ़ करने पर बल दिया गया। कुलगुरु ने समयबद्ध परिणाम, पारदर्शी प्रशासन और शिक्षकों की जवाबदेही पर जोर देते हुए संस्थागत विकास के लिए सामूहिक सहभागिता का आह्वान किया।

Recommendations to the Government

on the Implementation of the National Education Policy 2020 based on

The Faculty Development Workshop

on the Implementation of

NEP-2020 held on 24th March, 2026

by

Maharshi Dayanand Saraswati University, Ajmer

The considered experience of this University, drawn from sustained engagement with the NEP implementation process, that the document's transformative promise has been reduced to a narrow understanding — equating NEP with little more than the introduction of the semester system and the addition of Indian Knowledge Systems that too only superficially. A frank acknowledgement of this gap as derived from the National Workshop conducted on 24th march 2026 by Maharshi Dayanand Saraswati University, Ajmer impels us to place before the Government a set of structured recommendations, born of field experience, academic reflection, and a deep sense of institutional responsibility. It is in this spirit that the following recommendations are submitted.

(I) It is strongly recommended that the Government of Rajasthan formulate a **Common Academic Framework** to govern NEP implementation uniformly across all State Universities and Affiliated Colleges.

(ii) The Government is urged to notify and enforce a **Common Academic Calendar** applicable to all higher educational institutions in the State to ensure effective coordination between government colleges, autonomous HEIs and affiliating Universities. Without this, the flexibility envisioned by NEP 2020 — including provisions for accelerated and extended sessions, inter-institutional credit transfers, and multiple entry and exit options — cannot be operationalised in any meaningful sense.

(iii) To ensure **flexibility in admissions**, the State Government should intervene and permit State Universities to participate in the **Central Universities Entrance Test (CUET)** for purposes of student intake; or

Conduct a dedicated **State-Level Entrance Examination** that is discipline-agnostic and stream-neutral, enabling students to apply across academic domains based on demonstrated aptitude and interests rather than prior stream affiliation.

(iv) NEP 2020 explicitly contemplates the provision of both **Extended Sessions** (for learners requiring additional time) and **Accelerated Sessions** (for those capable of faster progression). A clear governmental policy on the operational modalities of such sessions is urgently required.

(v) It is recommended that the Government formally notify a **phased implementation pathway for the 3+2** (three-year undergraduate followed by two-year postgraduate) degree structure as stated in NCrF. The implementation of II and III phase must ensure its completion by 2030 or earlier

(vi) It is recommended that the Government, in consultation with universities and the UGC, formulate comprehensive SOPs governing the assessment criteria, institutional responsibilities, and safeguards applicable to **RPL (Recognition of Prior Learning)— ensuring that this provision serves** as a gateway to opportunity rather than a conduit for academic malpractices.

(vii) **The horizontal mobility** envisioned by NEP 2020 — the ability of a student to move between subjects, disciplines, or even institutions — remains without a governing framework. This lacuna must be urgently addressed. The Government is requested to intervene by specifying the conditions, credit transfer mechanisms, equivalence determinations, and institutional responsibilities applicable when a student transitions horizontally between programmes or Universities.

(viii) The NEP transformation from content-delivery to competency-development, from examination to assessment, from passive reception to critical and creative engagement —requires a profound and sustained reorientation of the teaching community. It is, therefore, recommended that the Government direct all **Madan Mohan Malviya Teachers Training Centres (MMTTCs) sponsored by UGC in the State to orient their programmes specifically towards NEP implementation**, with a focus on pedagogy, assessment design, multi-disciplinary teaching, and the use of technology.

(ix) The NEP's emphasis on skill enhancement courses, internships, and industry exposure creates a pressing need for a regulated framework governing **industry-academia partnerships**. Without such regulation, there exists a very real danger that certifications of industrial training will become commodified — available for a price to those who seek them without the underlying learning experience. Every University must be mandated to develop robust SOPs for industry engagement, specifying the nature, duration, assessment, and verification of any industrial training that contributes to academic credit. They must be duly approved by the University competent Bodies.

(x) The teaching of multi-disciplinary courses, ability enhancement courses, skill enhancement courses, and value-added courses besides the major and the minor as contemplated by NEP 2020 poses a particular challenge for stand alone HEIs. The formation of **Clusters of Colleges** — geographically proximate institutions that pool their academic and infrastructural resources — presents an elegant and practical solution to this challenge. The Government is urged to formulate a policy for the creation and regulation of such clusters, enabling colleges to serve each other's needs and collectively deliver the diverse programme portfolio that NEP demands.

(xi) The most enduring solution to the fragmented and inconsistent implementation of NEP across the State lies in the enactment of Common Ordinances, applicable to all universities and their affiliated institutions. These ordinances should comprehensively address the full range of NEP provisions, comprising ABC, credit systems, flexibility, NHEQF, NCrF etc.

(xii) It merits clarification that NEP 2020 consistently employs the language of **'assessment'** rather than **'evaluation'** — a deliberate and philosophically significant choice. **Assessment**, in the spirit of NEP, seeks to illuminate a learner's level of attainment and identify the merits that may be further cultivated; it does not seek to reduce a human being's potential to a number. **Evaluation**, where it serves the purpose of exploiting and enhancing a student's inherent merits, is by no means precluded by NEP. Institutional guidelines clarifying this distinction should be issued at both State and University levels, so that academic communities may approach assessment reform with clarity and confidence rather than confusion and resistance.

(xiii) NEP 2020 places a premium on **creativity** and **critical thinking**. It is precisely this emphasis that renders the anxieties surrounding artificial intelligence in the classroom largely misplaced — for where genuine creativity and critical thoughts are fostered, the use of AI becomes an instrument of learning rather than a substitute for it. The Government is encouraged to issue enabling guidelines for the responsible and pedagogically sound integration of AI tools in higher education, consonant with the spirit of NEP 2020, rather than defaulting to prohibition. It goes without saying that a coordinated, well-regulated, and adequately resourced approach by the State Government will be indispensable to the realisation of the promise that NEP 2020 holds for the students and scholars of Rajasthan.

(xiv) The State Government must modify attendance requirement (which is 75% right now) keeping in mind the increasing role and intervention of AI and that the student has been permitted to do ODL, Online or any other programme parallelly.

(xv) The state Government intervention is required to implement the Dual Degree Provisions as envisioned in NEP-2020.

The deliberations emphasized with a caution that if the continuous, conscious and mission driven endeavour falters, the day is nor far ahead when private Universities driven by agility and resources overshadow Public HEIs, thereby depriving students of the equitable, inclusive and holistic educational opportunities envisioned within the policy framework.

The workshop ended with a clarion call for unwavering dedication, collaboration effort and proactive engagement at the level of the Government, State Universities, autonomous Institutions and affiliating HEIs.

It is also worth mentioning here that the Maharshi Dayanand Saraswati University, Ajmer has framed ordinances and is all set to implement the NEP 2020 from the forthcoming session in the Programmes that are being conducted on the campus. After a green signal from the State Government, it shall be implemented in the affiliated colleges also.

(Prof. Suresh Kumar Agrawal)
Vice Chancellor
Maharshi Dayanand Saraswati University
Ajmer, Rajasthan

कुलगुरु महोदय राजस्थान विश्वविद्यालय
जयपुर के दीक्षांत समारोह मे

कुलगुरु महोदय माननीय राज्यपाल एवं कुलाधिपति
श्रद्धेय श्री हरि भाऊ बागडे जी को विश्वविद्यालय
में हुए नवाचारों की जानकारी देते हुए

माननीय कुलगुरु प्रख्यात स्वदेशी चिंतक एवं विचारक
प्रो भगवती प्रकाश शर्मा का स्वागत करते हुए

अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन अजमेर मे माननीय
कुलगुरु जी का सम्मान

भारत विकास परिषद राजस्थान प्रांत के द्वारा संचालित
प्रकल्पों का निरीक्षण करते माननीय कुलगुरु महोदय

अजमेर दक्षिण माननीय विधायक श्रीमती अनीता भदेल
का सम्मान करते कुलगुरु

प्रसिद्द सामाजिक कार्यकर्ता माननीय श्री निम्बा राम जी के साथ विश्वविध्यालय के विकास कर चर्चा करते माननीय कुलगुरु

कुलगुरु से शिष्टाचार भेंट को पधारे पूर्व विधायक डॉ श्रीगोपाल बाहेती

विश्वविद्यालय मे कार्मिक के सेवानिवृति दिनांक ३० अप्रैल के अवसर पर कुलगुरु महोदय

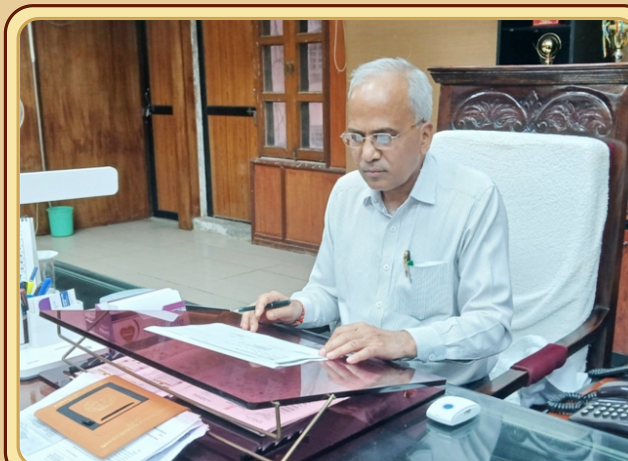

पहला परीक्षा परिणाम जारी करते कुलगुरु महोदय

युवा महोत्सव हेतु वाहन को हरी झंडी दिखाकर रवाना करते कुलगुरु महोदय

विश्वविद्यालय के कर्मचारियों के साथ संवाद करते कुलगुरु महोदय

विश्वविद्यालय मे प्रबंध बोर्ड के नवनियुक्त सदस्य के रूप मे माननीय विधायक डॉ लाला राम बैरवा का स्वागत करते कुलगुरु महोदय

विश्वविद्यालय के शिक्षक एवं अधिकारियों से साफ़ सफाई एवं अन्य व्यवस्थाओं से चर्चा करते कुलगुरु महोदय

राज्यपाल महोदय के अजमेर आगमन पर संभागीय आयुक्त श्री शक्ति सिंह राठौड़, पुलिस महानिरीक्षक श्री राजेंद्र सिंह एवं पुलिस अधीक्षक डॉ वन्दिता राणा के साथ कुलगुरु महोदय

माननीय उप मुख्यमंत्री डॉ प्रेमचंद बैरवा के साथ कुलगुरु महोदय की अनौपचारिक वार्ता

प्रबंध बोर्ड की बैठक के पूर्व प्रो दिग्विजय सिंह एवं प्रो गुलाब सिंह चौहान के साथ विश्वविद्यालय का निरीक्षण करते कुलगुरु महोदय

अजमेर के उपमहापौर श्री नीरज जैन कुलगुरु महोदय का अभिनन्दन करते हुए

प्रो. ओम प्रकाश पाण्डेय एवं डॉ लालाराम बैरवा के साथ अनौपचारिक चर्चा करते कुलगुरु

पर्यावरण विभाग के कार्यक्रम में कुलगुरु महोदय एवं अन्य

माननीय श्री जसवंत जी खत्री का स्वागत करते कुलगुरु महोदय

विश्वविद्यालय में खेलोत्सव जयघोष के उद्घाटन समारोह के अवसर पर संभागीय आयुक्त श्री शक्ति सिंह राठौड़ के साथ कुलगुरु महोदय

विश्वविद्यालय में कब्बडी खेल का आयोजन

विश्वविद्यालय की प्रबंध बोर्ड की बैठक में कुलगुरु एवं सदस्य गण

राजकीय अभियांत्रिकी महाविद्यालय अजमेर में युवा महोत्सव के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में कुलगुरु महोदय

बढ़ता प्रादेशिक | झालावाड़ / अंता / बारां / रावतभाटा / चित्तौड़गढ़ / निम्बाहेड़ा / कपासन / बूंदी / ब्यावर / केकड़ी / भीलवाड़ा | जयपुर। शनिवार 14 फरवरी 2026 | www.badhatarajasthan.in | 09

सुरों की धरोहर का नव अध्यायः ब्यावर में राज्य का पहला संगीत शोध केंद्र और वाद्य संग्रहालय उद्घाटित

समग्र शिक्षा, सांस्कृतिक संरक्षण और शोध की दिशा में ऐतिहासिक पहल

बढ़ता राजस्थान

ब्यावर(अनिल सिखवाल)। स. ध. राजकीय महाविद्यालय में शुक्रवार को राजस्थान के उच्च शिक्षा संस्थानों का प्रथम संगीत शोध केंद्र एवं वाद्य संग्रहालय भव्य समारोह के साथ लोकार्पित हुआ। यह केंद्र भारतीय संगीत की समृद्ध परंपरा के संरक्षण, संवर्धन एवं उच्च स्तरीय अनुसंधान को समर्पित एक ऐतिहासिक पहल है, जो राज्य के शैक्षिक परिदृश्य में नई दिशा प्रदान करेगा।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने कहा कि शिक्षा केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं है, बल्कि अनुभव, संवेदना और परंपरा के जीवंत स्पर्श से ही पूर्णता प्राप्त करती है। वाद्य संग्रहालय और संगीत शोध केंद्र इसी समग्र शिक्षा की अवधारणा को साकार करते हैं। उन्होंने कहा कि संग्रहालय विद्यार्थियों को वाद्यों को प्रत्यक्ष देखने, समझने और उनकी ध्वनियों को अनुभव करने का अवसर देगा, जिससे शिक्षण अधिक जीवंत, रोचक और प्रभावी बनेगा अति विशिष्ट अतिथि एवं भामाशाह प्रो. देवकीनंदन डाणी तथा सीए-सीएस ओम प्रकाश डाणी की प्रेरणा और संकल्पना से पूर्व में ब्यावर को राजस्थान का प्रथम संगीत रिकॉर्डिंग स्टूडियो प्राप्त हुआ था। उसी क्रम को आगे बढ़ाते हुए दोनों भ्राताओं ने संगीत शोध केंद्र एवं वाद्य संग्रहालय को साकार रूप प्रदान किया। प्रो. डाणी ने विद्यार्थियों की साधना, संस्कार और सांगीतिक समर्पण की सराहना करते हुए कहा कि यह केंद्र नई पीढ़ी को अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ने का माध्यम बनेगा समारोह में विशिष्ट अतिथि के रूप में समाजसेवी सीए रमेश चंद्र गोयल एवं न्यासी श्याम सुंदर कामदार उपस्थित रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्य प्रो. रेखा मंडोवरा ने की। उन्होंने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि यह केंद्र केवल शैक्षणिक इकाई नहीं, बल्कि संस्कृति, शोध और सृजनात्मकता का सशक्त केंद्र है, जो विद्यार्थियों को समग्र व्यक्तित्व विकास की दिशा में अग्रसर करेगा इस अवसर पर संगीत विभाग के विद्यार्थियों द्वारा वैदिक शांति पाठ, मेधा सूक्त एवं घन पाठ की विशिष्ट सांगीतिक प्रस्तुति दी गई। साथ ही राजस्थान की लोक संगीत शैली में गायन एवं वादन ने वातावरण को सुरमय और भावपूर्ण बना दिया संगीत विभागाध्यक्ष डॉ. दुष्यंत त्रिपाठी ने बताया कि नवस्थापित केंद्र में साउंड मिक्सिंग, विभिन्न रागों का गहन अध्ययन, प्लेगरिज्म जांच जैसी आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध होंगी। वाद्य संग्रहालय में अनेक दुर्लभ वाद्यों का अभूतपूर्व संग्रह विद्यार्थियों और शोधार्थियों के लिए आकर्षण का केंद्र रहेगा।

कार्यक्रम का संचालन हरीश कुमार (आचार्य, हिंदी) एवं डॉ. श्वेता स्वामी ने किया। समारोह में शहर के गणमान्य नागरिक, आमंत्रित अतिथि एवं महाविद्यालय के संकाय सदस्य उपस्थित रहे यह पहल न केवल ब्यावर, बल्कि संपूर्ण राजस्थान के उच्च शिक्षा क्षेत्र में संगीत अध्ययन और शोध के नए आयाम स्थापित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर सिद्ध होगी।

एमडीएसयू में सुरक्षा-सफाई पर फोकस, बायोमेट्रिक हाजिरी से कराएंगे निगरानी

परिसर में 15 दिन का विशेष सफाई अभियान चलेगा

एमडीएसयू में सुरक्षा-सफाई पर फोकस, बायोमेट्रिक हाजिरी से होगी निगरानी

अजमेर | विश्वविद्यालय प्रशासन ने कैंपस में सुरक्षा और स्वच्छता सुधारने के लिए सख्त कदम उठाए हैं। सोमवार को हुई प्रशासनिक बैठक में कुलगुरु ने कहा कि लापरवाही अब बर्दाश्त नहीं होगी, हर व्यवस्था तय समयसीमा में दुरुस्त करनी होगी।

सफाईकर्मियों की कम उपस्थिति पर नाराजगी जताते हुए बायोमेट्रिक हाजिरी अनिवार्य की गई। ठेकेदारों का भुगतान अब वास्तविक उपस्थिति के आधार पर होगा। अनधिकृत प्रवेश रोकने के लिए गार्ड्स का डेली ड्यूटी चार्ट सचिवालय में जमा करना होगा। कैंपस में केवल तय स्थानों पर ही पार्किंग की अनुमति रहेगी। गार्गी छात्रावास में नया सेप्टिक टैंक बनाया जाएगा। बंदरों की समस्या से निपटने के लिए नियमों का पालन कराएंगे। बायो-मेडिकल कचरे के निस्तारण के लिए पहली बार एचडीपीई लाइनिंग वाले गड्ढे और विशेष डस्टबिन उपयोग में लाएंगे। बॉटनिकल गार्डन का कायाकल्प होगा। पूरे परिसर में 15 दिन का सफाई अभियान चलेगा। प्रोफेसर ऋतु माथुर वार्डन, गार्गी छात्रावास, प्रोफेसर अरविंद पारीक मुख्य कुलानुशासक, श्री कैलाश चंद शर्मा कुलसचिव, डॉ. सूरजमल राव सहायक कुलसचिव, सामान्य प्रशासन, इतीश्री कुमावत कनिष्ठ अभियंता, राजेंद्र तिवारी उद्यान पर्यवेक्षक, सीताराम जोशी स्वच्छता सलाहकार तथा धन्नालाल मुख्य सुरक्षा अधिकारी उपस्थित रहे।

R.N.I. No. RAJHIN/2019/77793 | Postal Reg. No. RAJ/AJ/207/2025-2027

मरूधरा टुडे

पाक्षिक

विज्ञापन एवं वार्षिक सदस्यता हेतु कार्यकारी सम्पादक-शहर मो.8107416712

अंतर महाविद्यालय सांस्कृतिक प्रतियोगिता "दिग्नाद" सम्पन्न

संस्कृति, संस्कार और युवा शक्ति-भारत को विश्वगुरु बनाने की त्रिवेणी - प्रो. त्रिभुवन शर्मा

एमडीएस यूनिवर्सिटी द्वारा आयोजित आईसीसीसी का हुआ भव्य समापन

ICCC-2026 "दिग्नाद"

पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के विद्यार्थियों ने निकाला टैब्लॉइड पेपर

"राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020" के अंतर्गत विद्यार्थियों को प्रायोगिक शिक्षा देने का प्रयास

'वेद अध्ययन के साथ शैक्षणिक वातावरण की मूल धारा'

राजस्थान पत्रिका

गेस्ट राइटर

दैनिक नवज्योति | Ajmer City - 12 Feb 2026 - Page 5

महर्षि दयानंद की ऋषि-दृष्टि का आधुनिक मूर्त रूप मदस विश्वविद्यालय

नहीं हो पाई सामूहिक प्रार्थना, अगले सप्ताह से शुरुआत की योजना

विश्वविद्यालय के विभागों में शुरू हुई प्रार्थना, गूंजे वेद मंत्र

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

अजमेर. मदस विश्वविद्यालय परिसर में नई पहल के तहत सोमवार को विभागवार प्रार्थना की शुरुआत हुई। इसमें विद्यार्थी, शिक्षक-कार्मिक शामिल हुए। हालांकि समूचे स्टाफ की सामूहिक प्रार्थना नहीं हो पाई। प्रशासन ने अगले सोमवार से इसकी शुरुआत की योजना बनाई है। विश्वविद्यालय के शैक्षिक विभागों, परीक्षा अनुभाग, प्रशासनिक कार्यालयों, लेखा एवं स्थापना शाखा, पुस्तकालय, औषधालय सहित सभी इकाइयों में प्रतिदिन कक्षाओं की शुरुआत से पूर्व सुबह 10 बजे प्रार्थना सभा का फैसला किया गया है। सोमवार को सुबह 10 बजे कणाद भवन के समक्ष प्रार्थना सभा हुई। इसमें जूलॉजी, बॉटनी और अन्य विभागों के विद्यार्थी, शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी, सुरक्षा कर्मी शामिल हुए। इनका समन्वय एवं संचालन मुख्य कुलानुशासक प्रो. अरविंद पारीक एवं छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो. सुभाष चंद्र ने किया।

ऋषि दयानंद पर होगा पाठ्यक्रम : कुलगुरु प्रो. अग्रवाल ने बताया कि विद्यार्थियों में नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों के विकास और महर्षि दयानंद सरस्वती के दर्शन एवं सिद्धांतों पर आधारित एक क्रेडिट पाठ्यक्रम प्रारंभ किया जाएगा। सभी विद्यार्थियों के लिए अनिवार्य बनाया जाएगा। नई शिक्षा नीति-2020 के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए सभी विभागों की बोर्ड ऑफ स्टडीज बैठक 10 फरवरी से प्रारंभ होंगी।

इनका कहना है...

विभागवार प्रार्थना कराई गई है। सामूहिक प्रार्थना सभा की शुरुआत अगले सोमवार से कराई जाएगी।

कैलाशचंद्र शर्मा,
कुलसचिव मदस विवि

मदस विश्वविद्यालय : संबद्ध महाविद्यालय के साथ समीक्षा बैठक

आवंटित सीटों से अधिक प्रवेश नहीं होंगे स्वीकार

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

अजमेर. विश्वविद्यालय में आयोजित समीक्षा बैठक में कुलगुरु प्रो.अग्रवाल व अन्य।

अजमेर. कॉलेजों में आवंटित सीटों से अधिक प्रवेश किसी भी स्थिति में स्वीकार नहीं किए जाएंगे। नवीन संबद्धता के लिए बैंक गारंटी और एफडीआर समय पर जमा करानी होगी। सोमवार को महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय में संबद्ध महाविद्यालयों के प्राचार्यों एवं उनके प्रतिनिधियों के साथ संबद्धता एवं परीक्षा संबंधी समीक्षा बैठक में यह फैसले लिए गए। अध्यक्षता कुलगुरु प्रो सुरेश अग्रवाल ने की। कुलसचिव, वित्त नियंत्रक, परीक्षा नियंत्रक सहित सभी संबद्ध महाविद्यालयों के प्राचार्य एवं प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

कुलगुरु प्रो अग्रवाल ने विश्वविद्यालय की गुणवत्ता और प्रतिष्ठा को बनाए रखने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने स्पष्ट किया कि किसी भी प्रकार के अवांछित या असामाजिक हस्तक्षेप को रोकने के लिए विश्वविद्यालय पूर्णतः प्रतिबद्ध है। नियमों के उल्लंघन की स्थिति में आवश्यक कार्रवाई की जाएगी। महाविद्यालयों की वास्तविक समस्याओं के समाधान के लिए विश्वविद्यालय सदैव सहयोगात्मक दृष्टिकोण अपनाएगा।

बैठक में परीक्षा नियंत्रक डॉ सुनील टेलर ने संबद्धता, परीक्षा संचालन और प्रशासनिक प्रक्रियाओं से जुड़े अनेक महत्वपूर्ण निर्देश प्रदान किए। महाविद्यालयों को संबद्धता शुल्क निर्धारित तिथि तक जमा कराने, राज्य सरकार की अनापत्ति प्रमाण पत्र प्राप्त करने, नवीन संबद्धता के लिए बैंक गारंटी और एफडीआर समय पर जमा कराने के निर्देश दिए। सत्र 2017-18 से 2022-23 तक की बकाया जीएसटी राशि शीघ्र जमा कराने को कहा गया।

शिक्षकों की नियुक्ति विश्वविद्यालय के नियम 175 के अनुसार करने तथा नियुक्ति प्रक्रिया में विश्वविद्यालय प्रतिनिधि की उपस्थिति अनिवार्य रखने के निर्देश दिए गए। साथ ही प्रत्येक महाविद्यालय में नैक मान्यता प्रक्रिया को आगे बढ़ाने, आइक्यूएसी प्रकोष्ठ स्थापित करने तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए सेल गठित करने के निर्देश दिए गए। परीक्षा संबंधी निर्देशों में प्रश्नपत्रों की गोपनीयता बनाए रखने, उत्तर पुस्तिकाओं की समयबद्ध पैकिंग और प्रेषण, आंतरिक मूल्यांकन अंक समय पर भेजने, उड़नदस्ता दल को पूर्ण सहयोग प्रदान करने पर विशेष जोर दिया।

कुलसचिव कैलाश चन्द्र शर्मा ने कहा कि विश्वविद्यालय और महाविद्यालयों के बीच गरिमापूर्ण व्यवहार, समय पर सूचना प्रेषण और परीक्षा की शुचिता बनाए रखने में पूर्ण सहयोग जरूरी है। वित्त नियंत्रक ने बकाया जीएसटी राशि शीघ्र जमा कराने का आग्रह किया।

एमडीएसयू प्राणीशास्त्र विभाग का गौरव सम्मान समारोह

मेधावी विद्यार्थियों को 'आचार्य सुश्रुत' व 'ऋषि शालिहोत्र' सम्मान

मदस विवि में पुण्यतिथि पर हुई संगोष्ठी

पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने समाज को दी वैचारिक दिशा

कासं/अजमेर। पंडित दीनदयाल उपाध्याय की 58वीं पुण्यतिथि पर महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय की सिंधु शोध पीठ द्वारा बुधवार को एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी के मुख्य वक्ता हनुमान सिंह राठौर थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने की। हनुमान सिंह राठौड़ ने कहा कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय का जन्म 1916 में हुआ। वह प्रतिभाशाली छात्र रहे और अजमेर बोर्ड में प्रथम स्थान प्राप्त किया। आगे चलकर उन्होंने व्यक्तिगत सुख-सुविधा छोड़कर राष्ट्र सेवा का मार्ग चुना। उन्होंने राष्ट्रधर्म, पांचजन्य और ऑर्गनाइजर जैसी पत्र-पत्रिकाओं तथा भारतीय अर्थ चिंतन और सम्राट चंद्रगुप्त जैसी पुस्तकों के माध्यम से समाज को वैचारिक दिशा दी। उन्होंने उपाध्याय के एकात्म मानव दर्शन को उनके जीवन का सबसे बड़ा योगदान बताया। इस दर्शन में मनुष्य, समाज और प्रकृति को एक समग्र इकाई माना गया है।

कुलगुरु प्रोफेसर सुरेश कुमार अग्रवाल ने कहा कि राष्ट्र केवल शरीर नहीं, बल्कि आत्मा है और शिक्षा को जीवन दृष्टि बनाना ही दीनदयाल उपाध्याय को सच्ची श्रद्धांजलि होगी। सिंधु शोध पीठ के निदेशक प्रो. सुभाष चंद्र ने स्वागत भाषण दिया तथा कुलसचिव कैलाश चंद्र शर्मा ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. अंजू अग्रवाल ने किया। कार्यक्रम में प्रो. अरविंद पारीक, प्रो. ऋतु माथुर, प्रो. मोनिका भटनागर, प्रो. प्रवीण माथुर, डॉ. अश्विनी तिवाड़ी, डॉ. सूरजमल राव, डॉ. राजू शर्मा, डॉ. लारा शर्मा, डॉ. विवेक शर्मा सहित अन्य अतिथि शिक्षक, शोधार्थी विद्यार्थी उपस्थित रहे।

डिग्री रहा।

प्रक्रिया शुरू कर दी है। परियोजना शीघ्र पूर्ण करने के निर्देश दिए हैं।

साथ बजट भी उपलब्ध करा

सिटी एंकर अब हर सोमवार सामूहिक प्रार्थना सभा भी आयोजित होगी

एमडीएस विश्वविद्यालय में अब संस्कारों की पाठशाला...हर दिन प्रार्थना से शुरुआत, हवन के साथ होगा बड़े आयोजनों का श्रीगणेश

अजमेर | महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय (एमडीएसयू) में अब दिन की शुरुआत घंटी या फाइल से नहीं, बल्कि प्रार्थना से होगी। विश्वविद्यालय प्रशासन ने शैक्षणिक और प्रशासनिक कार्य संस्कृति को संस्कार, अनुशासन और वैदिक मूल्यों से जोड़ने का फैसला लिया है।

शनिवार को हुई बैठक में तय किया गया कि परिसर में स्कूलों की तर्ज पर हर दिन प्रार्थना सभा होगी। कक्षाएं ही नहीं, प्रशासनिक कार्यालयों, परीक्षा अनुभाग, लेखा व स्थापना शाखा, पुस्तकालय और औषधालय सहित सभी इकाइयों में कार्य की शुरुआत प्रार्थना से होगी। वहीं बड़े आयोजन जैसे- शैक्षणिक सत्र की शुरुआत, स्थापना दिवस, दीक्षांत समारोह और राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों का श्रीगणेश वैदिक हवन के साथ किया जाएगा। इसके अलावा हर सोमवार सुबह 10 बजे भारत मुनि ऑडिटोरियम में साप्ताहिक सामूहिक प्रार्थना सभा होगी। इसमें विद्यार्थी, शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी और सुरक्षा कर्मियों की उपस्थिति अनिवार्य रहेगी।

नई शिक्षा नीति पर भी मंथन: नई शिक्षा नीति-2020 के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए एमडीएसयू के सभी विभागों की बोर्ड ऑफ स्टडीज की बैठकें 10 फरवरी से शुरू होंगी। इनमें पाठ्यक्रमों को व्यावहारिक, समसामयिक और मूल्य आधारित बनाने पर चर्चा की जाएगी।

कार्य संस्कृति को बदलने की कोशिश: विश्वविद्यालय प्रशासन का मानना है कि नियमित प्रार्थना से विद्यार्थियों और कर्मचारियों में समयपालन, संयम और आपसी सहयोग की भावना विकसित होगी। प्रार्थना सभाओं के संचालन और समन्वय की जिम्मेदारी चीफ प्रॉक्टर प्रो. अरविंद पारीक और डीन डीएसडब्ल्यू प्रो. सुभाष चंद्र को सौंपी गई है।

महर्षि दयानंद सरस्वती जयंती पर विशेष...

महर्षि दयानंद की ऋषि - दृष्टि का जीवंत विश्वविद्यालय

प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल
कुलगुरु,
महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर

(ये लेखक के निजी विचार हैं)

पंडित दीनदयाल उपाध्याय की 58वीं पुण्यतिथि पर राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित

पुण्यतिथि या जयंती मनाने का उद्देश्य महान व्यक्तियों के जीवन और कार्यों से प्रेरणा लेना होता है - राठौड़

बढ़ता राजस्थान

अजमेर (मोहित जैन)। महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय अजमेर की सिंधु शोध पीठ द्वारा पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी की 58वीं पुण्यतिथि पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

संगोष्ठी के मुख्य वक्ता शिक्षाविद एवं चिंतक हनुमान सिंह राठौड़ ने पंडित दीनदयाल उपाध्याय के जीवन, व्यक्तित्व और विचारधारा पर विस्तृत प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि भारतीय परंपरा में पुण्यतिथि या जयंती मनाने का उद्देश्य महान व्यक्तियों के जीवन और कार्यों से प्रेरणा लेना होता है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय का जन्म 1916 में हुआ और बचपन में ही माता-पिता के निधन के बाद उन्होंने कठिन परिस्थितियों में शिक्षा प्राप्त की। वे

अत्यंत प्रतिभाशाली छात्र रहे और अजमेर बोर्ड में प्रथम स्थान प्राप्त किया। आगे चलकर उन्होंने व्यक्तिगत सुख-सुविधा छोड़कर राष्ट्र सेवा का मार्ग चुना। उन्होंने राष्ट्रधर्म, पांचजन्य और ऑर्गनाइजर जैसी पत्र-पत्रिकाओं तथा भारतीय अर्थ चिंतन और सम्राट चंद्रगुप्त जैसी पुस्तकों के माध्यम से समाज को वैचारिक दिशा दी। उन्होंने विशेष रूप से पंडित दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानव दर्शन को उनके जीवन का सबसे बड़ा योगदान बताया।

इस दर्शन में मनुष्य, समाज और प्रकृति को एक समग्र इकाई माना गया है तथा भारतीय समस्याओं का समाधान भारतीय दृष्टिकोण से खोजने पर बल दिया गया है। कार्यक्रम में युवाओं को उनके जीवन से प्रेरणा लेकर समाज और राष्ट्र निर्माण में योगदान देने का संदेश दिया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने पंडित दीनदयाल उपाध्याय पर लिखित 15 खंडों की पुस्तकों का अध्यन कर उनके अंतिम पक्ति में खड़े व्यक्ति को विकास की मुख्यधारा में शामिल करने की प्रेरणा लेने हेतु प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि दीनदयाल जी प्रैक्टिशनर होने के साथ ही प्रीचर भी थे। उन्होंने राष्ट्रीय शिक्षा नीति और भारतीय ज्ञान परंपरा के संदर्भ में दीनदयाल जी के 'चिति' (राष्ट्र की आत्मा) के सिद्धांत पर जोर दिया।

उन्होंने कहा कि राष्ट्र केवल शरीर नहीं, बल्कि आत्मा है और शिक्षा को जीवन दृष्टि बनाना ही दीनदयाल जी को सच्ची श्रद्धांजलि होगी। सिंधु शोध पीठ के निदेशक प्रो. सुभाष चंद्र ने विषय परिवर्तन के साथ साथ स्वागत भाषण दिया तथा कुलसचिव कैलाश चंद्र शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

एमडीएसयू कैम्पस में 63 प्रजातियों के 501 पक्षी चिह्नित

वार्षिक कैम्पस बर्ड काउंट

कासं/अजमेर।

महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर के पर्यावरण विज्ञान विभाग द्वारा आयोजित वार्षिक कैंपस बर्ड काउंट में इस वर्ष विश्वविद्यालय परिसर में 63 प्रजातियों के 501 पक्षियों को चिन्हित किया गया है। यह गत वर्ष के मुकाबले दोगुने से भी अधिक है। गत वर्ष हुए सर्वेक्षण में 36 प्रजातियों के 229 पक्षी दर्ज किए गए थे।

7 प्रजातियों के पक्षी इस बार नजर नहीं आए

गत वर्ष सूचीबद्ध 7 प्रजातियां इस बार दर्ज नहीं हो सकीं। लेकिन इस वर्ष 34 नई प्रजातियां सूची में शामिल की गई हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि यह वृद्धि विस्तृत सर्वेक्षण प्रयास, अनुकूल मौसम तथा परिसर में उपलब्ध हरित आवास के कारण संभव हो सकी। सर्वेक्षण में कुल 25 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इनमें विभागाध्यक्ष प्रो. सुब्रोतो दत्ता, प्रो. प्रवीण माथुर और डॉ. विवेक शर्मा के साथ शोधार्थी रौनक चौधरी, पवन सिंह और निवेदिता शर्मा सहित विभाग के विद्यार्थी शामिल रहे। इस वर्ष सर्वाधिक संख्या में दर्ज की गई प्रमुख प्रजातियों में हरियल तथा तोता शामिल रहे। हरियल की अधिक उपस्थिति परिसर में फलदार वृक्षों की उपलब्धता को दर्शाती है। जबकि तोते की सक्रियता घने वृक्षों और सुरक्षित घोंसले स्थलों की उपस्थिति का संकेत देती है।

हरित क्षेत्रों के संरक्षण की आवश्यकता

प्रो. दत्ता ने बताया कि विश्वविद्यालय परिसर एक जीवंत प्रयोगशाला की तरह कार्य करता है। यहां 63 प्रजातियों की उपस्थिति हरित क्षेत्रों के संरक्षण की आवश्यकता को रेखांकित करती है। प्रो. माथुर ने इसे विश्वविद्यालय परिसर की समृद्ध जैव-विविधता का प्रमाण बताते हुए नियमित मॉनिटरिंग से दीर्घकालिक पारिस्थितिक प्रवृत्तियों को समझने में सहायता मिलने की संभावना जताई है। क्षेत्र की 50 प्रतिशत पक्षी प्रजातियां शैक्षणिक परिसरों में पाई जा सकती हैं। ऐसे में कैंपस बर्ड काउंट जैसे आयोजन न केवल वैज्ञानिक दस्तावेजीकरण में सहायक हैं, बल्कि विद्यार्थियों में पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता भी बढ़ाते हैं।

सिनेमा

मदसविवि में ऋषि दयानंद सरस्वती की 202वीं जयंती पर आयोजित कार्यक्रम में बोले वक्ता

'ऋषि दयानंद सरस्वती का जीवन भविष्य के लिए मार्गदर्शन'

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

अजमेर. वैदिक अध्ययन, अनुसंधान और नवाचार को बढ़ावा देना जरूरी है। यह बात मुख्य अतिथि चित्तौड़ प्रांत के प्रांत प्रचारक मुरली ने महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय में गुरुवार को ऋषि दयानंद सरस्वती की 202वीं जयंती पर आयोजित संगोष्ठी में कही।

उन्होंने कहा कि महर्षि दयानंद भारतीय नवजागरण का प्रखर स्तंभ थे। ऐसे महापुरुषों का व्यक्तित्व स्वयं प्रकाशमान होता है। ऋषि दयानंद का जीवन केवल इतिहास का अध्याय नहीं है। यह वर्तमान और भविष्य के लिए मार्गदर्शन है। उनके सत्य, नैतिकता, तर्कशीलता और वैदिक मूल्यों पर आधारित विचार अहम हैं। युवाओं को महापुरुषों के आदर्शों को जीवन दृष्टि का हिस्सा बनाना चाहिए। कुलगुरू प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने कहा कि विश्वविद्यालय का दायित्व केवल शिक्षा प्रदान करने के साथ संस्कारयुक्त नागरिक तैयार करना भी है। वैदिक अध्ययन, अनुसंधान और नवाचार को बढ़ावा देने की जरूरत है। महर्षि दयानंद पर पैनोरमा निर्माण जैसे प्रस्ताव अहम हैं।

अजमेर. ऋषि दयानंद सरस्वती की 202वीं जयंती पर मदस विवि में यज्ञ करते कुलगुरु प्रो.सुरेश अग्रवाल और अन्य। पत्रिका

महर्षि दयानंद शोधपीठ की निदेशक और दयानन्द चेयर की प्रभारी आचार्य प्रो ऋतु माथुर ने बताया कि दौरान प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित की गई। निधि शर्मा प्रथम, महेंद्र कुमार, तनिष्का मावलिया, मिहिर गुर्जर, साक्षी खत्री, शाहीन द्वितीय रहे। इस दौरान मंत्रोच्चार से यज्ञ किया गया। प्रांत संघ चालक जगदीश राणा, महानगर संघ चालक धनराज चौहान, महानगर प्रचारक, अशोक, चीफ प्रॉक्टर प्रो अरविंद पारीक, डीन छात्र कल्याण प्रो सुभाष चंद्र, प्रो शिव प्रसाद, प्रो सुब्रोतो दत्ता और अन्य मौजूद रहे। कुलसचिव कैलाशचंद्र शर्मा ने धन्यवाद दिया। संचालन डॉ विवेक शर्मा ने किया।

आर्य समाज पुष्कर रोड में आयोजित कार्यक्रम में संत धीरजराम रामस्नेही ने कहा कि महर्षि दयानंद सरस्वती ने समाज की दशा देखकर जन आन्दोलन चलाया था। मौजूदा वक्त समाज जाति के भेद में पड़कर सनातन वैदिक धर्म को भूलता जा रहा है। वैदिक संस्कृति को जीवन में अपनाने की जरूरत है। इस दौरान हवन यज्ञ का आयोजन किया गया। आचार्य सत्यनारायण शर्मा ने विश्व शांति की प्रार्थना की। आर्य समाज मंत्री गोविन्द शर्मा ने बताय कि आर्य समाज सप्ताह मनाया जाएगा। इसमें नित्य हवन, गोसेवा के कार्य होंगे। किशन कुमार शर्मा, गणेश वैष्णव, सुरेन्द्र शर्मा, आशुतोष, मुकेश वैष्णव, धर्मेन्द्र आर्य मौजूद रहे।

शोध एवं उद्यमिता के लिए विश्वविद्यालय ने किया एमओयू

अजमेर @ पत्रिका. महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय ने शैक्षणिक, शोध एवं उद्यमिता को बढ़ाने के लिए दो संस्थाओं से एमओयू किया। कुलगुरु प्रो सुरेश कुमार अग्रवाल ने कहा कि इससे विश्वविद्यालय में शोध, नवाचार एवं उद्यमिता को नई दिशा मिलेगी तथा विद्यार्थियों को राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनने के अवसर प्राप्त होंगे। इससे संयुक्त शोध परियोजनाएं, संसाधनों का आदान-प्रदान और बौद्धिक संपदा के संरक्षण में मदद मिलेगी। साथ ही शोधार्थियों के लिए आवास, मार्गदर्शन, संगोष्ठी, सेमिनार एवं कौशल विकास कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा। विद्यार्थियों को इंटर्नशिप एवं वॉलंटियरशिप के अवसर मिलेंगे। दूसरा एमओयू में विश्वविद्यालय और स्वदेशी शोध संस्थान, स्वदेशी स्वावलंबन न्यास के बीच अर्थशास्त्र, व्यवसाय प्रशासन, वाणिज्य, राजनीति विज्ञान एवं अन्य सामाजिक विज्ञान विषयों में शोध गतिविधियां चलेंगी। राधे श्याम चोयल और अन्य ने हस्ताक्षर किए। प्रो सुभाष चन्द्र, प्रो आशीष भटनागर एवं डॉ आशीष पारीक मौजूद रहे।

समाचार जगत जयपुर, 2 मार्च, 2026 **विविध जगत**

विनायक दामोदर सावरकर एवं राष्ट्रनिर्माण का स्वदेशी यथार्थवाद

प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल
कुलगुरु
महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर

नैतिक और वैचारिक आधार तलाश रही नई पीढ़ी- प्रो. अग्रवाल

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

अजमेर. महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय में गुरुवार को शोधार्थियों के लिए पाठ्यचर्या कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने कहा कि क्षणिक और शोध संस्थानों में भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रति रुचि तेजी से बढ़ रही है। भगवद्गीता को लंबे समय तक केवल तनाव प्रबंधन के ग्रंथ के रूप में सीमित कर दिया गया था। वास्तव में इसमें कर्मयोग के माध्यम से कर्तव्यनिष्ठा, नैतिकता और निर्णय क्षमता का गहन दर्शन निहित है। आधुनिक शोध और शिक्षा जगत में इन मूल्यों की उपयोगिता निरंतर सिद्ध हो रही है। ई पीढ़ी केवल तकनीकी ज्ञान के साथ नैतिक और वैचारिक आधार भी तलाश रही है। कर्मयोग का सिद्धांत धैर्य, स्पष्टता और उद्देश्य के साथ कर्तव्यों निर्वहन की सीख देता है। समन्वयक प्रो. सुभाष चंद्र ने कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा, नैतिक मूल्यों तथा समकालीन शोध दृष्टि पर आधारित है।

पश्चिमांचल युवा महोत्सव में एमडीएस विश्वविद्यालय का उत्कृष्ट प्रदर्शन

वाग्मिता में दूसरा और संगीत स्पर्धा में ओवरऑल चौथा स्थान अर्जित

कासं/अजमेर। महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय के सांस्कृतिक दल ने गुजरात स्थित आनंद में 11 से 15 फरवरी तक आयोजित पश्चिमांचल युवा महोत्सव में सहभागिता करते हुए संगीत, साहित्य, नाट्य कला, ललित कला तथा नृत्य से संबंधित विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रभावशाली प्रदर्शन किया। विश्वविद्यालय के साहित्य समूह की वाग्मिता प्रतियोगिता में छात्रा परी कोठारी ने पश्चिम क्षेत्र स्तर पर द्वितीय स्थान प्राप्त किया। महोत्सव में समग्र प्रदर्शन के आधार पर विश्वविद्यालय को म्यूजिकल चैंपियनशिप में चौथा स्थान प्राप्त हुआ। प्रतियोगिताओं के अंतर्गत प्रतिभागियों ने क्लासिकल वोकल सोलो एवं कार्टूनिंग में चौथा स्थान प्राप्त हुआ। क्लासिकल इंस्ट्रूमेंटल (नॉन-परकशन) सोलो, भारतीय समूह गीत, लोक ऑर्केस्ट्रा, ऑन-द-स्पॉट पेंटिंग, पोस्टर मेकिंग में पांचवा स्थान अर्जित किया।

कुलगुरु ने उपलब्धि को सराहा

कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने प्रतिभागियों को बधाई देते हुए कहा कि विद्यार्थियों की यह उपलब्धि विश्वविद्यालय की सृजनात्मक एवं सांस्कृतिक परंपरा को सशक्त बनाती है तथा आने वाले समय में वे राष्ट्रीय स्तर पर और भी उत्कृष्ट प्रदर्शन करेंगे। अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. सुभाष चंद्र ने भी विद्यार्थियों को शुभकामनाएं दी। सांस्कृतिक दल के साथ टीम मैनेजर के रूप में सुरेंद्र कुमावत एवं डॉ. स्वतंत्र शर्मा एवं सोफिया कॉलेज से डॉ. कोमल भसीन महिला मैनेजर के रूप में गई थी।

कुलगुरु प्रो. अग्रवाल ने सेवा को राष्ट्र निर्माण का बताया आधार

बढ़ता राजस्थान

अजमेर (मोहित जैन)। महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय के योग विज्ञान विभाग में राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) के सात दिवसीय विशेष शिविर का शुभारंभ 'श्रेयस : सामुदायिक प्रगति एवं सशक्त राष्ट्र का आधार युवा' विषय के साथ हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल रहे।

कार्यक्रम के प्रारंभ में अतिथियों का स्वागत करते हुए एनएसएस संयोजिका प्रो. मोनिका भटनागर ने बताया कि 'श्रेयस' श्रेष्ठ मार्ग का प्रतीक है, जो व्यक्ति को आत्मिक उन्नति, सेवा और समाजहित की दिशा में अग्रसर करता है।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एवं विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने कहा कि राष्ट्रीय सेवा योजना केवल एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि अनुशासन, राष्ट्र निर्माण, समाज सुधार और समावेशिता का सशक्त माध्यम है। उन्होंने बताया कि स्वतंत्रता के बाद छात्रों को समाज से जोड़ने की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए कोठारी आयोग की सिफारिशों के आधार पर 1969 में एनएसएस की स्थापना की गई, जो आज देश के शिक्षण संस्थानों में युवाओं को सामुदायिक सेवा से जोड़ने का महत्वपूर्ण मंच बन चुकी है।

कुलगुरु प्रो. अग्रवाल ने कहा कि उच्च शिक्षा के तीन प्रमुख स्तंभ—शिक्षण, अनुसंधान और विस्तार —में एनएसएस की गतिविधियाँ विस्तार कार्य का महत्वपूर्ण आधार हैं, जो शिक्षण संस्थानों को समाज के साथ जोड़ती हैं और सामाजिक उत्तरदायित्व निभाने का अवसर प्रदान करती हैं। उन्होंने स्वयंसेवकों से आह्वान किया कि वे केवल प्रमाणपत्र प्राप्त करने की भावना से नहीं, बल्कि समाज और राष्ट्र के प्रति योगदान की भावना से कार्य करें।

कुलगुरु ने यह भी कहा कि विश्वविद्यालय और विद्यार्थियों द्वारा किए जा रहे उत्कृष्ट कार्यों का प्रभावी डॉक्यूमेंटेशन और प्रोजेक्शन आवश्यक है, ताकि समाज इन गतिविधियों से परिचित हो सके और अन्य संस्थान भी प्रेरणा प्राप्त करें। आभार ज्ञापन करते हुए एनएसएस अधिकारी डॉ. आशीष पारीक ने बताया कि शिविर के दौरान ग्राम संवाद, स्वच्छता एवं स्वास्थ्य जागरूकता, पर्यावरण संरक्षण, नारी सम्मान, नशा मुक्ति तथा सामाजिक समरसता से संबंधित विभिन्न गतिविधियाँ आयोजित की जाएंगी। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के शिक्षक प्रो. सुब्रतो दत्ता, प्रो. ऋतु माथुर, प्रो. अरविन्द पारीक , प्रो. सुभाष चन्द, डॉ. राजू लाल शर्मा सहित बड़ी संख्या में अतिथि शिक्षक एवं विद्यार्थी उपस्थित थे । कार्यक्रम का संचालन डॉ. लारा शर्मा ने किया।

नई शिक्षा नीति समय के साथ विकसित होने वाली व्यवस्था–कुलगुरु

एमडीएस विवि में नवीन पाठ्यक्रम संरचना पर बोर्ड ऑफ स्टडीज की बैठक आयोजित

कासं/अजमेर। महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी-2020) के प्रभावी क्रियान्वयन एवं नवीन शैक्षणिक कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार करने के उद्देश्य से विज्ञान, गृह विज्ञान एवं पर्यावरण विज्ञान संकायों की बोर्ड ऑफ स्टडीज की बैठक आयोजित की गई। इसमें विश्वविद्यालय एवं सम्बद्ध महाविद्यालयों के विषय विशेषज्ञों, विभागाध्यक्षों तथा बाह्य विशेषज्ञों ने भाग लिया।

बैठक में कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 एक गतिशील दस्तावेज है, जिसे समय और आवश्यकता के अनुसार विकसित किया जाना आवश्यक है। विश्वविद्यालय का पाठ्यक्रम भी इसी दृष्टिकोण के साथ तैयार किया जाएगा।

प्रो.अग्रवाल ने बताया कि विद्यार्थियों की रोजगारपरक क्षमता बढ़ाने हेतु स्किल एन्हांसमेंट कोर्स, भाषा दक्षता आधारित एबिलिटी एन्हांसमेंट कोर्स, बहुविषयक अध्ययन तथा वैल्यू एडिशन कोर्स को पाठ्यक्रम का अनिवार्य हिस्सा बनाने का निर्णय लिया गया है ।योगा फॉर होलिस्टिक हेल्थ, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एंड एथिक्स तथा महर्षि दयानंद सरस्वती के जीवन एवं विचारों पर आधारित पाठ्यांश को सभी कार्यक्रमों में शामिल करने की अभिशंसा की गई। कुलगुरु द्वारा यह भी स्पष्ट किया गया कि केवल सिलेबस नहीं बल्कि पूर्ण आउटकम आधारित करिकुलम तैयार किया जाएगा, जिसमें शिक्षण पद्धति, मूल्यांकन प्रणाली एवं रोजगार संबंधी उपयोगिता को शामिल किया जाएगा। साथ ही भारतीय ज्ञान परंपरा (इंडियन नॉलेज सिस्टम) को पाठ्यक्रम में अंतर्निहित करने पर विशेष बल दिया गया। बैठक के प्रारम्भ में सेवानिवृत्त आचार्य एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति प्रभारी आशीष भटनागर ने भूमिका प्रस्तुत की।

बैठक में हुए निर्णय

- बैठक में तीन वर्षीय स्नातक कार्यक्रम (120 क्रेडिट), चार वर्षीय ऑनर्स/रिसर्च आधारित कार्यक्रम (160 क्रेडिट) तथा एकीकृत स्नातक-स्नातकोत्तर कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार करने पर सहमति बनी।
- वर्तमान शैक्षणिक सत्र में 3+2 मॉडल लागू किए जाने के साथ ही चार वर्षीय कार्यक्रम का पाठ्यक्रम भी पूर्व तैयारी के रूप में विकसित करने का निर्णय लिया गया।
- नई शिक्षा नीति के महत्वपूर्ण प्रावधान मल्टीपल एंट्री एवं मल्टीपल एग्जिट प्रणाली को तत्काल प्रभाव से लागू करने पर भी जोर दिया गया। इसके तहत प्रथम वर्ष के बाद प्रमाणपत्र, द्वितीय वर्ष के बाद डिप्लोमा तथा तृतीय एवं चतुर्थ वर्ष पूर्ण करने पर क्रमशः स्नातक एवं ऑनर्स डिग्री प्रदान की जाएगी।

दैनिक
बढ़ता राजस्थान

पारी कोठारी ने राष्ट्रीय यूथ फेस्टिवल में जीता तृतीय स्थान

चेन्नई में महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय की प्रतिभा का परचम

बढ़ता राजस्थान

अजमेर (मोहित जैन)। महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर की छात्रा परी कोठारी ने चेन्नई में आयोजित इंटर यूनिवर्सिटी नेशनल यूथ फेस्टिवल में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए वाग्मिता (इलोक्यूशन) प्रतियोगिता में तृतीय स्थान प्राप्त कर विश्वविद्यालय का राष्ट्रीय स्तर पर गौरव बढ़ाया है। गौरतलब है कि विश्वविद्यालय में जनवरी माह में आयोजित 'दिग्नाद-2026' युवा महोत्सव में विजयी प्रतिभागियों में शामिल परी कोठारी ने पहले वेस्ट जोन यूथ फेस्टिवल, आणंद (गुजरात) में भाग लेकर वाग्मिता प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त किया था। इसी उपलब्धि के आधार पर उन्होंने सत्यभामा इंस्टिट्यूट ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी, चेन्नई द्वारा 10 से 14 मार्च 2026 तक आयोजित इंटर यूनिवर्सिटी नेशनल यूथ फेस्टिवल 2025-26 (यूनिफेस्ट) में महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर का प्रतिनिधित्व किया। इस प्रतिष्ठित राष्ट्रीय प्रतियोगिता में देशभर के विभिन्न विश्वविद्यालयों से आए प्रतिभागियों के बीच परी कोठारी ने अपने प्रभावशाली वक्तृत्व कौशल का प्रदर्शन करते हुए तृतीय स्थान प्राप्त किया।

इस उपलब्धि पर विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने छात्रा को बधाई देते हुए कहा कि यह उपलब्धि न केवल विश्वविद्यालय बल्कि पूरे प्रदेश के लिए गर्व का विषय है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि विश्वविद्यालय के विद्यार्थी भविष्य में भी राष्ट्रीय मंचों पर इसी प्रकार अपनी प्रतिभा का उत्कृष्ट प्रदर्शन करते रहेंगे। इस अवसर पर अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. सुभाष चन्द्र तथा कुलसचिव कैलाश चन्द्र शर्मा ने भी छात्रा को बधाई देते हुए कहा कि परी कोठारी की यह उपलब्धि विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के लिए प्रेरणास्रोत है और इससे विश्वविद्यालय की शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक प्रतिष्ठा को राष्ट्रीय स्तर पर नई पहचान मिली है।

डिजिटल पत्रकारिता की नई पहल

एमडीएस में छात्रों ने शुरू किया पाक्षिक ई- बुलेटिन

अजमेर @ पत्रिका. महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय में शैक्षणिक नवाचार अब कक्षा से निकलकर डिजिटल मंचों तक पहुंच रहे हैं। पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के प्रथम सेमेस्टर की नेहा शर्मा, मानसी माहेश्वरी और लोकेश कश्यप ने प्रायोगिक आधार पर एक पाक्षिक ई-बुलेटिन प्रकाशित कर विश्वविद्यालय में डिजिटल पत्रकारिता की नई शुरुआत की है। इस ई-बुलेटिन का औपचारिक लोकार्पण कुलगुरु प्रोफेसर सुरेश कुमार अग्रवाल की ओर से किया गया। इस नवाचार का पहला अंक महर्षि दयानंद सरस्वती की 202 वीं जयंती को समर्पित रहा, जिसमें उनके वैदिक दर्शन, समाज सुधार आंदोलन और आधुनिक भारत के लिए उनके विचारों को रचनात्मक ढंग से प्रस्तुत किया गया। लोकार्पण अवसर पर कुलगुरु ने कहा कि "सैद्धांतिक ज्ञान के साथ प्रैक्टिकल उपयोग ही राष्ट्रीय शिक्षा नीति की मूल भावना है। ऐसे प्रयास छात्रों को भविष्य के मीडिया प्रोफेशनल्स के रूप में तैयार करते हैं।"पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के शिक्षकों ने भी छात्रों के प्रयासों की प्रशंसा करते हुए कहा की यह पाक्षिक ई-बुलेटिन विश्वविद्यालय की गतिविधियों, शोध कार्यों और अकादमिक नवाचारों को साझा करने का एक आधुनिक माध्यम बनेगा और छात्रों की रचनात्मक क्षमता को नई दिशा देगा।

भगवद् गीता का कर्मयोग आधुनिक शोध के लिए भी प्रासंगिक

एमडीएसयू में शोधार्थियों के लिए कोर्स वर्क कार्यक्रम का आयोजन

कासं/अजमेर।

महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय में शोधार्थियों के लिए कोर्सवर्क कार्यक्रम का शुभारंभ गुरुवार को हुआ। इसका उद्घाटन करते हुए कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने भगवद् गीता के कर्मयोग तथा देशज भारतीय मूल्य प्रणाली की वैश्विक प्रासंगिकता पर अपने विचार व्यक्त किए।

उन्होंने कहा कि भगवद् गीता को लंबे समय तक केवल तनाव प्रबंधन के ग्रंथ के रूप में सीमित कर दिया गया था, जबकि वास्तव में इसमें कर्मयोग के माध्यम से कर्तव्यनिष्ठा, नैतिकता और निर्णय क्षमता का गहन दर्शन निहित है। आधुनिक शोध और शिक्षा जगत में इन मूल्यों की उपयोगिता निरंतर सिद्ध हो रही है। देश के प्रतिष्ठित तकनीकी संस्थानों में 'श्रीमद् भगवद् गीता एवं कर्मयोग' जैसे पाठ्यक्रमों के प्रति विद्यार्थियों की अभूतपूर्व रुचि देखी जा रही है। यह दर्शाता है कि नई पीढ़ी केवल तकनीकी ज्ञान ही नहीं, बल्कि नैतिक और वैचारिक आधार भी तलाश रही है। कार्यक्रम समन्वयक प्रो. सुभाष चंद्र ने बताया कि शोधार्थियों के लिए आयोजित इस कोर्स वर्क कार्यक्रम का उद्देश्य उन्हें भारतीय ज्ञान परंपरा, नैतिक मूल्यों तथा समकालीन शोध दृष्टि से परिचित कराना है, जिससे वह अपने अनुसंधान कार्य को अधिक व्यापक और मूल्यनिष्ठ दृष्टिकोण के साथ आगे बढ़ा सकें।

मध्यकालीन एवं प्राचीन गद्य प्रश्न पत्र-द्वितीय की परीक्षा 12 को

एमडीएसयू के परीक्षा नियंत्रक डॉ. सुनील कुमार टेलर ने बताया कि एमए राजस्थानी उत्तरार्द्ध की 16 फरवरी को आयोजित 'मध्यकालीन एवं प्राचीन गद्य प्रश्न पत्र - द्वितीय' की परीक्षा अपरिहार्य कारणों से निरस्त की गई है। इस प्रश्न पत्र की परीक्षा पुनः 12 मार्च को प्रातः 11 बजे से 2 बजे तक पूर्व निर्धारित केन्द्रों पर आयोजित की जाएगी।

एमडीएसयू में लागू होगा एआई आधारित स्मार्ट सिस्टम

अजमेर। महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय प्रशासन ने आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस (एआई) आधारित अत्याधुनिक समग्र प्रबंधन सॉफ्टवेयर को लागू करने की पहल की है। इससे शैक्षणिक प्रक्रियाएं व प्रशासनिक कार्यप्रणाली आधुनिक, पारदर्शी और कुशल बन सकेगी। कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने बताया कि यह उन्नत सॉफ्टवेयर टाइम्स ऑफ इंडिया ग्रुप के कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी (सीएसआर) कार्यक्रम के तहत विश्वविद्यालय को निःशुल्क उपलब्ध कराया जा रहा है। इस सॉफ्टवेयर की बाजार कीमत लगभग 2 से 3 करोड़ रुपए प्रतिवर्ष है, जिसे बिना किसी लाइसेंस शुल्क के उपलब्ध कराना अपने आप में एक महत्वपूर्ण पहल है।

प्रस्तावित सॉफ्टवेयर की सबसे बड़ी विशेषता इसका एआई आधारित चैटबॉट इंटरफेस है, जिसमें उपयोगकर्ता सामान्य भाषा में आदेश देकर विभिन्न कार्यों को संपन्न कर सकेंगे। इस प्रणाली में जनरेटिव एआई, एजेंटिक एआई और डिटर्मिनिस्टिक एआई का संयोजन किया गया है। सॉफ्टवेयर का संचालन

एमडीएसयू ने मार्च में ही घोषित किया पहला वार्षिक परीक्षा परिणाम

बीकॉम ऑनर्स में शत-प्रतिशत सफलता

अजमेर। महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने 31 मार्च को पहला वार्षिक परीक्षा परिणाम बीकॉम ऑनर्स पार्ट- तृतीय घोषित कर दिया। विश्वविद्यालय ने पहली बार मार्च माह में ही परीक्षा परिणाम घोषित किया है। परिणाम में विद्यार्थियों ने शत-प्रतिशत सफलता दर्ज की है। कुलगुरु प्रो.अग्रवाल ने कहा कि यह सफलता विश्वविद्यालय की सुव्यवस्थित कार्यप्रणाली, समन्वद्ध योजना और टीमवर्क का परिणाम है। उन्होंने विशेष रूप से परीक्षा नियंत्रक डॉ.सुनील कुमार टेलर एवं उनकी टीम के अथक प्रयासों की सराहना की। एमडीएस विश्वविद्यालय ने वार्षिक स्कीम के अंतर्गत सबसे पहले परीक्षा परिणाम घोषित किया है। यह उपलब्धि विश्वविद्यालय को राज्य में अग्रणी शैक्षणिक संस्थानों की श्रेणी में स्थापित करती है।

उपस्थिति दर्ज करने से लेकर असाइनमेंट भी करेगा तैयार

इस सॉफ्टवेयर की विशेषता एआई टीचर है। यह प्रणाली विद्यार्थियों की उपस्थिति स्वतः दर्ज करने, विषयानुसार अध्ययन सामग्री तैयार करने, असाइनमेंट और क्विज बनाने तथा विद्यार्थियों के स्तर के अनुसार मूल्यांकन करने में सक्षम होगी। यह तकनीक कमजोर विद्यार्थियों की पहचान कर उन्हें सुधारात्मक मार्गदर्शन भी प्रदान करेगी।

परीक्षा, वित्त और प्रशासन में पूर्ण स्वचालन

इस सॉफ्टवेयर में 65 से अधिक मॉड्यूल शामिल हैं। इसमें प्रवेश प्रक्रिया से लेकर परीक्षा, परिणाम, वित्तीय प्रबंधन, खरीद, मानव संसाधन,

चार सौ से अधिक कॉलेज भी जुड़ेंगे

विश्वविद्यालय से जुड़े लगभग 400 से अधिक महाविद्यालयों को भी इस प्रणाली से जोड़ा जा सकेगा। इससे विश्वविद्यालय को सभी महाविद्यालयों की गतिविधियों पर रियल-टाइम निगरानी रखने में सहायता मिलेगी।

एडीए आयुक्त नित्या.के को नगर निगम आयुक्त का अतिरिक्त कार्यभार

अजमेर। नगर निगम आयुक्त आईएएस देशलदान का तबादला जिला कलक्टर डूंगरपुर के पद पर हो जाने पर निगम आयुक्त के रिक्त पद का कार्यभार अजमेर विकास प्राधिकरण की आयुक्त नित्या.के [illegible]

बढ़ता प्रादेशिक | झालावाड़ / अंता / बांरा / रावतभाटा / चित्तौड़गढ़ / निम्बाहेड़ा / कपासन /बूंदी / ब्यावर/ केकड़ी / भीलवाड़ा | जयपुर। सोमवार 09 मार्च 2026 | www.badhatarajasthan.in | 09

एमडीएस यूनिवर्सिटी की 38वीं अंतर-महाविद्यालय खो -खो महिला प्रतियोगिता का हुआ शुभारंभ

हार और जीत खेल का हिस्सा हैं, लेकिन सच्ची जीत वही है जो ईमानदारी और समर्पण के साथ हासिल की जाए - प्रो. अग्रवाल

बढ़ता राजस्थान

अजमेर (मोहित जैन)। महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर में 38वीं अंतर-महाविद्यालय महिला खो -खो प्रतियोगिता का शुभारंभ विश्वविद्यालय परिसर में रविवार को किया गया। प्रतियोगिता विश्वविद्यालय में तीन दिवस तक आयोजित की जाएगी ।

प्रतियोगिता में विश्वविद्यालय से संबद्ध 11 महाविद्यालयों की टीमें भाग ले रही हैं। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने की। उन्होंने खिलाड़ियों को संबोधित करते हुए कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अंतर्गत खेलों को शिक्षा का अभिन्न अंग बनाया गया है, जिससे विद्यार्थियों और खिलाड़ियों का समग्र एवं सर्वांगीण विकास संभव हो सके। साथ ही उन्होंने कहा कि खेल व्यक्ति में अनुशासन, आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता और टीम भावना का विकास करते हैं।

उन्होंने खिलाड़ियों को प्रेरित करते हुए कहा कि खेल मैदान जीवन का महत्वपूर्ण पाठशाला है, जहाँ खिलाड़ी संघर्ष, धैर्य और निरंतर प्रयास का महत्व सीखते हैं। उन्होंने सभी खिलाड़ियों से खेल भावना के साथ प्रतियोगिता में भाग लेने का आह्वान करते हुए कहा कि हार और जीत खेल का हिस्सा हैं, लेकिन सच्ची जीत वही है जो ईमानदारी और समर्पण के साथ हासिल की जाए।

कार्यक्रम में अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. सुभाष चंद्र ने स्वागत भाषण में कहा कि विश्वविद्यालय में 38वीं अन्तर-महाविद्यालय महिला खो-खो प्रतियोगिता का आज महिला दिवस के दिन शुभारंभ एवं महिला खिलाड़ियों की इसमें बढ़ चढ़ कर भागीदारी, महिलाओं के खेलों में उत्कृष्ट प्रदर्शन का प्रमाण है।

इस अवसर पर प्रो. अरविंद पारीक, डॉ. विष्णु परमार(विश्वविद्यालय प्रतिनिधि), प्रो. मनोज यादव, डॉ. शाहिना शेखानी (पर्यवेक्षक), डॉ. तपेश्वर कुमार (खेल सचिव), डॉ. संजय तोमर, डॉ. कुलदीप सिंह, डॉ लारा शर्मा, प्रेम राज मीना सहित विभिन्न महाविद्यालयों से आए खेल मैनेजर एवं खिलाड़ी उपस्थित रहे।

अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. सुभाष चंद्र ने बताया कि रविवार को खेले गए मुकाबलों के परिणाम इस प्रकार रहे -

सोफिया कॉलेज ने एमएलवी कॉलेज, भीलवाड़ा को 14-1 से हराया। गवर्नमेंट कॉलेज जायल ने गवर्नमेंट कॉलेज, पुष्कर को 14-3 से पराजित किया। फिजिकल कॉलेज, भीलवाड़ा ने एस.डी . कॉलेज ब्यावर को 16-3 से हराया।दयानंद कॉलेज अजमेर ने वर्धमान कॉलेज ब्यावर को 23-0 से पराजित किया।खेल सचिव डॉ. तपेश्वर कुमार के अनुसार क्वाटर फाइनल मुकाबले सोमवार को सुबह 8.00 बजे से खेले जायेंगे।

अजमेर, रविवार, 08 मार्च, 2026 राजस्थान पत्रिका

पत्रिका {सिटी बुक} CITY BOOK | SUNDAY 07 patrika.com

आयोजन : विश्वविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर संगोष्ठी

नारी को सम्मान और शिक्षा के बिना समाज की प्रगति संभव नहीं-भदेल

अजमेर. संबोधित करतीं विधायक भदेल व मंचासीन अन्य अतिथि।

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

अजमेर. नारी को सम्मान और शिक्षा के बिना समाज की प्रगति संभव नहीं है। यह बात अजमेर दक्षिण विधायक अनिता भदेल ने शनिवार को महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित संगोष्ठी में कही।

सशक्त नारी महिला सशक्तिकरण पर वैदिक विमर्श विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में उन्होंने कहा कि भारतीय समाज की जड़ें सनातन संस्कृति और वेदों में निहित हैं। महर्षि दयानंद सरस्वती सदैव नारी शिक्षा और अधिकारों के पक्षधर रहे। जिस समाज की आधी आबादी को ज्ञान से दूर रखा जाएगा, वह कभी उन्नति नहीं कर सकता है। भारतीय संविधान ने महिलाओं को समान अधिकार दिए हैं। परिवार और समाज में भी समान सम्मान दिए जाने पर महिलाओं का वास्तविक सशक्तिकरण है।

वैदिक साहित्य में स्त्री सर्वोच्च स्थान : कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने कहा कि वैदिक साहित्य में स्त्री को साम्राज्ञी और 'ब्रह्म वादिनी' के रूप में सर्वोच्च स्थान दिया गया है। भारतीय संस्कृति में मां दुर्गा को शक्ति, मां लक्ष्मी को समृद्धि और मां सरस्वती को ज्ञान का प्रतीक माना जाता है। समाज में आई कुछ विकृतियों के कारण कई ग्रंथों की गलत व्याख्या भी प्रचलित है। इन्हें सही संदर्भ में समझने की आवश्यकता है।

त्रिवेणी का हुआ लोकार्पण

विश्वविद्यालय की त्रैमासिक पत्रिका त्रिवेणी के द्वितीय अंक का लोकार्पण किया। केंद्रीय विश्वविद्यालय जम्मू की प्रो. वंदना शर्मा, सेवानिवृत्त आचार्य प्रो. लक्ष्मी ठाकुर, वित्त नियंत्रक नेहा शर्मा तथा राजकीय कन्या महाविद्यालय की डॉ. निहारिका राठौड़ ने भी विचार व्यक्त किए। कुलसचिव कैलाश चन्द्र शर्मा और प्रो. ऋतु माथुर ने स्वागत किया। प्रो. मोनिका भटनागर ने धन्यवाद दिया।

'चतुर्वेदी की रचनाएं युवाओं के लिए प्रेरणा'

अजमेर. महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय के सिंधु शोध केंद्र में शनिवार को आयोजित संगोष्ठी में मौजूद लोग। पत्रिका

सिंधु शोध केंद्र के तत्वावधान में एक पुष्प की अभिलाषा पर संगोष्ठी

अजमेर @ पत्रिका. महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय में सिंधु शोध केंद्र के तत्वावधान में शनिवार को माखनलाल चतुर्वेदी की जयंती पर एक पुष्प की अभिलाषा विषय पर संगोष्ठी हुई। डीन छात्र कल्याण और निदेशक प्रो. सुभाष चन्द्र ने कहा कि माखनलाल चतुर्वेदी साहित्यकार के साथ राष्ट्र चेतना के अग्रदूत थे। उनकी रचनाएं युवाओं को जिम्मेदार, संवेदनशील और जागरूक नागरिक बनने का मार्ग दिखाती हैं। मुख्य वक्ता डॉ. विजयशंकर शर्मा ने कहा कि पुष्प की अभिलाषा आदर्श नागरिक की अभिलाषा है, जो व्यक्तिगत सुविधाओं को त्यागकर राष्ट्रहित में समर्पित हो जाता है। नियमों का पालन, सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा, संसाधनों की बचत और कर्तव्यों का निष्ठा से निर्वहन भी देशभक्ति है। कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति अपने क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य कर राष्ट्र निर्माण में योगदान दे सकता है। प्रत्येक व्यक्ति को अपने भीतर छिपी प्रतिभा को पहचानकर उसे विकसित करना चाहिए। सदस्य सचिव दिलीप शर्मा, निकिता कुंडू, नेमीचंद तंबोली, डॉ. अंजू वर्मा आदि मौजूद रहे। संचालन डॉ. अंजू अग्रवाल ने किया।

'एक पुष्प की अभिलाषा' से जागी राष्ट्र चेतना

एमडीएसयू में संगोष्ठी

कासं/अजमेर

एमडीएस यूनिवर्सिटी के सिंधु शोध केंद्र की ओर से राष्ट्रकवि पंडित माखनलाल चतुर्वेदी की जयंती पर शनिवार को संगोष्ठी आयोजित की। एक पुष्प की अभिलाषा विषय पर केंद्रित गोष्ठी ने विद्यार्थियों, शोधार्थियों और शिक्षकों को गहन चिंतन के साथ-साथ व्यावहारिक प्रेरणा भी प्रदान की।

अधिष्ठाता छात्र कल्याण एवं निदेशक सिंधु शोधपीठ प्रो. सुभाष चन्द ने कहा कि पंडित माखनलाल चतुर्वेदी केवल एक साहित्यकार नहीं, बल्कि स्वतंत्रता आंदोलन के सशक्त स्वर और राष्ट्र चेतना के अग्रदूत थे। उनकी लेखनी में त्याग, समर्पण और राष्ट्रप्रेम का अद्वितीय संगम देखने को मिलता है, जो आज भी युवाओं के लिए प्रेरणास्रोत है।

मुख्य वक्ता के रूप में लखनऊ के डॉ. विजय शंकर शर्मा ने एक पुष्प की अभिलाषा का गहन विश्लेषण प्रस्तुत किया। यह कविता केवल एक पुष्प की कल्पना नहीं, बल्कि एक ऐसे आदर्श नागरिक की अभिलाषा है, जो व्यक्तिगत सुख-सुविधाओं का त्याग कर राष्ट्रहित में समर्पित हो जाता है। कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति अपने क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य कर राष्ट्र निर्माण में योगदान दे सकता है। संचालन का संचालन डॉ. अंजू अग्रवाल ने किया। इस अवसर पर सदस्य सचिव दिलीप शर्मा, नेमी चंद तंबोली, डॉ. अंजू वर्मा अतिथि संकाय एवं शोधार्थियों में शिखा सोनी, पंकज यादव, कंचन तथा निकिता कुंडू सहित आदि मौजूद रहे।

कुलगुरु ने जताई राज्यपाल के स्वास्थ्य पर चिंता

अजमेर @ पत्रिका. महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने राज्यपाल एवं कुलाधिपति हरिभाऊ किसनराव बागडे के अस्वस्थ होने चिंता जताई है। उन्होंने कहा कि राज्यपाल का दूरदर्शी नेतृत्व, मार्गदर्शन और उच्च शिक्षा के विकास के प्रति उनकी प्रतिबद्धता प्रेरणास्रोत है। शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी एवं विद्यार्थियों ने उनके त्वरित स्वस्थ होने की प्रार्थना की है।

शिविर में 140 मरीजों की स्वास्थ्य जांच

कासं/अजमेर

विश्व स्वास्थ्य दिवस के अवसर पर महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय के धन्वंतरि आरोग्य केंद्र की ओर से मंगलवार को ग्राम घूघरा में निःशुल्क चिकित्सा एवं स्वास्थ्य परीक्षण शिविर आयोजित किया गया। शिविर का उद्घाटन करते हुए कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने कहा कि ऐसे शिविरों के माध्यम से भविष्य में एक स्वस्थ, जागरूक और आत्मनिर्भर समाज की नींव मजबूत होती है।

शिविर में डॉ. नितिन शर्मा एवं टीम ने 140 ग्रामीणों का स्वास्थ्य परीक्षण किया। मरीजों की बीपी, शुगर, हिमोग्लोबिन आदि की जांच कर आवश्यकतानुसार दवाइयों का वितरण किया गया। सेनेटरी पैड्स, साबुन और ग्लूकोज किट भी वितरित किए गए। स्वास्थ्य केंद्र प्रभारी डॉ. राजू शर्मा ने बताया कि विश्वविद्यालय हर माह विभिन्न कच्ची बस्तियों और गांवों में ऐसे शिविर आयोजित करता है। शिविर में सरपंच सुरजान गुर्जर, देवकरण गुर्जर, सत्यनारायण भंसाली सहित सुंदर कुमार, मनीषा सोनी, दीपक चौधरी और सूरज मौजूद रहे।

बढ़ता प्रादेशिक | झालावाड़ / अंता / बांरा / रावतभाटा / चित्तौड़गढ़ / निम्बाहेड़ा / कपासन /बूंदी / ब्यावर/ केकड़ी / भीलवाड़ा | जयपुर। बुधवार 11 मार्च 2026 | www.badhatarajasthan.in | 09

एमडीएस विश्वविद्यालय की 38वीं अंतर महाविद्यालयीय खेल प्रतियोगिताओं का भव्य समापन, खो-खो में डीएवी कॉलेज विजेता

खेल और शिक्षा साथ-साथ जरूरी : डॉ. गरिमा नरूला

बढ़ता राजस्थान

अजमेर (मोहित जैन)। महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर की 38वीं अंतर महाविद्यालयीय 'जयघोष' खेल प्रतियोगिताओं का भव्य समापन महिला खो-खो के रोमांचक फाइनल मुकाबले के साथ हुआ। प्रतियोगिता के समापन समारोह की मुख्य अतिथि अजमेर की एसडीएम डॉ. गरिमा नरूला आईएएस तथा समारोह की अध्यक्षता एमडीएस विश्वविद्यालय स्पोर्ट्स बोर्ड के चेयरमैन डॉ. अनिल कुमार दाधीच ने की।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि डॉ. गरिमा नरूला ने खिलाड़ियों को संबोधित करते हुए कहा कि खेल युवाओं के व्यक्तित्व विकास का महत्वपूर्ण माध्यम है। खेल अनुशासन, आत्मविश्वास और टीम भावना सिखाते हैं तथा युवाओं को जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए डॉ. अनिल कुमार दाधीच ने कहा कि विश्वविद्यालय की 38 वर्षों की खेल परंपरा निरंतर विद्यार्थियों को आगे बढ़ने के अवसर प्रदान कर रही है। विश्वविद्यालय के कुलसचिव कैलाश चन्द्र शर्मा ने इस अवसर पर कहा कि आज जिस उत्कृष्ट प्रदर्शन का परिचय दोनों टीमों द्वारा दिया गया है, उसे और बेहतर बनाने की दिशा में निरंतर मेहनत करें और अपने महाविद्यालय, विश्वविद्यालय, अपने परिवार तथा अपने शहर का नाम उज्ज्वल करें।

फाइनल मुकाबले में डीएवी कॉलेज बना विजेता

प्रतियोगिता के फाइनल मुकाबले में डीएवी कॉलेज, अजमेर की टीम ने शानदार प्रदर्शन करते हुए शाहपुरा कॉलेज को पराजित कर विजेता बना । विजेता एवं उपविजेता टीमों को अतिथियों द्वारा ट्रॉफी एवं पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार कैलाश चंद्र शर्मा, डीएवी कॉलेज के प्राचार्य डॉ. लक्ष्मीकांत, अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. सुभाष चंद्र, स्पोर्ट्स बोर्ड के सचिव डॉ. तपेश्वर कुमार , डॉ. संजय तोमर, ऑब्जर्वर डॉ. विष्णु परमार, सोफिया कॉलेज से शाहना शेखानी , प्रो. मनोज यादव, डॉ. कुलदीप शेखावत, डॉ. विष्णु परमार, डॉ लारा शर्मा आदि उपस्थित थे ।

परी राष्ट्रीय यूथ फेस्टिवल में रही तृतीय

अजमेर @ पत्रिका. महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय की छात्रा परी कोठारी ने चेन्नई में आयोजित इंटर यूनिवर्सिटी नेशनल यूथ फेस्टिवल में इलोक्यूशन प्रतियोगिता में तृतीय स्थान प्राप्त किया। परी ने पहले वेस्ट जोन यूथ फेस्टिवल आणंद में भाग लेकर वाग्मिता प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त किया । इसी उपलब्धि के आधार पर उन्होंने सत्यभामा इंस्टिट्यूट ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी में आयोजित इंटर यूनिवर्सिटी नेशनल यूथ फेस्टिवल में प्रतिनिधित्व किया। कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने कहाकि विश्वविद्यालय के विद्यार्थी भविष्य में भी राष्ट्रीय मंचों पर इसी प्रकार अपनी प्रतिभा का उत्कृष्ट प्रदर्शन करते रहेंगे। डीन छात्र कल्याण प्रो. सुभाष चन्द्र , कुलसचिव कैलाश चन्द्र शर्मा ने भी स्वागत किया।

दैनिक भास्कर | अजमेर 03-04-2026

अब सेमेस्टर सिस्टम व कौशल आधारित होंगे कोर्स

किशनगढ़ मार्बल स्लरी का निस्तारण करेगा एमडीएसयू, शोध से मिलेगी समाज को दिशा

अजमेर| महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय (एमडीएसयू) को एनएएसी मूल्यांकन में ए++ ग्रेड दिलाने के लिए कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल की अध्यक्षता में आईक्यूएसी की महत्वपूर्ण बैठक आयोजित हुई। इसमें विश्वविद्यालय के भविष्य के लिए एक विजनरी कार्ययोजना पेश की गई। बैठक में आरके मार्बल के श्री सुभाष अग्रवाल और विश्वविद्यालय के विशेषज्ञों के बीच किशनगढ़ मार्बल स्लरी के प्रभावी निस्तारण पर चर्चा हुई। अब पर्यावरण और सूक्ष्म विज्ञान विभाग इस पर विशेष शोध करेगा। कुलगुरु ने स्पष्ट किया कि विवि का शोध समाज और नीति-निर्धारण में सहायक होना चाहिए। नई शिक्षा नीति के तहत अब विवि में पूर्ण रूप से सेमेस्टर सिस्टम लागू होगा। पाठ्यक्रमों को लचीला और कौशल आधारित बनाते हुए 'मेजर-माइनर' संरचना अपनाई जाएगी।

नवाचार और ग्रीन कैंपस से अंतरराष्ट्रीय पहचान: विश्वविद्यालय अब एआई, केस स्टडी और प्रॉब्लम सॉल्विंग आधारित विश्लेषणात्मक शिक्षण पर जोर देगा। कुलपति के निर्देशानुसार, सौर ऊर्जा, रेन वॉटर हार्वेस्टिंग और वेस्ट मैनेजमेंट जैसे हरित प्रयासों का व्यवस्थित दस्तावेजीकरण होगा। निदेशक प्रो. ऋतु माथुर ने बताया कि विद्यार्थियों के लिए स्टार्टअप फंड व प्लेसमेंट फेयर शुरू होंगे।

www.samacharjagat.com
जयपुर, 11 अप्रैल, 2026

प्रादेशिक जगत

अजमेर, कोटा, जोधपुर, उ... अलवर, भरतपुर, टोंक, दौसा

एमडीएसयू में सिंधी भाषा दिवस पर हुई एक दिवसीय संगोष्ठी

सिंधी भाषा एक जीवंत सांस्कृतिक विरासत है : दादलानी

समाचार जगत ब्यूरो

अजमेर. महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय के सिंधु संस्कृति एवं सिंधु शोध पीठ के तत्वावधान में शुक्रवार को सिंधी भाषा दिवस के अवसर पर एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

यह आयोजन भाषा, संस्कृति और राष्ट्रीय एकता के गहन संदेशों से परिपूर्ण रहा। उल्लेखनीय है कि 10 अप्रैल, 1967 को भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में सिंधी भाषा को सम्मिलित कर उसे संवैधानिक मान्यता प्रदान की गई थी। संगोष्ठी के मुख्य वक्ता प्रो. हासो दादलानी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए सिंधी भाषा की उत्पत्ति, विकास यात्रा तथा उसकी साहित्यिक परंपरा को प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि सिंधी भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि एक जीवंत सांस्कृतिक विरासत है, जो पीढ़ियों को जोड़ने का कार्य करती है। विशिष्ट अतिथि डॉ. चंद्रप्रकाश दादलानी ने अपने संबोधन में सिंधी समुदाय के संघर्ष, विशेषकर विभाजन के पश्चात भाषा एवं संस्कृति को संरक्षित रखने के अद्वितीय प्रयासों का उल्लेख किया।

उन्होंने विद्यार्थियों को प्रेरित करते हुए कहा कि भाषा का अध्ययन केवल ज्ञान का विस्तार नहीं करता, बल्कि यह व्यक्ति की सांस्कृतिक पहचान को भी सुदृढ़ करता है। कार्यक्रम की अध्यक्षता सिंधु शोध पीठ के निदेशक प्रो. सुभाष चंद्र ने की। अध्यक्षीय उद्बोधन में उन्होंने सिंधी भाषा के संरक्षण और संवर्धन के लिए विश्वविद्यालय द्वारा किए जा रहे प्रयासों पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि वर्तमान समय में भाषाई अध्ययन के क्षेत्र में नए अवसर उभर रहे हैं, जिन्हें विद्यार्थियों को अपनाना चाहिए। संगोष्ठी के दौरान वक्ताओं ने इस तथ्य को रेखांकित किया कि भाषाएं समाज को जोड़ने का कार्य करती हैं। सिंधी भाषा, अपनी मधुरता, समृद्ध शब्दावली और ऐतिहासिक गहराई के कारण भारतीय भाषाई परंपरा में एक विशिष्ट स्थान रखती है।

स्वागत उद्बोधन डॉ. राजू शर्मा ने प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. नेमीचंद तंबोली द्वारा किया गया, जिन्होंने पूरे आयोजन को सुव्यवस्थित एवं रोचक बनाए रखा। अंत में सिंधु शोध पीठ के सदस्य सचिव दिलीप शर्मा द्वारा आभार व्यक्त किया गया।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति एवं उच्च शिक्षण संस्थान

प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल

(ये लेखक के निजी विचार हैं)

विजेता विद्यार्थियों को दिए प्रमाण पत्र व स्मृति चिह्न

अजमेर। महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय के शिक्षा विभाग में गत सात दिनों से आयोजित पाठ्य सहगामी गतिविधियों का मंगलवार को समापन हुआ। शिक्षा विभाग प्रभारी प्रो. सुभाष चंद्र ने विजेताओं को प्रमाण पत्र एवं स्मृति चिह्न प्रदान किए। सप्ताह भर चली इन गतिविधियों में मेहंदी, रंगोली, मांडना, पोस्टर निर्माण, सलाद सज्जा, एकल गायन, कविता पाठ, एकल अभिनय, फैंसी ड्रेस, एकल नृत्य, बोर्ड डेकोरेशन एवं योग सत्र जैसी विविध प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इस दौरान अतिथि शिक्षक डॉ. नेमीचंद तंबोली, डॉ. भावना गौड़, डॉ. आशा सेन, डॉ. सुनील कुमार, डॉ. अंजू अग्रवाल, अनुराधा जैन एवं डॉ. के.के. शर्मा मौजूद रहे। विभिन्न सदनों के विद्यार्थियों को उत्कृष्ट प्रदर्शन के आधार पर विजेता, रनर-अप एवं द्वितीय रनर-अप ट्रॉफियां भी प्रदान की गईं।

दैनिक भास्कर अजमेर 22-04-2026

कुलपति ने किया एनिमल हाउस का निरीक्षण

अजमेर| एमडीएसयू के कुलपति प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने मंगलवार को प्राणी विज्ञान विभाग के एनिमल हाउस का जायजा लिया। इस दौरान विभागाध्यक्ष प्रो. सुभाष चंद्र ने उन्हें जैविक अपशिष्ट से तैयार आर्गेनिक खाद और वर्मी कंपोस्टिंग प्रक्रिया की जानकारी दी। कुलपति ने वर्मी कंपोस्ट बेड का अवलोकन कर इसे कचरा प्रबंधन और सतत कृषि के लिए मील का पत्थर बताया। वैज्ञानिक तकनीकों को लैब से निकालकर समाज तक पहुंचाएं ताकि मिट्टी की उर्वरता बढ़े और रसायनों का प्रभाव कम हो।

शंकराचार्य और सूरदास की जयंती मनाई गई

अजमेर| एमडीएसयू में मंगलवार को वैशाख शुक्ल पंचमी पर जगद्गुरु आदि शंकराचार्य और संत कवि सूरदास की जयंती मनाई गई। इस अवसर पर कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने कहा कि आदि शंकराचार्य ने अद्वैत वेदांत और ब्रह्म सत्यं, जगत मिथ्या के सिद्धांत से भारतीय दर्शन को एकता के सूत्र में पिरोया। उन्होंने अल्पायु में ही चारों दिशाओं में मठ स्थापित कर राष्ट्र को सांस्कृतिक रूप से एकजुट किया। प्रो. अग्रवाल ने संत सूरदास को नमन करते हुए कहा कि सूरसागर जैसी रचनाओं ने समाज में प्रेम और भक्ति का संचार किया।

महामृत्युंजय : मृत्यु के पार चेतना का विज्ञान

प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल
कुलगुरु
महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर

(ये लेखक के निजी विचार हैं)

दैनिक नवज्योति

एमडीएसयू और डॉ. शकुंतला मिश्रा विश्वविद्यालय में एमओयू

दिव्यांगजन शिक्षा, पुनर्वास एवं समावेशी उच्च शिक्षा को सुदृढ़ बनाने की पहल

कासं/अजमेर। महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय और डॉ. शकुंतला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय लखनऊ के मध्य दिव्यांगजन शिक्षा, पुनर्वास एवं समावेशी उच्च शिक्षा को सुदृढ़ बनाने के उद्देश्य से समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गए। समारोह की अध्यक्षता एमडीएस विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो.सुरेश कुमार अग्रवाल ने की। विशिष्ट अतिथि डॉ. शकुंतला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो.संजय सिंह थे।

प्रो.संजय सिंह ने बताया कि डॉ. शकुंतला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय वर्ष 2008 में स्थापित हुआ और दिव्यांगजन शिक्षा के क्षेत्र में देश का एक अग्रणी संस्थान है, जिसकी आधारभूत अवधारणा रिवर्स इन्टीग्रेशन है। दिव्यांग और गैर-दिव्यांग विद्यार्थी समान रूप से एक ही शैक्षणिक वातावरण में अध्ययन करते हैं। यहां टैक्टाइल गाइडेड पाथवे, उन्नत ब्रेल लाइब्रेरी, त्वरित ब्रेल प्रिंटिंग सुविधा, स्पीच एवं ऑडियोलॉजी क्लिनिक, कृत्रिम अंग निर्माण एवं प्रशिक्षण केंद्र जैसी व्यवस्थाएं उपलब्ध हैं। विश्वविद्यालय में पैरा-स्पोर्ट्स को भी विशेष महत्व दिया गया है। दिव्यांग विद्यार्थियों को निःशुल्क शिक्षा, आवास, भोजन एवं छात्रवृत्ति उपलब्ध कराई जाती है। सहायक तकनीक के माध्यम से दृष्टिबाधित विद्यार्थियों को लैपटॉप पर स्वतंत्र रूप से परीक्षा देने के लिए प्रशिक्षित किया जा रहा है, जिससे वह सह लेखक (स्क्राइबर) पर निर्भरता से मुक्त हो सकें। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) आधारित स्मार्ट चश्मों एवं साइन लैंग्वेज के स्वचालित रूपांतरण जैसी अत्याधुनिक परियोजनाओं पर भी कार्य किया जा रहा है।

कुलगुरु प्रोफेसर सुरेश कुमार अग्रवाल ने कहा कि एमओयू के माध्यम से दिव्यांग विद्यार्थियों को मुख्यधारा में सशक्त रूप से स्थापित करने का मार्ग प्रशस्त होगा। कार्यक्रम में प्रो. अरविंद पारीक, प्रो. सुभाष चंद्र, प्रो. मोनिका भटनागर, प्रो. ऋतु माथुर, डॉ. आशीष पारीक, डॉ. असीम जयंती देवी, कुलसचिव कैलाश चंद्र शर्मा, वित्त नियंत्रक नेहा शर्मा, सहायक कुलसचिव डॉ. सूरजमल राव, डॉ. लक्ष्मीकान्त शर्मा, लखनऊ से डॉ. विजय शंकर शर्मा मौजूद रहे।

एमओयू से यह फायदा

एमओयू के अंतर्गत राजस्थान के दिव्यांग विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा के लिए तैयार करने के लिए शैक्षणिक मार्गदर्शन, मानव संसाधन विकास केंद्र के माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम, संयुक्त शोध परियोजनाएं, राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियों का आयोजन तथा फैकल्टी एवं विद्यार्थियों के आदान-प्रदान को शामिल किया गया है। योग विज्ञान एवं मानव चेतना विभाग तथा पुनर्वास विज्ञान के संयुक्त अध्ययन एवं अनुसंधान की संभावनाएं भी इस सहयोग के माध्यम से साकार होंगी।

मदस विवि में शिक्षकों, अधिकारियों और कार्मिकों ने की साफ-सफाई

स्वच्छ परिसर सुचिता अभियान का शुभारंभ

कासं/अजमेर। महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय में धरोहर संरक्षण दिवस के अवसर पर शनिवार स्वच्छ परिसर शुचिता अभियान का शुभारंभ हुआ। कुलगुरु प्रो. अग्रवाल ने कहा कि किसी भी धरोहर का संरक्षण स्वच्छता के बिना संभव नहीं है। जब तक हम स्वच्छता को अपने व्यवहार और संस्कार का हिस्सा नहीं बनाते, तब तक किसी भी संस्थान या विरासत की रक्षा अधूरी रहती है। कुलसचिव कैलाश चन्द्र शर्मा ने बताया कि प्रत्येक माह के प्रथम सप्ताह में तीन दिन तथा अंतिम सप्ताह में भी तीन दिन विशेष स्वच्छता अभियान चलाया जाएगा।

कुलगुरु ने भी किया श्रमदान, दिलाई शपथ

अभियान के प्रथम दिन कुलगुरु प्रो. अग्रवाल ने भी श्रमदान किया और सभी को परिसर को स्वच्छ, सुंदर एवं हरित (ग्रीन कैंपस) बनाए रखने का संकल्प दिलाया। इस दौरान विश्वविद्यालय के शिक्षकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने परिसर के विभिन्न भागों में साफ-सफाई की। इस अवसर पर वित्त नियंत्रक नेहा शर्मा, परीक्षा नियंत्रक डॉ. सुनील टेलर, प्रो. अरविंद पारीक, प्रो. सुब्रतो दत्ता, प्रो. ऋतु माथुर, प्रो. सुभाष चंद्र, सेवानिवृत्त प्रो. प्रवीण माथुर, प्रो. शिवप्रसाद, डॉ. सूरज राव, डॉ. तपेश्वर कुमार, डॉ. राजू शर्मा, उद्यान अधीक्षक राजेंद्र तिवारी, डॉ. लारा शर्मा, डॉ. असीम जयंती एवं सफाई निरीक्षक सीताराम मौजूद रहे।

प्रवेश से परिणाम तक शैक्षिक प्रक्रियाओं को ऑनलाइन बनाना जरूरी- राज्यपाल बागडे

वेबसाइट का लोकार्पण

अजमेर. महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय की वेबसाइट का लोकार्पण करते राज्पाल हरिभाऊ किसनराव बागडे। पत्रिका

अजमेर @ पत्रिका. प्रवेश से परिणाम तक शैक्षिक प्रक्रियाओं को ऑनलाइन बनाना जरूरी है। इससे विद्यार्थियों को ज्यादा फायदा मिलेगा। यह बात राज्यपाल और कुलाधिपति हरिभाऊ किसनराव बागडे ने बुधवार को लोकभवन में महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय की वेबसाइट के लोकार्पण समारोह में कही।

उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों एवं अन्य हितधारकों के लिए प्रवेश, पाठ्यक्रम, परीक्षा, परिणाम एवं अन्य शैक्षिक प्रक्रियाओं को ऑनलाइन एवं पारदर्शी बनाना आवश्यक है। उच्च शिक्षा संस्थानों में समयानुकूल नवाचार जारी रहने चाहिए। इनसे विदेशी विद्यार्थी भी भारतीय विश्वविद्यालयों की ओर आकर्षित होंगे। प्रतिस्पर्धा के युग में शिक्षण, अनुसंधान एवं नवाचार के क्षेत्र में निरंतर अग्रणी रहना चाहिए। कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने विविध नवाचारों सहित जीरो कार्बन कैम्पस, प्रशासनिक पारदर्शिता एवं ई-गवर्नेंस, उद्यमिता एवं स्टार्टअप प्रोत्साहन, भारतीय ज्ञान परम्परा आधारित पाठ्यक्रमों, पर्यावरण संरक्षण एवं नवीकरणीय ऊर्जा के उपयोग और शिक्षण एवं शोध से जुड़ी जानकारी दी। इस अवसर पर राज्यपाल के सचिव डॉ. पृथ्वी, प्रमुख विशेषाधिकारी राजकुमार सागर, कुल सचिव कैलाश चंद शर्मा, एसीपी डॉ. विनोद जैन, डॉ. स्वतंत्र शर्मा उपस्थित रहे।

बाबा साहेब की जयंती के उपलक्ष्य में एमडीएसयू में विभिन्न प्रतियोगिता आयोजित

एमडीएसयू में तीन दिवसीय प्रतियोगिताओं का सफल आयोजन

निबंध, वाद-विवाद एवं पोस्टर प्रतियोगिताओं में विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़कर लिया भाग

अजमेर (मोहित जैन)। महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर में डॉ. भीमराव अंबेडकर की जयंती के उपलक्ष्य में डॉ. बी आर अम्बेडकर शोधपीठ के तत्वावधान में विभिन्न रचनात्मक एवं बौद्धिक प्रतियोगिताओं का सफल आयोजन किया गया। इन आयोजनों का उद्देश्य विद्यार्थियों में बाबा साहेब के विचारों—समानता, न्याय एवं स्वतंत्रता—के प्रति जागरूकता विकसित करना रहा। निदेशक प्रो. शिव प्रसाद ने बताया कि कार्यक्रम की श्रृंखला के अंतर्गत प्रथम दिन 7 अप्रैल को 'आधुनिक भारत के लिए बाबा साहेब के विचार' विषय पर निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। दूसरे दिन 8 अप्रैल को 'क्या आज का भारत डॉ. अंबेडकर का सपना पूरा कर पाया है?' विषय पर वाद-विवाद प्रतियोगिता आयोजित की गई। तीसरे दिन 9 अप्रैल को 'समानता, न्याय व स्वतंत्रता: अंबेडकर का सपना' विषय पर पोस्टर निर्माण प्रतियोगिता आयोजित हुई।

विद्यार्थियों ने अपनी सृजनात्मक अभिव्यक्ति के माध्यम से बाबा साहेब के मूल्यों को आकर्षक एवं प्रभावी रूप में प्रस्तुत किया। तीनों प्रतियोगिताओं में विश्वविद्यालय के विभिन्न संकायों के विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और अपनी प्रतिभा का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया।

शोधपीठ द्वारा सभी प्रतिभागियों के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा गया कि इस प्रकार के आयोजन न केवल विद्यार्थियों की रचनात्मकता को बढ़ावा देते हैं, बल्कि उन्हें राष्ट्रनिर्माण के मूल्यों से भी जोड़ते हैं।

एमडीएसयू में अकादमिक आयोजनों को मिली नई दिशा, कुलगुरु ने तय किए मानक

अजमेर, समाचार जगत ब्यूरो. महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय में अंबेडकर जयंती समारोह (तथा 'वेद-वेदांग और विकसित भारत' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी को लेकर कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल की अध्यक्षता में सोमवार को बैठक आयोजित की गई। बैठक में कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने दोनों आयोजनों को विश्वविद्यालय की अकादमिक गरिमा के अनुरूप उत्कृष्ट, अनुशासित व प्रभावशाली ढंग से संपन्न कराने के लिए विस्तृत दिशा-निर्देश प्रदान किए हैं । कुलगुरु ने सभी विभागाध्यक्षों को निर्देशित किया कि वे भारतीय ज्ञान परंपरा व वेद वेदांग व विकसित भारत की संकल्पना की स्पष्टता के लिए अपने-अपने विभागों के विद्यार्थियों व संकाय सदस्यों की सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित करें । कुलगुरु ने भविष्य में अंबेडकर जयंती से संबंधित गतिविधियों को "भीम सप्ताह" के रूप में आयोजित किए जाने का प्रस्ताव प्रस्तुत करने के लिए प्रो शिव प्रसाद को निर्देश दिए जिसमें विभिन्न प्रतियोगिताएं, व्याख्यान व सांस्कृतिक गतिविधियां सम्मिलित हों। बैठक में कुलगुरु ने स्पष्ट किया कि इन संगोष्ठियों का उद्देश्य केवल आयोजन तक सीमित नहीं है, बल्कि इसके माध्यम से विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों में भारतीय ज्ञान परंपरा व वैदिक तत्वों को समाहित करने की दिशा में ठोस पहल की जाएगी। उन्होंने सभी संकाय सदस्यों से आग्रह किया कि वे संगोष्ठी के सभी सत्रों में उपस्थित रहकर प्राप्त होने वाले अकादमिक सुझावों को अपने-अपने विषयों में लागू करने की दिशा में कार्य करें। कुलगुरु ने निर्देश दिए कि कार्यों के प्रभावी निष्पादन के लिए छोटे-छोटे कार्यदल (टीम) गठित किए जाएं, जिससे प्रत्येक जिम्मेदारी स्पष्ट रूप से निर्धारित हो और कार्य समयबद्ध रूप से पूर्ण हो सके। बैठक में विश्वविद्यालय के विभागाध्यक्ष, अधिकारी व कार्मिक उपस्थित रहे ।

अंबेडकर जयंती पर विशेष...

जहां इतिहास मौन है, वहां बोलते हैं रमाबाई और सविता

(ये लेखक के निजी विचार हैं)

सिटी बुक 05 राजस्थान पत्रिका
अजमेर, गुरुवार, 23 अ...

'दैनिक जीवन में छोटे बदलाव से धरती होगी स्वच्छ'

अजमेर @ पत्रिका. दैनिक जीवन में छोटे बदलाव से धरती स्वच्छ और हरित बनेगी। यह बात महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय के कुलगुरू प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने बुधवार को पर्यावरण विज्ञान विभाग के तत्वावधान में पृथ्वी दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में कही। प्रो अग्रवाल ने पर्यावरण संरक्षण केवल सीमित कार्यक्रम आयोजन से ज्यादा जीवनशैली का हिस्सा होना चाहिए। ऊर्जा संरक्षण, जल संरक्षण तथा हरित तकनीकों के उपयोग को बढ़ावा देने चाहिए। शिक्षा के साथ सामाजिक एवं पर्यावरणीय जिम्मेदारियों का निर्वहन भी अहम है। परिसर को हरित, स्वच्छ एवं सतत विकास के मॉडल के रूप में स्थापित करने की जरूरत है।

विभागाध्यक्ष प्रो. सुब्रतो दत्ता ने कहा कि विश्वविद्यालय नेट जीरो कार्बन कैंपस बनने की ओर अग्रसर है। प्लास्टिक एवं फ्लेक्स के उपयोग में कमी हुई है। संसाधनों के संतुलित उपयोग और स्वच्छता अभियान नियमित चलाने की आवश्यकता है। विद्यार्थियों ने बाजार में कपड़े थैले का उपयोग, उपयोग के बाद बिजली के उपकरण बंद रखने और नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों को अपनाने की बात कही।

वेदांत के मूल्यों को अपनाकर आत्मनिर्भर भारत निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाएं युवा-देवनानी

मदस विवि में वैदिक वाङ्मय विभाग की संगोष्ठी

कासं/अजमेर। विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने कहा कि विकसित भारत केवल भौतिक प्रगति का प्रतीक नहीं, बल्कि संस्कार, एकता, आध्यात्मिकता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के समन्वय से ही संभव है।

वे गुरुवार को महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय में वैदिक वाङ्मय विभाग के तत्वावधान में वेद वेदांग और विकसित भारत विषय पर स्वराज सभागार में आयोजित संगोष्ठी में बतौर मुख्य अतिथि सम्बोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि भारत की प्राचीन ज्ञान परंपरा, वेदों एवं ऋषि-मुनियों के वैज्ञानिक चिंतन का उल्लेख करते हुए इसे आधुनिक विज्ञान से जोड़ने की आवश्यकता बताई। भारत का समग्र विकास भौतिक, आध्यात्मिक और नैतिक तीनों आयामों पर आधारित होना चाहिए तथा युवाओं को वेदांत के मूल्यों को अपनाकर आत्मनिर्भर एवं संस्कारित भारत के निर्माण में सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए।

वेद भारतीय ज्ञान-विज्ञान, खगोलशास्त्र व चेतना विज्ञान के मूल स्रोत-डॉ. पांडेय

मुख्य वक्ता दिल्ली के प्रख्यात वैज्ञानिक, चिंतक एवं पूर्व वैज्ञानिक सलाहकार-प्रधानमंत्री कार्यालय डॉ. ओम प्रकाश पांडेय ने कहा कि समस्त सृष्टि कंपन और ऊर्जा के सिद्धांत पर आधारित है तथा मानव कान वास्तविक ध्वनि नहीं, बल्कि उसकी आवृत्ति (फ्रीक्वेंसी) को ग्रहण करता है। उन्होंने ॐ के उच्चारण की शुद्ध पद्धति पर प्रकाश डालते हुए इसे चेतना के उच्च स्तर से जोड़ने वाला माध्यम बताया। उन्होंने वेदों को भारतीय ज्ञान-विज्ञान, खगोलशास्त्र, जीवविज्ञान तथा चेतना विज्ञान का मूल स्रोत बताते हुए कहा कि प्राचीन ऋषियों ने ध्यान और साधना के माध्यम से ब्रह्मांडीय रहस्यों का प्रत्यक्ष अनुभव किया। आज के कई आधुनिक वैज्ञानिक सिद्धांत जैसे ब्रह्मांड की उत्पत्ति (बिग बैंग), बहु-गैलेक्सी संरचना, प्रकाश के स्पेक्ट्रम तथा जैविक संरचनाओं के सिद्धांत प्राचीन वैदिक साहित्य में संकेत रूप में विद्यमान हैं। अध्यक्षता करते हुए कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने कहा कि प्राचीन भारत में वेद-वेदांग शिक्षा का अभिन्न हिस्सा थे, किंतु औपनिवेशिक प्रभाव और पाश्चात्य ज्ञान के अंधानुकरण के कारण हमारी ज्ञान परंपरा उपेक्षित होती गई। इससे पूर्व विषय प्रवर्तन वैदिक वाङ्मय विभाग के संकायाध्यक्ष प्रोफेसर सुभाष चंद्र ने किया। संचालन अंजू अग्रवाल ने किया। कुलसचिव कैलाश चन्द्र शर्मा ने आभार व्यक्त किया।

...दकीय

आज का सुविचार: शरीर को स्वस्थ रखना हमारा कर्तव्य है, वरना हम दिमाग को स्वच्छ और मजबूत नहीं रख पाएंगे।- ... जिस प्रकार बिना जल के धान नहीं उगता उसी प्रकार ... के प्राप्त की गयी विद्या फलदायी नहीं होती। - ...

अंबेडकर जयंती विशेष

समानता के संघर्ष का ऐतिहासिक प्रतीक : महाड़ सत्याग्रह

दैनिक भास्कर अजमेर 25-04-2026

कुलपति पहुंचे अस्पताल, कार्मिक की कुशलक्षेम पूछी

अजमेर| एमडीएसयू के हरबेरियम असिस्टेंट गोपाराम हृदय रोग के कारण अस्पताल में भर्ती हैं। उनकी स्थिति जानने कुलपति प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल स्वयं अस्पताल पहुंचे। प्रो. अग्रवाल ने चिकित्सकों से उपचार की प्रगति पर चर्चा की। कुलपति ने विश्वविद्यालय प्रशासन को निर्देशित किया कि उपचार में किसी भी प्रकार की कमी न रहे और कर्मचारी को हरसंभव सहयोग दिया जाए। इस दौरान उन्होंने गोपाराम के परिजनों को ढांढस भी बंधाया।

डिजिटल युग की ओर ऐतिहासिक कदम

एम.डी.एस. विश्वविद्यालय में एआई आधारित स्मार्ट सिस्टम लागू करने की पहल

बढ़ता राजस्थान

अजमेर (मोहित जैन)। महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर एक बड़े डिजिटल परिवर्तन की दिशा में निर्णायक कदम उठाने जा रहा है। विश्वविद्यालय प्रशासन ने कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) आधारित एक अत्याधुनिक समग्र प्रबंधन सॉफ्टवेयर को लागू करने की पहल की है, जिससे न केवल शैक्षणिक प्रक्रियाएं, बल्कि प्रशासनिक कार्यप्रणाली भी पूरी तरह से आधुनिक, पारदर्शी और कुशल बन सकेगी। विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने बताया कि यह उन्नत सॉफ्टवेयर टाइम्स ऑफ इंडिया ग्रुप के कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी कार्यक्रम के अंतर्गत विश्वविद्यालय को निःशुल्क उपलब्ध कराया जा रहा है। जानकारी के अनुसार इस सॉफ्टवेयर की बाजार कीमत लगभग 2 से 3 करोड़ रुपये प्रतिवर्ष है, जिसे बिना किसी लाइसेंस शुल्क के उपलब्ध कराना अपने आप में एक महत्वपूर्ण पहल है। प्रस्तावित सॉफ्टवेयर की सबसे बड़ी विशेषता इसका एआई आधारित चैटबॉट इंटरफेस है, जिसमें किसी जटिल मेन्यू या तकनीकी ज्ञान की आवश्यकता नहीं होगी। उपयोगकर्ता सामान्य भाषा में आदेश देकर विभिन्न कार्यों को संपन्न कर सकेंगे। इस प्रणाली में जनरेटिव एआई, एजेंटिक एआई और डिटर्मिनिस्टिक एआई का संयोजन किया गया है, जिससे न केवल कार्यों का स्वचालन होगा, बल्कि उनकी सटीकता और विश्वसनीयता भी सुनिश्चित होगी। इस सॉफ्टवेयर की एक अनूठी विशेषता "एआई टीचर" है, जो कक्षा संचालन में सहायक भूमिका निभाएगा। यह प्रणाली विद्यार्थियों की उपस्थिति स्वतः दर्ज करने, विषयानुसार अध्ययन सामग्री तैयार करने, असाइनमेंट और क्विज बनाने तथा विद्यार्थियों के स्तर के अनुसार मूल्यांकन करने में सक्षम होगी। यह तकनीक कमजोर विद्यार्थियों की पहचान कर उन्हें सुधारात्मक मार्गदर्शन भी प्रदान करेगी।

एमडीएसयू में एनिमल हाउस बना पर्यावरणीय प्रयोगशाला

कुलगुरु ने निरीक्षण कर सराहा

कासं/अजमेर।

महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो.सुरेश कुमार अग्रवाल ने मंगलवार को प्राणी विज्ञान विभाग द्वारा स्थापित एनिमल हाउस का निरीक्षण किया। इस अवसर पर विभागाध्यक्ष प्रो. सुभाष चन्द्र सहित विभाग के शोध छात्र एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

प्रो. सुभाष चंद्र ने कुलगुरु को विशेष रूप से प्राकृतिक रूप से तैयार की जाने वाली खाद (ऑर्गेनिक मैन्योर) की प्रक्रिया का अवलोकन कराया। उन्होंने बताया कि किस प्रकार जैविक अपशिष्ट पदार्थों का उपयोग कर पर्यावरण के अनुकूल खाद तैयार की जा रही है, जो न केवल भूमि की उर्वरता बढ़ाती है बल्कि रासायनिक उर्वरकों के दुष्प्रभावों को भी कम करती है। कुलगुरु ने वर्मी कम्पोस्ट के लिए तैयार किए गए बेड का भी निरीक्षण किया। कुलगुरु प्रो. अग्रवाल ने प्राकृतिक खाद एवं वर्मी कम्पोस्ट के महत्व पर प्रकाश डालते हुए बताया कि यह न केवल मिट्टी की गुणवत्ता को सुधारते हैं, बल्कि जल संरक्षण, जैव विविधता के संवर्धन तथा प्रदूषण नियंत्रण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

अद्वैत दर्शन और भक्ति परंपरा से सुदृढ़ होगी राष्ट्रीय एकता

एमडीएस विश्वविद्यालय में वैशाख मास शुक्ल पक्ष पंचमी पर जगद्गुरु आदि शंकराचार्य एवं संत कवि सूरदास की जयंती के उपलक्ष में आयोजित कार्यक्रम में कुलगुरु प्रो. अग्रवाल ने कहा कि आदि शंकराचार्य ने अद्वैत वेदांत के माध्यम से भारतीय दर्शन को एकता और समरसता का आधार प्रदान किया। उन्होंने अल्पायु में संपूर्ण भारत की यात्राएं कर चारों दिशाओं में मठों की स्थापना करते हुए राष्ट्र को सांस्कृतिक सूत्र में बांधने का कार्य किया, जो आज भी प्रेरणास्रोत है। संत सूरदास ने सूरसागर के माध्यम से श्रीकृष्ण की लीलाओं का ऐसा भावपूर्ण चित्रण किया, जिसने भारतीय संगीत और साहित्य को अमूल्य धरोहर प्रदान की।

Share Clip

समय-चेतना की वैज्ञानिक संरचना पर आधारित है भारतीय पंचांग

प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल
कुलगुरु
महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर

... दिन का नाम उसी पर आधारित। इस प्रकार रविवार, सोमवार, मंगलवार आदि की संरचना खगोलीय गणना का परिणाम है, न कि केवल सांस्कृतिक परंपरा का।

वर्ष में बारह महीने का आधार भी वैज्ञानिक है। पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा लगभग 365.25 दिनों में करती है, जबकि चन्द्रमा पृथ्वी की लगभग 12 परिक्रमाएं करता है। यही कारण है कि वर्ष में 12 महीनों की व्यवस्था की गई। ... मार्गशीर्ष, पुष्य से पौष, मघा से माघ, पूर्वा फाल्गुनी से फाल्गुन।

यह नामकरण खगोलीय अवलोकन पर आधारित है, न कि किसी राजा या ऐतिहासिक घटना पर।

भारतीय ग्रंथों में घटनाओं का उल्लेख ग्रह-नक्षत्रों की स्थिति सहित मिलता है। उदाहरणतः वाल्मीकि रामायण में भगवान राम के जन्म का वर्णन चैत्र शुक्ल नवमी, पुनर्वसु नक्षत्र और कर्क लग्न में हुआ है। ...

(ये लेखक के निजी विचार हैं)

मदस विवि: प्रबंध अध्ययन विभाग के 13 विद्यार्थियों का हुआ प्लेसमेंट

कासं/अजमेर

महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय के प्रबंध अध्ययन विभाग के 13 विद्यार्थियों का आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल लाइफ इन्श्योरेंस में कैंपस प्लेसमेंट हुआ है।

प्रबंध अध्ययन विभाग के संकायाध्यक्ष एवं प्लेसमेंट सेल के संयोजक प्रो. शिवप्रसाद ने बताया कि 17 अप्रैल को आयोजित इस प्लेसमेंट ड्राइव में कंपनी की ओर से मैनेजर एचआर प्रियंका विश्वास एवं चेष्टा गुप्ता उपस्थित रहीं, जिन्होंने चयन प्रक्रिया का संचालन किया। इस अवसर पर कुल 40 विद्यार्थियों ने भाग लिया। चयन प्रक्रिया के अंतर्गत पहले चरण में ग्रुप डिस्कशन तथा दूसरे चरण में व्यक्तिगत साक्षात्कार आयोजित किए गए, जिनके पश्चात 13 विद्यार्थियों का अंतिम चयन हुआ। चयनित विद्यार्थियों में अमन सिंह बकावत, अनुज शर्मा, अनुराग सिंह राठौड़, चारु दिवाकर, हर्ष कुमार राव, हितेश जैन, जयसिंह, केशव शर्मा, पायल खत्री, शिवांगी, सोनिया साजू, विभेंद्र सिंह राठौड़ एवं यादवीर तामोली शामिल हैं। इन विद्यार्थियों को लगभग साढ़े चार लाख रुपए वार्षिक पैकेज के साथ आकर्षक इंसेंटिव प्रदान किए जाएंगे, जिसमें चार लाख रुपए का मेडिक्लेम एवं पच्चीस लाख रुपए का ग्रुप टर्म इंश्योरेंस भी शामिल है। सभी चयनित विद्यार्थियों ने कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल से मुलाकात की। कुलगुरु ने विद्यार्थियों को अपने कार्यक्षेत्र में ईमानदारी, समर्पण एवं उत्कृष्टता के साथ आगे बढ़ने की प्रेरणा दी।

यूनि-स्कूल : शिक्षा का नवोदय

प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल

राज्य सरकार को भेजा जाएगा भर्तियों का प्रस्ताव

विश्वविद्यालय ने रोस्टर रजिस्टर किया सार्वजनिक, मांगी आपत्तियां

पत्रिका ने उठाया भर्ती का मुद्दा

दैनिक भास्कर अजमेर 25-04-2026

ज्ञान और पद पा लेना पर्याप्त नहीं, संस्कार बिना जीवन में संतुलन, संतुष्टि नहीं मिलती : कुलगुरु

दैनिक भास्कर अजमेर 25-03-2026

एमडीएसयू में कार्यशाला • शिक्षा सुधारों पर मंथन, एनईपी की चुनौतियों और फ्रेमवर्क पर जताई चिंता

डिप्टी सीएम बैरवा बोले-एनईपी समानता व गुणवत्ता पर आधारित, नीतियों को शिक्षक ही जमीन पर उतारते हैं

सार समाचार

एमडीएसयू परिसर में पक्षियों के लिए बांधे परिण्डे

अजमेर। महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय में परिसर में कुलगुरु प्रोफेसर सुरेश कुमार अग्रवाल के मार्गदर्शन एवं प्रेरणा विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने सामूहिक रूप से परिण्डे बांधे। विद्यार्थियों ने नियमित रूप से उनमें स्वच्छ पानी भरने तथा उनकी साफ-सफाई बनाए रखने का संकल्प भी लिया। विभागाध्यक्ष प्रो. सुब्रतो दत्ता ने आमजन से अपील की कि वे भी अपने घरों एवं आसपास के क्षेत्रों में पक्षियों के लिए पानी की व्यवस्था करें जिससे इस भीषण गर्मी में उन्हें राहत मिल सके।

एमडीएसयू में काव्यधारा आयोजित

कार्स/अजमेर। महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय के वेदव्यास भवन स्थित शिक्षा विभाग में शनिवार को पाठ्य सहगामी गतिविधियों के अंतर्गत काव्यधारा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में साहित्यकारों ने नसीहत, प्रेम, व्यंग्य और संवेदनाओं से ओत-प्रोत रचनाओं की प्रस्तुति दी। कवयित्री कविता जोशी ने शिक्षा के महत्व पर आधारित काव्य पाठ किया। इसके बाद विभिन्न कवियों एवं रचनाकारों ने कविताओं, ग़ज़लों और व्यंग्य प्रस्तुतियों के माध्यम से सामाजिक सरोकारों, युवाओं की प्रेरणा, प्रेम और समकालीन विषयों को प्रभावी ढंग से अभिव्यक्त किया। विभागाध्यक्ष प्रो. सुभाष चंद्र ने कहा कि ऐसे आयोजन विद्यार्थियों में सृजनात्मकता और संवेदनशीलता को विकसित करते हैं तथा उन्हें लेखन और साहित्य की ओर प्रेरित करते हैं। कार्यक्रम का संचालन डॉ. अंजु अग्रवाल ने किया। नेमीचंद तंबोली ने आभार जताया।

एमडीएसयू 'नेट जीरो कार्बन कैंपस' बनने की ओर अग्रसर

पृथ्वी दिवस मनाया

पृथ्वी संरक्षण और प्राकृतिक संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग का संदेश

विद्यार्थियों ने कुलगुरु को भेंट किया पौधा

नेट जीरो होम्स की उपयोगिता पर वेबिनार

छात्राओं की सुरक्षा और सम्मान से कोई समझौता नहीं- कुलगुरु

एमडीएसयू : छात्रावास व्यवस्था बैठक में छात्राओं से किया संवाद

कार्स/अजमेर। महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय में छात्रावास व्यवस्थाओं को अधिक सुरक्षित, व्यवस्थित और छात्रा-हितैषी बनाने के उद्देश्य से कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने छात्राओं, वार्डन एवं संबंधित शिक्षकों एवं अधिकारियों के साथ बैठक की। इसमें छात्राओं से संवाद किया और कहा कि विश्वविद्यालय प्रशासन उनकी सुरक्षा, सुविधा और समग्र विकास के लिए पूर्णतः प्रतिबद्ध है।

बैठक के दौरान सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए अनेक महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए। छात्रावास परिसर में गार्ड्स की तैनाती एवं उनके कार्यक्षेत्र का पुनर्गठन सुनिश्चित किया गया। साथ ही, महिला सुरक्षा कर्मियों की उपलब्धता पर भी विचार किया गया। छात्राओं को आत्म-सुरक्षा के प्रति जागरूक करते हुए उन्हें आवश्यक सुरक्षा उपकरण उपलब्ध कराना सुनिश्चित किया। छात्रावास परिसर, जल कूलर, पानी की टंकियों, छतों तथा नालियों की नियमित सफाई और रख-रखाव के निर्देश दिए।

भोजन की क्वालिटी पर स्वयं नजर रख सकेंगी छात्राएं

मेस मॉनिटर प्रणाली लागू करने का निर्णय लिया गया, जिसके माध्यम से छात्राएं स्वयं भोजन की गुणवत्ता, स्वच्छता और मेन्यू पर निगरानी रखेंगी। छात्रावास में बेहतर इंटरनेट सुविधा उपलब्ध कराने के लिए आधुनिक फाइबर कनेक्टिविटी पर कार्य करने का सुझाव दिया गया। सीसीटीवी निगरानी प्रणाली को सुदृढ़ करने और भवनों की आवश्यक मरम्मत कार्यों को शीघ्र पूर्ण करने के निर्देश दिए गए। छात्रावास में हाउस सिस्टम लागू कर सांस्कृतिक, खेल एवं बौद्धिक गतिविधियों को प्रोत्साहित करने की योजना बनाई गई। बैठक में कुलसचिव कैलाश चन्द्र शर्मा, वित्त नियंत्रक नेहा शर्मा, अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो.सुभाष चन्द्र, मुख्य कुलानुशासक प्रो.अरविंद पारीक, प्रो.मोनिका भटनागर, वार्डन प्रो.ऋतु माथुर, सहायक अभियंता प्रदीप प्रजापति, सहायक कुलसचिव डॉ.सूरजमल राव सहित उद्यानिकी एवं स्वच्छता के अधिकारी उपस्थित रहे।

एमडीएस विवि में 'स्वच्छ परिसर सुचिता अभियान' का शुभारंभ, कुलगुरु ने किया श्रमदान

स्वच्छता ही धरोहर संरक्षण का आधार : प्रो. अग्रवाल

शिक्षा तभी सार्थक, जब समाज के हित में उतरे शोध – कुलगुरु

एमडीएस विश्वविद्यालय में सीईएसबीएम का 22वां स्थापना दिवस सम्पन्न

उत्तर पुस्तिकाओं के त्वरित मूल्यांकन पर जोर

कुलगुरु ने लिया व्यवस्थाओं का जायजा

कुलगुरु ने अस्पताल पहुंचकर कर्मचारी का जाना हालचाल

प्राणीशास्त्र विभाग में फ्रेशर्स पार्टी का आयोजन

प्रायोगिक परीक्षाओं की अंतिम तिथि 30 अप्रैल तक बढ़ाई

रचनात्मक शिक्षण ही बनेगा एआई युग में शिक्षक की पहचान

एमडीएसयू में सहगामी कार्यक्रम

एमडीएसयू में लगाई 5 हाईमास्ट लाइट्स, सुरक्षा में हुई बढ़ोतरी

उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय सदैव छात्र हित एवं उन्नति के प्रयासों के प्रति प्रतिबद्ध है।

एमडीएसयू के लघु व्यवसाय प्रबंध केंद्र का स्थापना दिवस आज

मदस विवि : छात्राओं को आत्म-सुरक्षा के तहत सुरक्षा उपकरण उपलब्ध कराए जाएंगे

छात्रावास में बढ़ेगी सुरक्षा, दुरुस्त होगी सफाई व्यवस्था

मेस मॉनिटर प्रणाली

इंटरनेट-सीसीटीवी

दुरुस्त होगी सफाई

दैनिक भास्कर अजमेर 29-04-2026

एमडीएसयू: पाठ्य सहगामी गतिविधियों का समापन, विजेताओं का सम्मान

अजमेर| महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय के शिक्षा विभाग में सात दिवसीय सह-शैक्षणिक गतिविधियों का मंगलवार को समापन हुआ। विभाग प्रभारी प्रो. सुभाष चंद्र ने विजेताओं को प्रमाण पत्र व स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया। उन्होंने कहा कि भावी शिक्षकों के लिए प्रतियोगिताओं में भागीदारी और अनुभव, सफलता से अधिक महत्वपूर्ण हैं। सप्ताह भर मेहंदी, रंगोली, पोस्टर मेकिंग, एकल नृत्य व गायन जैसी प्रतियोगिताएं हुईं। काव्य धारा कार्यक्रम में साहित्यकारों ने मार्गदर्शन किया। इस दौरान डॉ. नेमीचंद तंबोली, डॉ. भावना गौड़ सहित अन्य शिक्षक उपस्थित रहे। सदन स्तर पर विजेता व रनर-अप ट्रॉफियां भी प्रदान की गईं। विद्यार्थियों ने इन गतिविधियों को आत्मविश्वास व व्यक्तित्व विकास के लिए सहायक बताया।

दैनिक भास्कर अजमेर 25-04-2026

समाज हित में शोध ही असली शिक्षा, युवा नौकरी की बजाय उद्यमिता को चुनें: कुलगुरु प्रो. अग्रवाल

युवा उद्यमिता यात्रा की हुई शुरुआत

'क्षमता को पहचान स्वरोजगार, उद्यमिता को अपनाएं युवा'

डिग्री के साथ प्रशिक्षण जरूरी

मार्गदर्शन और काउंसलिंग जरूरी

सोच में परिवर्तन जरूरी

मेर प्राइम

राजस्थान पत्रिका

मदस विश्वविद्यालय परिसर में लगाए 100 खेजड़ी के पौधे, मियावाकी तकनीक का किया इस्तेमाल

वहां जमकर काट रहे खेजड़ी के पेड़, यहां बचाने में जुटा पर्यावरण विभाग

मियावाकी पद्धति का इस्तेमाल

इनका कहना है ...

म.द.स. विश्वविद्यालय और डॉ. शकुंतला मिश्रा विश्वविद्यालय का एमओयू, दिव्यांगजन सशक्तिकरण को नई दिशा

समावेशी शिक्षा की ओर ऐतिहासिक कदम

MAHARSHI DAYANAND SARASWATI UNIVERSITY AJMER

FACULTY DEVELOPMENT WORKSHOP

on

Implementation of National Education Policy 2020

Chief Guest	Keynote Speaker	Guest of Honour	Presided by
Dr. Prem Chand Bairwa Dy. Chief Minister & Higher Education Minister	Sh. Kuldeep Ranka Addl. Chief Secretary Higher Education	Prof. Narayan Lal Gupta National President ABRSM	Prof. Suresh Kumar Agrawal Vice Chancellor

Swaraj Sabhagar Bhraspati Bhawan

MARCH 24, 2026 — 10.00 AM ONWARDS

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय

प्रार्थना

हे प्रभु ज्ञान ज्योति के आधार
कर दो जीवन उज्ज्वल और साकार,
मन से मिटे अज्ञान अंधकार,
भर दो अंतरमन में सत्य विचार।
हे प्रभु ज्ञान ज्योति के आधार

बुद्धि निर्मल हो, उज्ज्वल हो ज्ञान
शांत रहे अंतरमन, दृढ़ हों प्राण ।
विवेक जगे हर सांस के साथ
चरित्र बने जीवन की शान ॥
हे प्रभु ज्ञान ज्योति के आधार ॥

हम शोध करें मानव के हित में
सेवा हो अपना एक व्यवहार ॥
हमसे है हर एक किरण
मिटा सके दुख का अंधकार।
हे प्रभु ज्ञान ज्योति के आधार ॥

मनोबुद्ध्यहंकार चित्तानि नाहम्, न च श्रोत्र जिह्वे, न च घ्राण नेत्रे।
न च व्योम भूमिर्न तेजो न वायुः, चिदानंद रूपः शिवोऽहम् शिवोऽहम्॥
चिदानंद रूपः शिवोऽहम् शिवोऽहम्॥ शिवोऽहम् शिवोऽहम्, शिवोऽहम् शिवोऽहम्॥

प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल
रचियता
कुलगुरु
महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय
अजमेर

MAHARSHI DAYANAND SARASWATI UNIVERSITY, AJMER

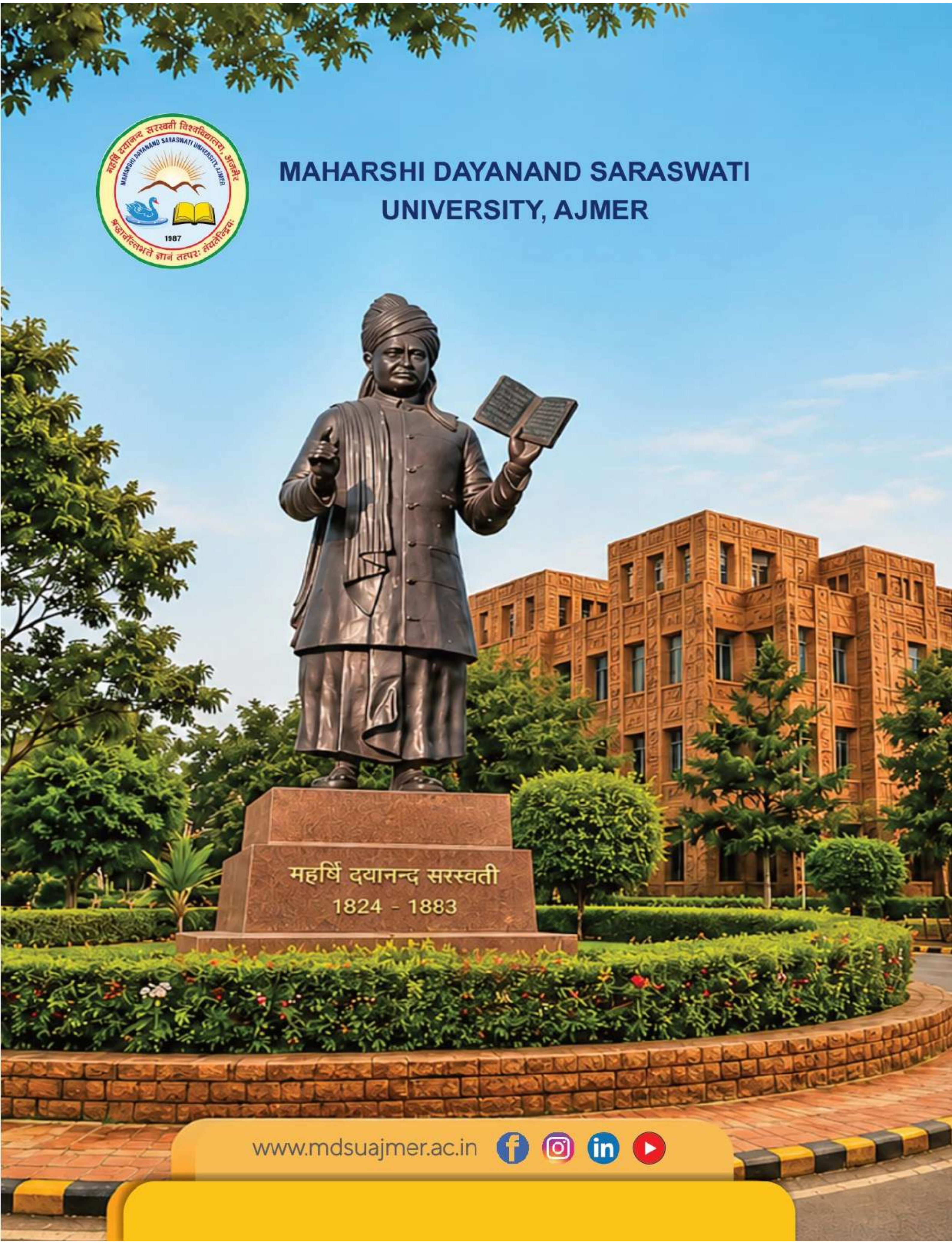

www.mdsuajmer.ac.in